वर्ष : 16 अंक : 139 मूल्य : 02 रूपया मात्र पृष्ठ : 08
RNI No. DELHIN/2008/23928

Mfg & mkt by.. ANGEN PHARMACEUTICALS (OPC) PRIVATE LIMITED

Distributorship ke liye contact Karen . (9315755133 / ya email Karen) angenpharmaceuticals@gmail.com

दैनिक लोकतंत्र की शान

लोकतंत्र का स्तंभ

दिल्ली से प्रकाशित
शनिवार 07 सितम्बर 2024

संक्षिप्त समाचार

उप्र : खनिज इंस्पेक्टर के साथ मारपीट करने के आरोप में दो गिरफ्तार

उत्तर प्रदेश। में बांदा जिले के मटौंध थाना क्षेत्र में जांच के दौरान भूतत्व एवं खनिकर्म (खनिज) विभाग के इंस्पेक्टर के साथ मारपीट के आरोप में पुलिस ने शुक्रवार को दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। यह जानकारी पुलिस के एक अधिकारी ने दी। अतर्रा क्षेत्र के पुलिस उपाधीक्षक (सीओ) गवेन्द्र पाल गौतम ने बताया कि बुधवार रात खनिज विभाग के इंस्पेक्टर गौरव गुप्ता के साथ वाहन जांच के दौरान अवैध खनन से जुड़े कुछ लोगों ने मारपीट की थी और सोशल मीडिया में प्रसारित वीडियो के अधार पर आरोपियों की पहचान कर एक मामला पंजीकृत किया गया था।
उन्होंने बताया कि मटौंध थाना की पुलिस ने शुक्रवार को आरोपियों सानू सिंह और पुष्पेंद्र सिंह को गिरफ्तार कर लिया। सीओ ने बताया कि तीन अन्य आरोपियों की तलाश जारी है।

दिल्ली : अदालत ने आप विधायक अमानतुल्लाह की ईडी हिरासत तीन दिन और बढ़ाई

दिल्ली। की एक अदालत ने धन शोधन मामले में गिरफ्तार आम आदमी पार्टी (आप) के विधायक अमानतुल्ला खान की प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) हिरासत शुक्रवार को और तीन दिन के लिए बढ़ा दी। विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने यह आदेश केंद्रीय जांच एजेंसी के आवेदन पर दिया। ईडी ने अदालत से अमानतुल्लाह की हिरासत और 10 दिन के लिये उसे देने का अनुरोध किया था। न्यायाधीश ने कहा, हिरासत तीन दिन के लिए बढ़ाई जाती है। उन्हें नौ सितंबर को पेश किया जाए।

कश्मीर में बीजेपी का संकल्प पत्र: घर की बुजर्ग को 18 हजार

छात्रों को वजीफा-कोचिंग फीस

नूना न्यूज एजेंसी

जम्मू कश्मीर। के लिए भाजपा ने अपना घोषणा पत्र जारी कर दिया है. इसमें महिलाओं और युवाओं पर खास फोकस रखा गया है. घोषणा पत्र में भाजपा ने कुल 25 संकल्प लिए हैं. राज्य में सरकार बनने के बाद वह इन वादों को पूरा करेगी. घोषणा पत्र में कहा गया है कि भाजपा आतंकवाद और अलगाववाद का पूरी तरह सफाया करके जम्मू-कश्मीर को विकास और प्रगति में देश में सबसे अव्वल बनाएगी. इसके बाद कहा गया है कि जम्मू कश्मीर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन के अनुसार मां सम्मान योजना के माध्यम से हर घर की सबसे वरिष्ठ महिला को प्रति वष 18,000 प्रदान दिए जाएंगे. महिला स्वयं सहायता समूहों के बैंक ऋण पर ब्याज के विषय पर राज्य

सरकार सहायता करेगी. उज्वला लाभार्थियों को हर साल 2 मुफ्त एलपीजी सिलेंडर उपलब्ध कराए जाएंगे. भाजपा की ओर से जम्मू कश्मीर के युवाओं को JKPSC और वढरउ जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सक्षम बनाने का वादा किया गया है. इसके लिए समय पर साक्षात्कार के साथ निष्पक्ष और न्यायपूर्ण भर्ती प्रक्रिया सुनिश्चित करने का ऐलान किया गया है. 2 वर्षों के लिए तैयारी करने वाले स्टूडेंट्स को 10,000 तक की कोचिंग फीस भी देंगे. परीक्षा केन्द्रों तक यातायात संबंधी लागत और एकमुश्त आवेदन शुल्क देने के साथ ही दूरदूराज के क्षेत्रों में उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को टैबलेट/लैपटॉप देने का संकल्प भी लिया है. भूमिहीन लाभार्थियों के लिए 5 मरला जमीन का मुफ्त आवंटन का वादा भी भाजपा ने किया है. इसके साथ ही वृद्धावस्था, विधवा और विकलांगता पेंशन को1,000 से तीन-गुना बढ़ाकर 3,000 करने का ऐलान किया है. किसान सम्मान निधि के तहत 6000 की जगह 10,000 देने और आयुष्मान भारत सेहत योजना में 5 लाख रुपये के अलावा 2 लाख रुपये अलग से देने का वादा इस संकल्प पत्र में किया गया है. भाजपा ने संकल्प लिया है कि वो बिजली की दरों को 50 प्रतिशत कम करेगी. सरकारी कर्मचारियों के लिए सुधार लागू करेगी. इसके साथ ही अग्निवीरों और आशा कर्मियों से लेकर संविदा कर्मचारियों के लिए भी संकल्प पत्र में वादे किए गए हैं।

ज्वलंत मुद्दा

सम्पादकीय

उत्तराखण्ड में हो रहे सांप्रदायिक अपराध और उसका निराकरण

श्यामपुर उत्तराखण्ड का एक सुंदर सा गाँव हैं। वहाँ सभी लोग सुख-शांति से अपना जीवन यापन कर रहे होते हैं। अचानक वहां गाँव के किनारे पर एक फक ीर आकर मिट्टी का एक ढेर बनाता है उस पर चादर डालता है और फिर उसके बगल में एक झोपड़ी बनाकर रहने लग जाता है। अब श्यामपुर के लोग आते जाते लोगों को वह फक ीर या मजार का खादिम बहलाता-फुसलाता है और लोग वहाँ माथा टेकने लगते हैं। लोगों की श्रद्धा को बढ़वाकर वह खादिम दूसरे चरण में भोले-भाले ग्रामीणों से कहता है कि वे अपने खेत में ही एक छोटे से कोने कहीं मजार बना देंगे तो वह आकर उस मजार पर नमाज पढ़कर उसे भी सिद्ध बना देगा। खादिम के बहकावे में आकर वह ग्रामीण ऐसा ही करता है और अपने खेत में मजार बनाकर वहाँ प्रतिदिन दिया-बत्ती करने लग जाता है। लोगों का आना जाना बढ़ता है तो वहाँ एक दानपेटी रख दी जाती है। अब खादिम हर सप्ताह आकर उस दानपेटी से राशि निकालकर ले जाता है। शनैः-शनैः वह खादिम, उसी ग्रामीण के पैसों से मजार पर टिन डलवा देता है उसे पक्का निर्माण करवा देता है। इधर मजार पर लोगों का आना-जाना बढ़ता है उधर गाँव में कुछ और मुस्लिम परिवार आकर बसने लगते हैं और मजारें भी बढ़ने लगती है। अचानक गाँव में लव जिहाद की घटनाएँ बढ़ने लगती हैं। गाँव की लड़कियों मुस्लिम लड़कों के झाँसे में आकर अपना सर्वस्व उन्हें सौंपने लगती है। अब गाँव में कभी गर्भस्थ होने से, कभी इज्जत के डर से, कभी मजार के खादिम के नाराज होने के डर से तो कभी बाहुबल के सहारे हिंदू लड़कियां मुस्लिम लड़कों से निकाह करने लगती हैं। कभी-कभी तो इस कार्य में हिंदू लड़कियों के परिवार भी दबाव में आकर सहमति देने लगते हैं। इस प्रकार की घटनाओं के बढ़ते जाने पर उत्तराखण्ड की पुष्कर सिंह धामी की सरकार इन घटनाओं का संज्ञान लेती है और स्थिति को समझती है। बात बहुत आगे बढ़ चुकी होती है किंतु पुष्कर सिंह इसे अपनी तेज कार्य योजना से रोकने का प्रयास कर रहे हैं। उत्तराखण्ड सरकार का बुलडोजर चलने लगता है और ऐसी सैकड़ों नकली मजारों पर बुलडोजर चलाकर मजारों को ध्वस्त करके मजार के आसपास कब्जा की गई सैंकड़ों-हजारों एकड़ जमीन को भी इन खादिमों से मुक्त कराता है।

SYED ZAKI HAIDER
(EDITOR / PUBLISHER CUM MANAGING DIRECTOR OF NAI UMMEED NEWS AGENCY
MOBILE NO. 9911371802
EMAIL SYEDZAKIHAIDER786@GMAIL.COM

हरियाणा चुनाव : जब हमें सड़कों पर घसीटा जा रहा था...

कांग्रेस का हाथ थामते ही विनेश ने बीजेपी पर निकाली भड़ास

नूना न्यूज एजेंसी

हरियाणा। में विधानसभा चुनाव को लेकर चल रही राजनीतिक गहमागहमी के बीच आज पहलवान बजरंग पूनिया और विनेश फोगाट कांग्रेस में शामिल हो गईं. बजरंग पूनिया और विनेश फोगाट ने रेलवे की नौकरी से इस्तीफे भी दे दिए हैं. दोनों पहलवानों ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे से मुलाकात की. खरगे ने उनका कांग्रेस पार्टी में स्वागत करते हुए कहा- "चक दे इंडिया, चक दे हरियाणा!" कांग्रेस में प्रवेश के साथ इन दोनों का हरियाणा में विधानसभा चुनाव लड़ना भी तय हो गया है. दोनों पहलवानों ने कांग्रेस में शामिल होते ही बीजेपी पर भड़ास निकाली. विनेश फोगाट ने कहा कि, "बुरे टाइम में पता लगता है कि अपना कौन है. जब हम रोड पर घसीटे जा रहे थे, तब बीजेपी को छोड़कर बाकी पार्टियां हमारा समर्थन कर रही थीं. जो तकलीफ महिलाओं के लिए हमने झेली है, वह किसी को होने नहीं देंगे." उन्होंने कहा कि, "मैं जंतर मंतर पर कुश्ती छोड़ सकती थी, बीजेपी आईटी सेल में यह बात फैलाई कि हम चुके हुए कारतूस हैं विनेश फोगाट ने कहा कि, "बीजेपी की आईटी सेल ने कहा कि मैं नेशनल खेलना नहीं चाहती, मैंने नेशनल खेला. उन्होंने कहा कि ट्रायल नहीं खेलना चाहती, मैंने ट्रायल भी खेला. उन्होंने कहा कि हम ओलंपिक नहीं जाना चाहते, मैं वहा भी गई. पूरी मेहनत की, लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजूर था." उन्होंने कहा कि, "ओलंपिक में जो भी हुआ, कैसे हुआ.. मैं विस्तृत बात करूंगी. हमारी लड़ाई खत्म नहीं हुई है बजरंग पुनिया ने कहा कि, "जितनी मेहनत हमने किसानों, अग्निपथ के लिए की, उतनी ही हम मेहनत से जमीन पर काम करेंगे. जिस दिन विनेश हारी उस दिन आईटी सेल सेलिब्रेट कर रही थी. मल्लिकार्जुन खरगे ने एक्स पर विनेश फोगाट और बजरंग पुनिया के साथ तस्वीर पोस्ट की. उन्होंने लिखा- "चक दे इंडिया, चक दे हरियाणा! दुनिया में भारत का नाम रोशन करने वाले हमारे प्रतिभाशाली चैंपियन विनेश फोगाट और बजरंग पुनिया से 10 राजाजी मार्ग पर मुलाकात. हमें आप दोनों पर गर्व है।

छत्तीसगढ़ के कोंडागांव जिले में छह आईईडी बरामद

छत्तीसगढ़। के कोंडागांव जिले के एक जंगल में सुरक्षाकर्मियों ने नक्सलियों द्वारा लगाए गए छह इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) बरामद किए हैं। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। फरासगांव के पुलिस के अनुविभागीय अधिकारी अनिल विश्वकर्मा ने बताया कि बृहस्पतिवार को गश्त पर निकली जिला पुलिस की एक टीम ने धनोरा पुलिस थाना क्षेत्र के मडगांव के जंगल में चार किलोग्राम वजन के तीन और तीन किलोग्राम वजन के तीन आईईडी बरामद किए। उन्होंने बताया कि नक्सलियों ने सुरक्षाकर्मियों को नुकसान पहुंचाने के लिए विस्फोटकों को जमीन के नीचे छुपा रखा था।

खुलासा — कोलकाता मडर कैश में बड़ा खुलासा

दो आदेशों को साझा कर बीजेपी ने किया कौन सा नया दावा

नूना न्यूज एजेंसी

कोलकाता। आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में बलात्कार और हत्या मामले में बड़े खुलासे का पदार्फाश हुआ है। 10 अगस्त 2024 को चेस्ट विभाग की मरम्मत और नवीनीकरण का आदेश देने वाले डॉ. संदीप घोष के पत्र के प्रकाश में आने के बाद, यहां बड़े पैमाने पर लीपापोती का एक और उदाहरण सामने आया है। बीजेपी ने पश्चिम बंगाल सरकार के दो आदेशों की कहानी साझा की है। बीजेपी मीडिया सेल के हेड ने दावा किया है कि मूल दिनांक 8 अगस्त 2024 को अब हटा दिया गया है। नया आदेश 6 अगस्त 2024 को वापस दिया गया। मूल आदेश (8 अगस्त 2024 का) रेड रोड पर स्वतंत्रता दिवस परेड रिहर्सल के लिए प्रशासनिक स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों की उचित तैनाती का है, जिस पर पश्चिम बंगाल सरकार के एक उप सचिव द्वारा हस्ताक्षर किए गए हैं। आदेश में वरिष्ठ डॉक्टरों, जो वर्तमान में प्रशासनिक पदों पर हैं, को 9 अगस्त को सुबह 5:30 बजे एसएसकेएम अस्पताल में रिपोर्ट करने की आवश्यकता है। दिलचस्प बात यह है कि, अब एक नया आदेश (6 अगस्त 2024 को वापस) सामने आया है, जो उत्तर बंगाल मेडिकल कॉलेज के बायोकैमिस्ट्री विभाग से पोस्ट ग्रेजुएट ट्रेनी (पीजीटी), एसएसकेएम से पीजीटी और आरजी कर मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (एमसीएच) से एक रेजिडेंट डॉक्टर को अनिवार्य करता है।)9 अगस्त को सुबह 5:30 बजे स्वतंत्रता दिवस परेड स्थल से दूर आरजी कर एमसीएच में रिपोर्ट करना है। फोरेंसिक साक्ष्य के अनुसार, आरजी कर एमसीएच में बलात्कार और हत्या, कथित

तौर पर 9 अगस्त की सुबह से ठीक पहले हुई थी। एसएसकेएम के डॉक्टरों को एसएसकेएम के पास एक कार्यक्रम के लिए आरजी कर एमसीएच में रिपोर्ट करने के लिए कहा गया? क्या उसका कोई भी मतलब निकलता है? डॉ सौत्रिक रॉय, प्रभावशाली टीएमसी नेता और डब्ल्यूबी मेडिकल काउंसिल के उपाध्यक्ष डॉ सुशांत रॉय के बेटे, बीजेपी ने नाम का जिक्र करते हुए पूछा कि ये तीन डॉक्टर कौन हैं, जिनके नाम नए बैकडेटेड आदेश में शामिल हैं? टीएमसीपी नेता और पीजीटी डॉक्टर डॉ अविक डे, जो पश्चिम बंगाल के सभी मेडिकल कॉलेजों में डीएमई, प्रिंसिपल और डॉक्टरों की नियुक्तियों को प्रभावित करते थे, को परीक्षा हॉल में प्रवेश करते और परीक्षा परिणामों को प्रभावित करते हुए पकड़ा गया है। डॉ. सौरव पॉल, एक अन्य टीएमसीपी नेता और पूर्व आरजी कर एमसीएच प्रिंसिपल डॉ. संदीप घोष के करीबी विश्वासपात्र हैं। तीनों ममता बनर्जी और डॉ. संदीप घोष के करीबी हैं।

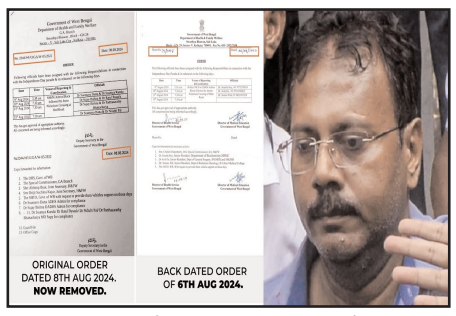

ठाणे में महिला पर दोस्त से 8.17 लाख रुपये ठगने का मामला दर्ज

नूना न्यूज एजेंसी

महाराष्ट्र। के ठाणे शहर की 38 वर्षीय महिला के खिलाफ अपने दोस्त से 8.17 लाख रुपये ठगने के आरोप में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। एक अधिकारी ने बताया कि शिकायत के आधार पर पुलिस ने बुधवार को डोंबिवली के विष्णुनगर थाने में आरोपी सोनिया सुरेश नायर के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 420 (धोखाधड़ी) और अन्य संबंधित प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया। उन्होंने बताया कि नायर ने कथित तौर पर अपने दोस्त से संपर्क कर दावा किया कि उसके पिता (अब दिवंगत) के पास 88 लाख रुपये की जीवन बीमा पॉलिसी थी और यह रकम एक संयुक्त बैंक खाते में जमा है और खाते से लेन-देन नहीं होने के कारण यह बंद हो गया है। अधिकारी ने बताया कि आरोपी ने शिकायतकर्ता से कहा कि उसे पॉलिसी की राशि प्राप्त करने के लिए 8.17 लाख रुपये एक्टिवेशन शुल्क देना होगा और आरोपी महिला ने इसके बदले में उसे भुगतान राशि में से एक हिस्सा देने का वादा किया। उन्होंने बताया कि शिकायतकर्ता ने जुलाई 2023 से जनवरी 2024 के बीच ऑनलाइन लेनदेन के जरिए आरोपी को 8.17 लाख रुपये का भुगतान किया। अधिकारी ने बताया कि मामले में अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है तथा जांच जारी है।

अमित शाह से कांग्रेस का सवाल, जम्मू-कश्मीर को कब मिलेगा पूर्ण राज्य का दर्जा?

नूना न्यूज एजेंसी

जम्मू-कश्मीर। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने शुक्रवार को अमित शाह के जम्मू-कश्मीर दौरे को लेकर सवाल उठाए। शाह को स्वयंभू चाणक्य बताते हुए रमेश ने 2018 में पीडीपी-भाजपा सरकार के पतन के बाद से क्षेत्र को संभालने के गृह मंत्री की आलोचना की। उन्होंने शासन पर शाह के रिकॉर्ड पर सवाल उठाते हुए इस बात पर प्रकाश डाला कि तब से जम्मू-कश्मीर को बड़े पैमाने पर गृह मंत्रालय द्वारा प्रशासित किया गया है। जयराम रमेश ने अमित शाह से चार सवाल भी पूछे हैं। एक्स पर जयराम रमेश ने लिखा कि स्वयंभू चाणक्य आज जम्मू-कश्मीर में हैं। 2018 में पीडीपी-भाजपा सरकार के पतन के बाद से,

जम्मू और कश्मीर को मुख्य रूप से गृह मंत्रालय द्वारा प्रशासित किया गया है। चार प्रश्न जिनका उत्तर स्वघोषित चाणक्य को अपने शासन के बारे में देना चाहिए। पहले सवाल में उन्होंने पूछा कि जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा कब वापस मिलेगा? दूसरी कि आपके रहते जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा स्थिति क्यों खराब हो गई है? तीसरा कि केंद्र सरकार जम्मू-कश्मीर की राजनीतिक कार्यकारिणी की शक्तियों का उल्लंघन करने का प्रयास क्यों कर रही है? और चौथा कि 2019 के बाद से जम्मू-कश्मीर की आर्थिक स्थिति में गिरावट क्यों आई है? केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का घोषणा-पत्र जारी किया और कहा कि अनुच्छेद 370 अब इतिहास बन गया है और केंद्र शासित प्रदेश में इसकी कभी वापसी नहीं होगी। भाजपा के वरिष्ठ नेता शाह ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा कि पिछले 10 साल की अवधि देश और जम्मू-कश्मीर के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखी जाएगी और उन्होंने लोगों से सुशासन जारी रखने के लिए उनकी पार्टी को वोट देने का आग्रह किया। जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव के लिए तीन चरणों 18 और 25 सितंबर तथा एक अक्टूबर को मतदान होगा।

हरियाणा में आप और कांग्रेस में नहीं बनी बात?

50 सीटों पर लड़ने की तैयारी में आम आदमीं पार्टी

नूना न्यूज एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024 को लेकर आम आदमी पार्टी और कांग्रेस गठबंधन पर विचार कर रही थी। हालांकि, सूत्रों की माने तो आप और कांग्रेस के बीच गठबंधन को लेकर बात नहीं बन पाई है। आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच गठबंधन पर बात नहीं बनने के पीछे दो बड़े कारण बताए जा रहे हैं। पहला ये कि आप ने कांग्रेस ने सात सीटें मांगी हैं, लेकिन कांग्रेस सिर्फ तीन-चार सीट देने की बात कह रही थी। वहीं, दूसरा सबसे बड़ा कारण ये बताया जा रहा है कि कांग्रेस आप को शहरी क्षेत्रों में सीटे ऑफर कर रही है और आप यह नहीं चाहती है। हालांकि, अभी तक आधिकारिक तौर पर इसको लेकर कोई जानकारी सामने नहीं आई है।

>> आप में शामिल हो सकते हैं कांग्रेस-भाजपा के कई नेता

कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी के कई नाराज नेता आम आदमी पार्टी में शामिल हो सकते हैं। रविवार को हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024 के लिए आप अपनी पहली लिस्ट जारी कर सकती है।

हाथरस में भीषण सड़क हादसा- जनरथ बस ने मैक्स पिकअप में मारी टक्कर

15 लोगों की मौत

नूना न्यूज एजेंसी

हाथरस। चंदपा के कपूरा चौराहे पर रोडवेज की जनरथ बस ने मैक्स पिकअप में टक्कर मार दी। हादसे में मैक्स और बस में सवाल 15 लोगों की मौत की सूचना मिली है, जबकि 15 से अधिक घायल हो गए हैं। पुलिस ने घायलों को उपचार के लिए जिला अस्पताल भेजा मौके पर डीएम आशीष कुमार और एसपी निपुण अग्रवाल पहुंचे। अधिकारियों ने हादसे के बारे में जानकारी ली। साथ ही गंभीर घायलों को उपचार के लिए अलीगढ़ भेजा।

उत्तरी कर्नाटक के 15 हजार से अधिक किसानों के बहुरेंगे दिन

नूना न्यूज एजेंसी

उत्तरी कर्नाटक। के 15 हजार से अधिक छोटे किसानों के लिए राहत भरी खबर है। अब बहुत जल्द इन किसानों के दिन बहुरने वाले हैं। किसानों को आर्थिक रूप से समृद्ध और कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए आईएसएपी इंडिया फाउंडेशन और वॉलमार्ट फाउंडेशन ने संयुक्त पहल के तहत बाजार एकीकरण प्रोजेक्ट लांच किया है। वॉलमार्ट फाउंडेशन ने प्रोजेक्ट के लिए 1.2 मिलियन डॉलर का आर्थिक अनुदान दिया है। जिसकी मदद से 15 किसान उत्पादक कंपनियों (एफपीसी) को न केवल सुदृढ़ किया जाएगा बल्कि इनकी क्षमता भी बढ़ाई जाएगी। यही नहीं मूल्य श्रृंखलाओं में सुधार के लिए भी कदम उठाए जाएंगे। एफपीसी में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने पर विशेष जोर दिया जाएगा। जानकारी के अनुसार इस प्रोजेक्ट के जरिए एफपीओ की बुनियाद और मजबूत की जाएगी। एफपीओ बाजार संग जुड़ाव सुनिश्चित किया जाएगा। इसके लिए प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। यही नहीं एफपीओ और इसके सदस्यों को आत्मनिर्भर बनाने और बाजार मांग के अनुरूप तैयार करने पर भी खासा जोर होगा, ताकि एफपीओ कृषि संबंधी मांगों

को पूरा करने के लिए सक्षम बनें। आईएसएपी इंडिया फाउंडेशन उत्तरी कर्नाटक के पांच जिलों में एफपीओ के साथ अपने सहयोग को और बढ़ाएगा।

1. कृषि उत्पादकता और आय में वृद्धिः उन्नत कृषि तकनीक, नवीन प्रौद्योगिकी और संसाधनों के जरिए किसानों के फसल की पैदावार और आय बढ़ाने पर जोर। किसानों की उपज का मूल्य जोड़ने और उनकी बाजार तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए प्रसंस्करण और पैकेजिंग इकाईयां स्थापित की जाएंगी।

2. किसान उत्पादक संगठनों को मजबूत करनाः इस प्रोजेक्ट के जरिए 15 एफपीसी की परिचालन क्षमता को बढ़ाया जाएगा। जिसमें महिलाओं को इन संगठनों में सक्रिय भागीदार बनने के लिए प्रोत्साहित करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

3. बाजार एकीकरण और स्थिरताः इस प्रोजेक्ट के जरिए एफपीसी को स्थानीय कृषि व्यवसायों, उद्योग और कृषि स्टार्टअप से जोड़कर किसानों की बाजार तक पहुंच और दीर्घकालिक आर्थिक विकास के लिए नए रास्ते खोले जाएंगे।

4. शासन और कार्यक्रमों में लैंगिक अंतर को मिटानाः कृषि में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका के मद्देनजर एफपीसी में महिलाओं के महत्व को बढ़ाना ताकि निर्णयों में बराबर की भागीदार बनें। महिला किसानों की कृषि संसाधनों, प्रशिक्षण और नेतृत्व के अवसरों तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के प्रयास किए जाएंगे, जिससे न्यायसंगत कृषि समुदाय को बढ़ावा मिलेगा।

इस प्रोजेक्ट को रणनीतिक रूप से आत्मनिर्भर और बाजार की जरुरतों के हिसाब से एफपीसी को तैयार करने के लिए ही बनाया गया है। जिससे एफपीसी कृषि क्षेत्र की नवीन मांगों को पूरा कर सकेगी। प्रशिक्षण प्रदान करके, सामूहिक कार्रवाई को बढ़ावा देकर और कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देकर आईएसएपी इंडिया फाउंडेशन का लक्ष्य एफपीसी को एक लचीले और समृद्ध कृषि पारिस्थितिकी तंत्र की दिशा में प्रयासों का नेतृत्व करने के लिए सशक्त बनाना है। वॉलमार्ट फाउंडेशन ने अपने बयान में कहा कि हमें उत्तरी कर्नाटक में इस परिवर्तनकारी पहल का हिस्सा बनने पर गर्व है। यह प्रोजेक्ट समुदायों को सशक्त बनाने और कृषि को आगे बढ़ाने की हमारी प्रतिबद्धता के अनुरूप है। किसानों, विशेष रूप से महिलाओं को आवश्यक संसाधन, प्रशिक्षण और बाजार तक पहुंच प्रदान करके, हम एक अधिक लचीले और समावेशी कृषि क्षेत्र को बढ़ावा दे रहे हैं। यह साझेदारी सहयोग और प्रणालीगत परिवर्तन के माध्यम से सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए हँ१३.ङ्क१ॅ के मिशन को दशार्ती है। हमारे परोपकारी प्रयासों का उद्देश्य विकास, समृद्धि और मजबूत समुदाय बनाना है। आईएसएपी इंडिया फाउंडेशन एक अग्रणी गैर-लाभकारी संगठन है जो टिकाऊ कृषि पद्धतियों, क्षमता निर्माण और समुदाय-संचालित विकास पहलों के माध्यम से ग्रामीण आजीविका को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। छोटे किसानों को सशक्त बनाने और लैंगिक समावेशिता को बढ़ावा देने पर जोर देते हुए फाउंडेशन ग्रामीण समुदाय को समृद्ध बनाने के लिए कार्यरत है।

विश्व प्रसिद्ध महिला पहलवान विनेश फोगाट और ओलंपिक पदक विजेता बजरंग पुनिया कांग्रेस में शामिल

नई दिल्ली, 06 सितंबर

हरियाणा। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में अनेक पदक जीतने वाली महिला पहलवान विनेश फोगाट और ओलंपिक पदक विजेता बजरंग पुनिया ने कांग्रेस का दामन थाम लिया। नई दिल्ली स्थित कांग्रेस मुख्यालय में कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल, हरियाणा के प्रभारी महासचिव दीपक बाबरिया कांग्रेस के मीडिया व प्रचार विभाग के अध्यक्ष पवन खेड़ा और हरियाणा कांग्रेस अध्यक्ष उदय भान ने दोनों पहलवानों को कांग्रेस का पटका पहनाकर पार्टी में शामिल कराया। इससे पहले फोगाट और पुनिया ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे से उनके आवास पर मुलाकात भी की। पत्रकारों से बातचीत में दोनों पहलवानों का स्वागत करते हुए कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने कहा कि यह कांग्रेस के लिए बहुत बड़ा दिन है। यह बहुत गर्व की बात है कि दो महान पहलवान कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए हैं। उन्होंने कहा कि दोनों ओलंपियनों ने न केवल खेल के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है, बल्कि यौन उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई, किसानों के लिए लड़ाई और अग्निपथ योजना के खिलाफ लड़ाई लड़ने जैसे सामाजिक कार्यों में भी भाग लिया है। कांग्रेस महासचिव वेणुगोपाल ने लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी से मुलाकात के लिए फोगाट और पुनिया को कारण बताओ नोटिस जारी करने के लिए रेलवे विभाग की आलोचना की। उन्होंने पूछा कि क्या लोकसभा में

विपक्ष के नेता से मिलना कोई अपराध है। हरियाणा कांग्रेस अध्यक्ष उदयभान ने कहा कि दोनों पहलवानों ने अपनी प्रतिभा से पूरी दुनिया में हिंदुस्तान का गौरव बढ़ाया है। वह दोनों का हरियाणा कांग्रेस कमेटी की तरफ से हार्दिक स्वागत करते हैं। वहीं कांग्रेस में शामिल होने के बाद विनेश फोगाट ने पहलवानों के आंदोलन का समर्थन करने के लिए कांग्रेस का धन्यवाद किया और कहा कि बुरे समय में ही पता चलता है अपना कौन है। जब महिला पहलवानों को सड़क पर घसीटा जा रहा था, तो भाजपा हमारे साथ नहीं थी, जबकि कांग्रेस हमारे साथ थी। कांग्रेस हमारे दर्द और आंसुओं को समझ पा रही थी। विनेश ने कहा कि वह ऐसी विचारधारा से जुड़ रही हैं, जो महिलाओं पर हो रहे अन्याय के खिलाफ खड़ी है और सड़क से संसद तक उनके हक की लड़ाई लड़ने को तैयार है। उन्होंने कहा कि वह अपनी बहनों के साथ खड़ी रहेंगी और साथ ही देश की सेवा करेंगी। वहीं बजरंग पुनिया ने कहा कि वह कांग्रेस नेताओं का धन्यवाद करते हैं, जो मुश्किल घड़ी में पहलवानों के साथ खड़े रहे। आंदोलन कर रहे पहलवानों ने भाजपा की सभी महिला सांसदों के घर पत्र भेजा, तब भी वे महिला खिलाड़ियों के साथ खड़ी नहीं हुईं। कांग्रेस ने हमारा साथ दिया। जैसे हमने कुश्ती में जी तोड़ मेहनत की है, उसी तरह हम कांग्रेस पार्टी में रहकर मेहनत करेंगे और पार्टी को आगे बढ़ाएंगे।

आंध्र भवन दिल्ली में शिक्षक दिवस समारोह

नई दिल्ली : 6 सितंबर शिक्षक दिवस के अवसर पर आदिलीला फाउंडेशन ने शिक्षकों, हेड मास्टर्स, प्रिंसिपलों, प्रोफेसरों, शैक्षणिक संस्थानों के कुलपतियों/उपाध्यक्षों के साथ सामाजिक और शैक्षिक कार्यकताओं को प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किए। सभाध्यक्ष/शिक्षक दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए डॉ. एस.आदिनारायण, पीएच.डी.; इस महान अवसर के मुख्य अतिथि प्रोफेसर अनिल कुमार, आईजीएनसीए, सरकार थे। भारत सरकार, दिल्ली, प्रोफेसर डी.पी.मिश्रा, डीयू, प्रोफेसर उपेन्द्र, जे.एन.यू., , सरकार इस कारिक्रम में शामिल होए भारत के सम्मानित अतिथि श्री थोटा नागेश, श्री थे। मूर्ति, श्री शास्त्री के.आनंदम, श्री विनोद बिधूड़ी, . श्रीमती मीमू कुमार डांस गुरु, प्रो. बनर्जी, एनसीईएआर, दिल्ली ने सार्वजनिक सेवा के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता और समाज में अमूल्य योगदान के सम्मान में थोटा नागेश को "भारतीय सेवा सम्राट" पुरस्कार दिया। श्री नागेश को उनके समर्पित राजनीतिक शिष्य बहुत प्यार और सम्मान के साथ "मिस्टर गुरुवु" कहकर बुलाते थे। यह सम्मान उन्हें 5 सितंबर को आंध्र और तेलंगाना भवन में आयोजित भव्य शिक्षक दिवस समारोह गुरु ब्रह्मोत्सवम के दौरान प्रदान किया गया।

वंचित क्षेत्रों में महिलाओं के लिए नई पहल, सामाजिक जिम्मेदारी और सम्मान के लिए नई दिशा

प्रोजैक्ट हर कम्फर्ट की शुरुआत

नई दिल्ली, सितम्बर : आर्टेमिस हैल्थ साइंसेज फाऊंडेशन और पिंकिश फाऊंडेशन ने महत्वपूर्ण साझेदारी की घोषणा की है। दोनों संगठनों ने प्रोजैक्ट हर कम्फर्ट की शुरुआत के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस पहल का उद्देश्य वंचित क्षेत्रों और शहरी मलिन बस्तियों में महिलाओं और लड़कियों के लिए मासिक धर्म स्वास्थ्य और स्वच्छता में सुधार करना है। प्रोजैक्ट हर कम्फर्ट मासिक धर्म से जुड़े स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक कलंक जैसे मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक ठोस प्रयास का प्रतीक है। आर्टेमिस हैल्थ साइंसेज फाऊंडेशन की प्रैजिडैंट शालिनी कंवर चांद ने कहा, हमारा उद्देश्य मासिक धर्म स्वास्थ्य प्रथाओं को बढ़ाना और दिल्ली एनसीआर में महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाना है। यह पहल हमारे सामाजिक जिम्मेदारी के मूल्यों को दशार्ती है और एक सम्मानजनक, खुली संस्कृति को बढ़ावा देती है। हम मानते हैं कि हर महिला और लड़की को अपने मासिक धर्म स्वास्थ्य को आत्मविश्वास और सम्मान के साथ प्रबंधित करने का अधिकार है।

केएमपी के पास ड्रेन में डूबी कार में मिला युवक का शव

केएमपी के पास स्थित एक ड्रेन में डूबी कार से एक युवक का शव गली-सड़ी अवस्था में मिला है। मृतक की पहचान गांव बड़खालसा निवासी प्रमोद के रूप में हुई है, जो 16 दिन पहले लापता हो गया था। पुलिस ने शव को बाहर निकलवाकर पोस्टमार्टम के लिए नागरिक अस्पताल के शव विच्छेदन गृह भिजवा दिया है। जानकारी के अनुसार, प्रमोद 19 अगस्त को रक्षाबंधन के अवसर पर अपनी पत्नी को मायके छोड़ने के बाद गांव लौट रहा था। लेकिन वह घर नहीं पहुंचा और परिजनों ने उसके लापता होने की शिकायत राय थाना पुलिस को दी थी। पुलिस ने मामले में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की थी। वीरवार को ड्रेन में डूबी कार की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने कार को बाहर निकाला और उसकी जांच की तो उसमें एक युवक का शव पाया गया। शव की पहचान प्रमोद के रूप में की गई है। प्रारंभिक जांच में आशंका जताई जा रही है कि प्रमोद की कार अनियंत्रित होकर ड्रेन में गिर गई, जिससे उसकी मौत हुई है। पुलिस मामले की विस्तृत जांच कर रही है।

दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष माननीय रामनिवास गोयल के सचिव माननीय नीरज अग्रवाल ने सात शिक्षाविदों को 40वें डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्मृति राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान 2024 से सम्मानित किया।

एस.डी. कॉलेज अंबाला कैंट में पैरिस ओलंपिक 2024 के कांस्य पदक विजेता सरबजोत सिंह का स्वागत

अम्बाला, ासितबर : अंबाला कैंट स्थित एस.डी. कॉलेज में आज का दिन अत्यंत गर्व और उत्साह से भरा रहा जब पेरिस ओलंपिक 2024 के 10 मीटर पिस्टल मिक्स्ड टीम इवेंट के कांस्य पदक विजेता, श्री सरबजोत सिंह ने कॉलेज का दौरा किया और छात्रों से मिलकर उनका मार्गदर्शन किया।

सरबजोत सिंह के आगमन पर पूरे कॉलेज परिसर में जोश और प्रेरणा का माहौल बन गया। छात्रों ने उन्हें बड़े उत्साह के साथ सुना और उनसे प्रेरणा ली। श्री सिंह ने अपने ओलंपिक अनुभवों को साझा करते हुए छात्रों को बताया कि किस प्रकार कठिन परिश्रम, अनुशासन और अटूट समर्पण से बड़े से बड़े लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। उन्होंने छात्रों को उनके भविष्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करने की सलाह दी। इस विशेष अवसर पर, एस.डी. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. राजिंदर सिंह, डॉ. अल्का शर्मा, डॉ विजय शर्मा, डॉ परमजीत कौर डॉ. सोनिका सेठी, शारीरिक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. नितिन सहगल, कोच सूरज प्रकाश सिंहसूर्य प्रकाश सिंह एवं कॉलेज के अन्य गणमान्य सदस्यों और खिलाड़ियों ने श्री सरबजोत सिंह का सम्मान किया। उन्हें स्मृति चिन्ह और पुष्पगुच्छ देकर उनकी अद्वितीय उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया। इस सम्मान समारोह में सभी ने श्री सिंह के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं।

दिल्ली में घुमते आवारा पशु

दिल्ली लोहे की पुल का काम जोरो पर

लैंसर कंटेनर और पी.टी. मैप ट्रांस लॉजिस्टिक के बीच प्रमुख समझौता

नई दिल्ली, सितम्बर : देश की अग्रणी शिपिंग और लॉजिस्टिक्स समाधान प्रदाता, लैंसर कंटेनर लाइन्स लिमिटेड ने इंडोनेशियाई कंपनी पी.टी. मैप ट्रांस लॉजिस्टिक, सुरबाया के साथ दश हजार टीईयू (बीस-फुट और चालीस-फुट कंटेनर) लीज पर देने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इस अवसर पर लैंसर कंटेनर के प्रबंध निदेशक खालिक चटाईवाला और पी.टी. मैप ट्रांस लॉजिस्टिक के निदेशक प्रफुल्ल झा उपस्थित थे। लैंसर इस समझौते को अपनी लीजिंग गतिविधियों और व्यवसाय विस्तार के लिए महत्वपूर्ण कदम मानता है, जिससे कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन और बाजार स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। कंपनी ने अगले कुछ वर्षों में 45 हजार टीईयू क्षमता का लक्ष्य रखा है, जो वित्त वर्ष 2024 में 20 हजार टीईयू से बढ़ेगी। इसके तहत कंपनी हर महीने 200-300 कंटेनर जोड़ते हुए अपनी इन्वेंट्री में वृद्धि करेगी। लैंसर कंटेनर 2011 में स्थापित हुई और 30 से अधिक देशों में सेवाएं प्रदान करती है, जिसमें भारतीय उपमहाद्वीप, दक्षिण पूर्व एशिया, अमेरिका और यूरोप प्रमुख हैं।

भारत और सऊदी अरब के बीच रक्षा सहयोग पर संयुक्त समिति की छठी बैठक आयोजित

नई दिल्ली, सितम्बर : भारत और सऊदी अरब के बीच सऊदी अरब के रियाद में रक्षा सहयोग पर संयुक्त समिति (जेसीडीसी) की छठी बैठक आयोजित की गई। दोनों देशों ने लंबे समय से चले आ रहे बहुआयामी रक्षा सहयोग को और मजबूत करने के लिए नए अवसरों पर चर्चा की। सैन्य, प्रशिक्षण, रक्षा उद्योग, अनुसंधान एवं विकास आदि क्षेत्रों में सहयोग के दायरे का विस्तार करने के लिए विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। भारत और सऊदी अरब के बीच सदियों पुराने आर्थिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों पर आधारित मैत्रीपूर्ण और सौहार्दपूर्ण संबंध हैं। रक्षा सहयोग पर समझौता ज्ञापन दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है। संयुक्त रक्षा सहयोग समिति रक्षा सहयोग के उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए समझौता ज्ञापन के तहत एक संस्थागत तंत्र है। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व संयुक्त सचिव अमिताभ प्रसाद ने किया, जिसमें रक्षा मंत्रालय के अधिकारी शामिल थे। इस बैठक की सह-अध्यक्षता सऊदी अरब प्रतिनिधिमंडल के मेजर जनरल सलमान बिन अवध अल-हरबी ने की।

दिल्ली स्कूल ऑफ कॉम्युनिकेशन ने एक हृदयस्पर्शी कार्यक्रम के साथ अपनी 29वीं वर्षगांठ मनाई

नई दिल्ली, सितम्बर : दिल्ली स्कूल ऑफ कॉम्युनिकेशन (डीएससी) ने अमर ज्योति चैरिटेबल ट्रस्ट में एक हृदयस्पर्शी कार्यक्रम के साथ अपनी 29वीं वर्षगांठ मनाई। 1995 में शिक्षक दिवस के अवसर पर स्थापित, डीएससी एकीकृत मार्केटिंग कम्युनिकेशन में प्रथम अन्वेषक रहा है, जो छात्रों को कल के शक्तिशाली संचार नेताओं में बदलने के लिए सशक्त बनाता है। इस वर्ष की वर्षगांठ समारोह को और भी विशेष बना दिया गया था क्योंकि डीएससी का पूरा परिवार ट्रस्ट के छात्रों के साथ दिन बिताया, जिसमें कहानी सुनाने के विभिन्न रूपों में भाग लिया गया। डीएससी के छात्रों को नृत्य, संगीत, कला और खेलों के सत्रों में भाग लेने का अवसर मिला, जिससे साझा सीखने और आनंद का माहौल बना। कार्यक्रम की शुरूआत अमर ज्योति के छात्रों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए एक प्रेरक नृत्य प्रदर्शन से की। इस कार्यक्रम में एक मित्रवत बास्केटबॉल मैच भी शामिल था, जिसने एकता और समावेश की भावना को बढ़ावा दिया।

फिर सामने आया सीएम योगी का मानवीय चेहरा, केरल के वायनाड में आपदा प्रभावितों की मदद को दिए 10 करोड़ रुपए

मुख्यमंत्री की उदारता के लिए केरल के राज्यपाल आरिफ मो. खान ने जताया धन्यवाद, पत्र लिखकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त की

नई दिल्ली, ासितम्बर : एक बार फिर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का मानवीय चेहरा सामने आया है। सीएम योगी ने केरल के वायनाड जिले में आई आपदा में प्रभावितों की मदद से उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से 10 करोड़ रुपए की धनराशि प्रदान की है। इस मानवीय मदद के लिए केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर धन्यवाद दिया है। राज्यपाल ने पत्र में कहा है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने केरल के वायनाड जिले के भूस्खलन पीड़ितों के पुनर्वास हेतु 10 करोड़ रुपए की जो धनराशि भेजी है, उसके लिए उनका बहुत बहुत धन्यवाद। आपकी उदारता ने केरलवासियों के मन पर गहरी छाप डाली है और उन्हें यह बोध कराया है कि प्राकृतिक विपदा तो क्षेत्र विशेष के लोगों को प्रभावित करती है, परंतु उसकी पीड़ा समस्त देशवासी महसूस करते हैं। आपकी इस महती कृपा के प्रति अपनी निजी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए मैं भगवतगीता के एक श्लोक का सहारा लूंगा। आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योरर्जुन, सुखं वा यदि वा दुखं स योगी परमो मतः।

राष्ट्रीय राजधानी में फिर सुबह बरसे बादल, जलमग्न हुई सड़कें

दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में शुक्रवार की सुबह फिर जोरदार बारिश हुई है। इस बारिश ने दिल्ली की रफ्तार को थाम दिया। हर तरफ सुबह ट्रैफिक जाम देखने को मिला, जिसका मुख्य कारण बारिश के कारण जलमगन हुई सड़कें रही। दिल्लीवासियों के लिए दिन की शुरूआत भारी बारिश के साथ हुई, जिसके कारण गंभीर जलभराव हो गया और ट्रैफिक काफी धीमे रहा। स्कूल जाते हुए बच्चे बारिश में भीगने से बचने की कोशिश करते देखे गए। बापरोला क्षेत्र और नजफगढ़ रोड से प्राप्त तस्वीरों में भारी जलभराव दिख रहा है। अरबिंदो मार्ग पर यातायात प्रभावित हुआ और विभिन्न स्थानों पर जलभराव के कारण वाहन रेंगते हुए चले। इससे पहले, आरडब्ल्यूएफसी नई दिल्ली ने भविष्यवाणी की थी, "दिल्ली (जफरपुर), एनसीआर (दादरी, ग्रेटर नोएडा, गुरुग्राम, फरीदाबाद, मानेसर, बल्लभगढ़) के अलग-अलग स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा के साथ हल्की गरज और बिजली गिरने की संभावना है। दिल्ली यातायात पुलिस ने एक परामर्श जारी किया, जिसमें कहा गया, "मूलचंद अंडरपास पर एक ट्रक के खराब हो जाने के कारण साउथ एक्सटेंशन से लाजपत नगर की ओर जाने वाले रिंग रोड पर यातायात प्रभावित है। कृपया अपनी यात्रा की योजना तदनुसार बनाएं।

वैज्ञानिकों ने शास्त्रीय और क्वांटम गुरुत्व को जोड़ने की दिशा में बड़ा कदम उठाया

नई दिल्ली, सितम्बर : शोधकर्ताओं ने गुरुत्वाकर्षण और क्वांटम यांत्रिकी के शास्त्रीय सिद्धांत को एकीकृत करने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाते हुए अपनी गणना के माध्यम से गुरुत्वाणु - गुरुत्वाकर्षण की काल्पनिक मात्रा और गुरुत्वाकर्षण संपर्क के बल की मध्यस्थता करने वाले प्राथमिक कण- के शोर से प्रेरित अनिश्चितता का संबंध पाया। जबकि शास्त्रीय भौतिकी नियमों और समीकरणों का एक समूह है जो बताता है कि सामान्य वस्तुएं कैसे व्यवहार करती हैं और क्वांटम भौतिकी परमाणुओं और छोटी वस्तुओं की दुनिया का वर्णन करती है। एस.एन. बोस नेशनल सेंटर फॉर बेसिक साइंसेज में खगोल भौतिकी (आईआईए) और उच्च ऊर्जा भौतिकी विभाग के श्री सोहम सेन और प्रो. सुनंदन गंगोपाध्याय स्थलीय प्रणालियों में क्वांटम गुरुत्वाकर्षण के संकेत खोजने में लगे हुए हैं, जो गुरुत्वाकर्षण के पूर्ण क्वांटम सिद्धांत की बेहतर समझ विकसित करेगा। यह वो मौलिक समस्या है जो अल्बर्ट आइंस्टीन के समय से अनसुलझी है। क्वांटम गुरुत्व (क्यूजी) सैद्धांतिक भौतिकी का एक क्षेत्र है जो क्वांटम यांत्रिकी के सिद्धांतों के अनुसार गुरुत्वाकर्षण का वर्णन करता है। यह ऐसे वातावरण से संबंधित है जिसमें न तो गुरुत्वाकर्षण और न ही क्वांटम प्रभावों को नजरअंदाज किया जा सकता है, जैसे कि ब्लैक होल या न्यूट्रॉन सितारों जैसी कॉम्पैक्ट खगोलीय वस्तुएं। यह पहले दिखाया गया है कि जब गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र को क्वांटम यांत्रिक रूप से व्यवहार किया जाता है, तो यह एलआईजीओ के इंटरफेरोमीटर जैसे गुरुत्वाकर्षण तरंग डिटेक्टरों की भुजाओं की लंबाई में उतार-चढ़ाव या शोर उत्पन्न करता है। इस शोर की विशेषताएं गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र की क्वांटम स्थिति पर निर्भर करती हैं। इस मौलिक शोर का पता लगाना गुरुत्वाकर्षण के परिमाणीकरण और गुरुत्वाकर्षण और क्वांटम सिद्धांत के बीच की कड़ी गुरुत्वाणु के अस्तित्व के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण होगा।

पावरग्रिड ने भादला और बीकानेर ट्रांसमिशन का अधिग्रहण किया

नई दिल्ली, सितम्बर : पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (पावरग्रिड) विद्युत मंत्रालय के तहत महारत्न सीपीएसयू ने विभिन्न निजी क्षेत्र के खिलाड़ियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने और टैरिफ आधारित प्रतिस्पर्धी बोली (टीबीसीबी) प्रक्रिया में सफल बोलीदाता के रूप में उभरने के बाद बोली प्रक्रिया समन्वयक पीएफसी कंसल्टिंग लिमिटेड से भादला और बीकानेर कॉम्प्लैक्स के इंटरकनैक्शन हेतु सिस्टम सुदृढ़ीकरण से संबंधित ट्रांसमिशन सिस्टम परियोजना के लिए प्रोजैक्ट स्पैशल पर्पज व्हीकल भादला और बीकानेर टांसमिशन लिमिटेड का अधिग्रहण किया है। यह ट्रांसमिशन सिस्टम एक अंतरराज्यीय ट्रांसमिशन सिस्टम परियोजना है और इसे 24 महीनों में कमीशन किया जाना है।

विनेश फोगाट ने भारतीय रेलवे से इस्तीफा दिया

दिल्ली। भारत की पूर्व पहलवान विनेश फोगाट ने निजी कारणों का हवाला देकर भारतीय रेलवे से शुक्रवार को इस्तीफा दे दिया जबकि उनके कांग्रेस पार्टी में शामिल होने की अटकलें तेज हैं। विनेश ने एक्स पर लिखा, भारतीय रेलवे की सेवा करना मेरे जीवन का यादगार और गर्व से भरा समय रहा। उन्होंने आगे लिखा, मैने रेलवे की सेवा से खुद को अलग करने का फैसला किया है और भारतीय रेलवे के संबंधित अधिकारियों को अपना इस्तीफा भेज दिया है। विनेश ने लिखा, मैं रेलवे द्वारा देश की सेवा करने का मौका दिये जाने के लिये सदैव भारतीय रेलवे परिवार की आभारी रहूंगी। विनेश ने पेरिस ओलंपिक में 50 किलो के स्वर्ण पदक के मुकाबले से ठीक पहले अयोग्य करार दिये जाने के कारण कुश्ती से संन्यास ले लिया था। उनकी अपील को खेल पंचाट ने खारिज कर दिया था।

सार संक्षेप

गोकशी में वांछित चल रहे आरोपी को पुलिस ने दबोचा

नूरपुर: गौकशी मे वांछित चल रहे आरोपी को पुलिस ने थाना क्षेत्र के जंगलों से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। कुछ दिन पूर्व थाना नूरपुर के गांव बल्दाना के जंगलों में गोकशी होने की सूचना मिली थी। जहां हिंदू संगठन और पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और देखा कि वाकई गोकशी हुई है। जिसमें तुरंत पुलिस ने लगभग आठ के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया। नूरपुर पुलिस लगातार गोकशी करने वाले आरोपियों को गिरफ्तार करने में लगी है। वही सोनू उर्फ सोइल पुत्र नसीम निवासी गावड़ी पनियाला को नूरपुर पुलिस ने धौलागढ़ की पुलिया से गिरफ्तार किया।

नाबालिग से छेड़छाड़ के आरोपी को भेजा जेल

धामपुर: मोहल्ला लोहियान निवासी एक महिला ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उसकी धेवती मदद करने के लिए दुकान पर आकर बैठ जाया करती थी। आरोप है कि फरदीन निवासी मोहल्ला नई सराय उनकी दुकान पर आता था। दुकान पर प्रार्थिनी की धेवती सहयोग हेतु दुकान पर बैठती थी। जिस पर फरदीन गलत निगाह रखने लगा और बार बार अलग अलग बहाने से आने लगा। उसकी बेटी बहुत डर गई। आरोपी भुगत लेने की धमकी दे रहा था। इस मामले में देर शाम विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल तथा भाजपा युवा मोर्चा से जुड़े दर्जनों लोग पीड़िता की नानी के साथ कोतवाली पहुंचे तथा आरोपी के खिलाफ नामजद शिकायत देकर कार्रवाई की मांग की। पुलिस ने आरोपी फरदीन के खिलाफ संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज कर गुरुवार को चालान कर जेल भेज दिया।

संदिग्ध परिस्थितियों में ई-रिक्शा चालक की हुई मौत

बिजनौर: गुरुवार को मंडावर थाना क्षेत्र के गांव इनामपुरा निवासी दर्जनों ग्रामीण एसपी दफ्तर पहुंचे। बताया कि राहुल पुत्र मदनपाल निवासी इनामपुरा ई-रिक्शा चालक है। राहुल को गांव का ही एक अन्य ई-रिक्शा चालक एक सितंबर को अपने साथ ले गया था। आरोपियों ने मारपीट करते हुए राहुल पर जानलेवा हमला किया था। परिजनों को पता लगने पर उन्होंने अस्पताल में भर्ती कराया। जहां उपचार के दौरान राहुल की मौत हो गई। परिजनों का आरोप है कि हत्या के इरादे से उस पर हमला किया गया था। उधर एसपी ने इस मामले की जांच सीओ को सौंपी दी। एसपी सिटी संजीव वाजपेयी ने बताया कि मृतक ई?-रिक्शा से गिरकर घायल हुआ था। जंदरपुर में सीसीटीवी फुटेज भी देखी गई है।

भाजपा नेता सहित तीन किसानों के नलकूपों पर चोरी

बास्टा: भाजपा मंडल अध्यक्ष राकेश सैनी ने बास्टा पुलिस चौकी प्रभारी को तहरीर देकर बताया कि बुधवार की रात्रि को हमारे खेत पर बने नलकूप का ताला तोड़कर चोर द्वारा मोटर का केबल स्टार्टर आदि सामान चोरी करके चोर ले गये। किसान सोमपाल व विजयपाल के नलकूपों का ताला तोड़कर केबल व स्टार्टर को चोर चोरी करके ले गये। क्षेत्र में मोटर चोरी होने की एक आम घटना हो गई है। पिछले दो सप्ताह से क्षेत्र के गांव थूरैला में लगभग दस किसानों के नलकूपों का मोटर का तार केबल स्टार्टर आदि चोरी कर लिये थे। चोरों के खिलाफ किसानों ने थाने पहुंचकर पुलिस को तहरीर देकर मोटर चोरी की घटना के खुलासे की मांग की थी। लेकिन अभी तक पुलिस चोरों को पकड़ने में नाकाम दिखाई दे रही है।

पीड़ित ने की दरोगा की एसपी से शिकायत

बिजनौर: हीमपुर दीपा थाना क्षेत्र के हरीनगर निवासी भारत सिंह ने बृहस्पतिवार को एसपी से मुलाकात करते हुए शिकायती पत्र दिया। आरोप है कि थाने में तैनात एक दरोगा बुधवार की शाम चार पांच सिपाहियों को लेकर उसके घर पहुंचे। जिन्होंने कहा कि तुम शराब बेचते हो और घर की तलाशी लेनी शुरू कर दी। घर में कहीं शराब तो नहीं मिली। लेकिन घर में रखे हुए 25 हजार रुपये दरोगा ने निकाल लिए। मना करने पर झूठे मुकदमे में फंसाने की धमकी दी। पीड़ित ने बताया कि उसने यूकेलिप्टिस के पेड़ बेचे थे, जिसके 25 हजार रुपये घर में रखे हुए थे। शिकायती पत्र देकर आरोपी दरोगा के खिलाफ न्याय की गुहार लगाई। एसपी अभिषेक झा ने बताया पीड़ित की शिकायत पर जांच सीओ चांदपुर को सौंप दी गई है। जांच में दोषी पाए जाने पर कार्यवाही की जाएगी।

हसनपुर में धूमधाम के साथ निकाली गई श्री गणेश शोभायात्रा

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। नगर में शुक्रवार को श्री गणेश सेवा समिति के द्वारा श्री गणेश शोभायात्रा भव्य एवं आकर्षक स्वत चलित झांकियो के साथ निकाली गई जिसका शुभारंभ राजेश सिंघल क्षेत्रीय उपाध्यक्ष पश्चिम उत्तर प्रदेश भाजपा एवं हसनपुर विधायक महेंद्र सिंह खड़कवंशी तथा हसनपुर पालिका अध्यक्ष राजपाल सैनी ने संयुक्त रूप से फीता काटकर एवं गणेश जी की आरती उतार कर वह नारियल फोड़कर किया, शोभा यात्रा नगर के शिवाला मंदिर से प्रारंभ होकर पुराना अस्पताल रोड, पुरानी जमा मस्जिद, शिवाजी मार्ग, रहरा रोड, शिव मंदिर से वापस होते हुए मुख्य पंसारा बाजार, इंदिरा चौक, वर्मा मार्केट से होती हुई मोहल्ला होली चौक से निकलकर शिवाला मंदिर पर जाकर संपन्न हुई, शोभा यात्रा का जगह-जगह पुष्प वर्षा कर एवं जलपान कराकर स्वागत किया गया, शोभायात्रा में भगवान श्री गणेश जी का रथ, इस्कॉन मंदिर की झांकी , राधा कृष्ण की झांकी, श्री राम मंदिर की झांकी एवं डांडिया नृत्य वह काली का अखाड़ा मुख्य आकर्षण का केंद्र रहा, शोभा यात्रा में गजरौला के जनता बैंड एवं दिल्ली के अग्रवाल बैंड एवं राज बैंड मेरठ द्वारा बजाई जा रही धार्मिक धुनों पर लोग मंत्र मुग्ध हो गए, वही नगर पालिका द्वारा सड़कों पर विशेष सफाई व्यवस्था की गई एवं चूने का छिड़काव कराया गया, उधर सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस क्षेत्राधिकारी दीप कुमार पंत, प्रभारी निरीक्षक रविंद्र प्रताप सिंह, कस्बा इंचार्ज संदीप मलिक भारी पुलिस बल के साथ शोभायात्रा के प्रारंभ से अंत तक मौजूद रहे, इस मौके पर मुख्य रूप से क्षेत्रीय उपाध्यक्ष राजेश सिंघल, विधायक महेंद्र सिंह खड़कवंशी, पालिका अध्यक्ष राजपाल सैनी, व्यापारी सुरक्षा फोरम के प्रदेश महामंत्री मुकेश गुप्ता, सचिन गुप्ता, विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष मोहित अग्रवाल,, मयंक अग्रवाल, अंकुर अग्रवाल, संजय शर्मा, मनोज शर्मा, अमित अग्रवाल, मनोज गोयल तथा उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के युवा जिला अध्यक्ष शिखर अग्रवाल वह श्री गणेश सेवा समिति के अशोक कुमार, मोहित अग्रवाल, रिशु उर्फ बिट्टू अग्रवाल, रानू अग्रवाल, विशाल अग्रवाल, मनीष अग्रवाल, शुभम शर्मा, सार्थक गुप्ता, विकास अग्रवाल, नीरज कुमार, निक्की आदि सहित भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

रोटरी क्लब हसनपुर द्वारा शिक्षकों को किया गया सम्मानित

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। शिक्षक दिवस के उपलक्ष में गुरुवार 5 सितंबर को रोटरी क्लब हसनपुर द्वारा शिक्षक सम्मान समारोह मनाया गया जिसके अंतर्गत विभिन्न विद्यालयों के 5 सम्मानित शिक्षकों को रोटरी इंटरनेशनल का शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने वाले शिक्षकों का प्रशस्ति पत्र एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित शिक्षकों में शिक्षक संघ के अध्यक्ष यशपाल सिंह ,सरस्वती शिशु मंदिर के प्रधानाचार्य भूदेव , प्राथमिक विद्यालय बीजनपुर के प्रधानध्यापक पवन अग्रवाल, आदर्श इंटर कॉलेज कुटी दौलतपुर के असिस्टेंट टीचर ललित त्यागी, एच एस पब्लिक स्कूल के अध्यापक अंकित शर्मा उपस्थित रहे। इस अवसर पर क्लब अध्यक्ष रो० संतोष अग्रवाल ने कहा कि एक शिक्षक के पास ही वो कला है जो मिट्टी को सोने में बदल सकती है। शिक्षक वास्तव में ज्ञान के साथ-साथ बच्चों के चरित्र का भी निर्माण करते हैं। क्लब सचिव प्रदीप अग्रवाल ने शिक्षा के क्षेत्र में क्लब द्वारा विगत वर्षों में किए गए कार्यों को सभी के समक्ष रखा तथा आगे भी शिक्षा के क्षेत्र में क्लब द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की बात कही। निवर्तमान अध्यक्ष अर्पण गुप्ता ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया एवं शिक्षक दिवस मनाने के पीछे का उद्देश्य शिक्षकों का दूसरों को शिक्षित करते हुए अपना जीवन समर्पित करने को बताया। इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु क्लब अध्यक्ष रो० संतोष अग्रवाल,क्लब सचिव रो० प्रदीप अग्रवाल, जोनल असिस्टेंट गवर्नर रोटेरियन अर्पण गुप्ता, कोषाध्यक्ष रो० योगेश चौहान, सौरभ गुप्ता, चंद्रसेन अग्रवाल, सत्येंद्र त्यागी, अशोक आर्य, विजय अग्रवाल, सचिन कंसल, अमित गर्ग,अभिषेक अग्रवाल, सागर अग्रवाल, अंकित गुप्ता, सुनील अग्रवाल, दीपक अग्रवाल, सक्षम त्यागी आदि रोटेरियन बंधु शामिल रहे।

ठगी पीड़ितों ने पल्स जैसी कंपनियों के खिलाफ कार्यवाही किए जाने की मांग को लेकर सौंपा ज्ञापन

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

अमरोहा। शुक्रवार को अमरोहा कलेक्ट्रेट पर अनिश्चितकालीन असहयोग सत्याग्रह आन्दोलन लगातार 6 वे दिन भी जारी रहा जिसमें ए डी एम को ज्ञापन सौंपा गया तथा सरकार से मांग की गई बड्स एक्ट के तहत 180 कार्य दिवस में निवेशकों का भुगतान और कंपनी संचालकों के खिलाफ कठोर कार्रवाई और निर्दोष ऐजेंटों की सुरक्षा प्रदान करें।प्रदेश सचिव तप जप संगठन मनोज कुमार के नेतृत्व में डा वीर सिंह, प्रथ्वी सिंह,प्रेम सिह,वेद पाल आर्य, मा अमर सिंह , राजेन्द्र सिंह चौहान, मनोज सिंह चौहान, महिला शक्ति मोर्चा रोमा देवी, अमर सिंह चौहान, अरविंद कुमार इत्यादि अनेकों पीड़ित साथियों ने शुक्रवार के आंदोलन में भाग लिया, तथा मनोज कुमार ने बताया कि ये धरना लगातार जारी रहेगा जब तक राष्ट्रीय संयोजक मदनलाल आजाद का दिशा निर्देश रहेंगा और सभी संगठन के लोगों से शनिवार को होने वाले धरना प्रदर्शन में अधिक से अधिक संख्या में कलेक्ट्रेट पर पहुंचने का आह्वान किया है।

एन वी एन यू फाउंडेशन ने राज्यपाल आनंदीबेन को शिक्षा पुंज नामक पुस्तिका भेंट की

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

गजरौला। शुक्रवार को नया विचार नई ऊर्जा फाउंडेशन की राष्ट्रीय अध्यक्ष अंजलि सिंह ने उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल को एन वी एन यू फाउंडेशन की पुस्तिका,"शिक्षा पुंज" भेंट कर संस्था द्वारा किए जा रहे कार्यो की जानकारी दी । राज्यपाल महोदया ने फाउंडेशन के प्रयासों और उपलब्धियां के बारे में सुना और प्रसन्नता व्यक्त की । पुस्तक भेंट करने वालों में "नया विचार नई ऊर्जा फाउंडेशन" की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ.अंजली सिंह, पूनम श्रीवास्तव, गाजियाबाद की जिलाधिकारी, सुदेश श्रीवास्तव वाईस प्रेजिडेंट कंट्री इन होटल,एडीएम सिटी गाजियाबाद गंभीर सिंह मौजूद रहे । फाउंडेशन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष मुजाहिद चौधरी ने यह जानकारी देते हुए कहा कि फाउंडेशन अपने प्रेरणा स्त्रोत एडीएम सिटी गाजियाबाद गंभीर सिंह की प्रेरणा व अंजलि सिंह के नेतृत्व में फाउंडेशन के पदाधिकारीगण और कार्यकताओं के सहयोग, समर्पण और सेवा से देश को पूर्ण शिक्षित करने के अभियान को साकार करने हेतु निरंतर प्रयासरत है।

बंदरों व कुत्तों को पकड़वाने के लिए अधिशासी अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। शुक्रवार को नगर के निवासियों ने नगर में कुत्तों एवं बंदरों के आतंक से परेशान होकर अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद को एक ज्ञापन दिया जिसमें आवारा कुत्तों एवं बंदरो के आतंक से निजात दिलाने की मांग की, बताते चले कि मोहल्ला खंकर वाला कुआं एवं लालबाग निवासी लोगों ने ज्ञापन के माध्यम से बताया कि आए दिन कुत्तों एवं बंदरों द्वारा बच्चों, बुजुर्गों एवं आने जाने वाले लोगों को काटकर घायल किया जा रहा है, तथा लोग अकेले निकालने से भी कतरा रहे हैं, ज्ञापन के माध्यम से अधिशासी अधिकारी से कस्बा निवासियों ने मांग करते हुए कहा है कि आवारा कुत्तों एवं बंदरों को जल्द से जल्द पकड़वाकर किसी अन्य स्थान पर छुड़वाया जाए, वही इस संबंध में अधिशासी अधिकारी विजय कुमार ने बताया कि संबंधित विभागों की टीम से वार्ता कर सामंजस्य स्थापित कर जल्द ही आवारा बंदरों एवं कुत्तों से शहर वासियों को निजात दिलाई जाएगी, ज्ञापन देने वालों में मुख्य रूप से अजीम आदिल मंसूरी, मोहम्मद कामिल, मोहम्मद आरिफ, इंतजार, मोहम्मद वसीम, मेहरुद्दीन, मुजाहिद, असलम, नदीम, राजकुमार, दिनेश, कलुआ, सोनू आदि सहित दर्जनो नगर वासी शामिल रहे।

पीएनबी मुख्य प्रबंधक पर चीटिंग व गबन का मुकदमा दर्ज

नगीना

बिजनौर थाना कोतवाली में दर्ज हुआ मुकदमा

पीएनबी बैंक के मुख्य प्रबंधक सुनील वर्मा द्वारा एक व्यवसाई के उत्पीड़न करने के मामले में फंस गए। व्यापारी के साथ धोखाधड़ी करते हुए, उससे पांच लाख रुपये लेकर उसके लोन खाते में जमा ना करने के आरोप में बिजनौर थाना कोतवाली ने न्यायालय के आदेश पर धोखाधड़ी व गबन की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज कर मामले में जांच शुरू कर दी।

मुख्य प्रबंधक सुनील वर्मा के खिलाफ दर्ज हुए चिटिंग के केस ने पीएनबी बैंक की शाखा पर एक बार फिर दाग लगा दिया। यह मामला पीएनबी बैंक के उच्च स्तरीय अधिकारियों के दरबार पहुंच गया था। नगीना के मोहल्ला कलालान निवासी व्यवसाई मो. शहजाद ने थाना कोतवाली बिजनौर में दर्ज कराए अपने मुकदमे में कहा कि पीएनबी बैंक के मुख्य प्रबंधक सुनील वर्मा ने गत दो अप्रैल 024 को नगीना आकर उनकी सम्पत्ति को सीलकर दिया। पीड़ित शहजाद ने मुख्य प्रबंधक सुनील वर्मा को आनन-फानन में पांच लाख रूपए दे दिए, जिसकी रसीद उन्होंने नहीं दी। रसीद देने को लेकर सुनील वर्मा टालते रहें। पीड़ित ने जब पांच लाख रूपए की रसीद लेने का दबाव बनाया तो, उन्होंने अपने निजी लाभ के तहत प्रोपर्टी डीलर से हमसाज होकर मुख्य प्रबंधक सुनील ने पीड़ित की करोड़ों रुपए कीमत की सम्पत्ति मात्र 45-50 लाख रुपए कीमत में नीलाम कर दिया। वर्ष 2015 में पीएनबी बैंक ने ही सम्पत्ति की कीमत एक करोड़ 14 लाख रुपये तय कर 85 लाख रुपए की दो सीसी लिमिट बना दी थी। इसमें एक 40 लाख रुपए की सीसी 876617 का पूरा पेमेंट जमाकर नोडियूज ले लिया था। तो वहीं आठ वर्ष बाद उसकी कीमत घटकर कैसे रह सकती है। जबकि आठ वर्ष में तो कीमत दो गुनी होनी चाहिए थी। मुख्य प्रबंधक सुनील वर्मा के इसी खेल के सभी दस्तावेज के साथ पीड़ित ने उच्च न्यायालय इलाहाबाद में अपील दायर कर दी तो हाई कोर्ट ने मामले को गंभीरता से लेते हुए करोड़ों की सम्पत्ति आठ वर्ष बाद कीमत घटाकर 45 से 50 लाख रुपए में कैसे नीलाम की जा सकती है। इसी मामले को संदिग्ध मानते हुए पीड़ित को राहत दी। नीलामी पर रोक लगा दी। सम्पत्ति की कीमत 45 से 50 लाख लगाते हुए 20 प्रतिशत धनराशि जमा कर शेष बकाया छह माह में जमा करने में राहत दे दी थीं। जब पीड़ित शहजाद ने माननीय उच्च न्यायालय के आदेश बैंक में जमा किए तो आरोप है कि सुनील वर्मा ने 32.50 लाख रूपए के स्थान पर एक बार फिर उत्पीडन करते हुए शेष बकाया रकम से बढ़ोतरी करते हुए करीब 58 लाख रूपए की धनराशि बकाया बता दी। मुख्य प्रबंधक सुनील वर्मा हठधर्मिता दिखाते हुए हाईकोर्ट के आदेश को ताख में रखकर उसकी सील की गई। पुलिस ने न्यायालय के आदेश पर मुख्य प्रबंधक सुनील वर्मा के खिलाफ आईपीसी के अन्तर्गत दर्ज कर जांच शुरू कर दी। उधर मुख्य प्रबंधक सुनील वर्मा के खिलाफ चिटिंग, गबन व जान से मारने की धमकी देने की धाराओं में दर्ज।

धामपुर कोतवाली में हथियारों के जखीरे के साथ अभियुक्तगण को पुलिस ने पकड़ा और हथियार को जखीरा भी बरामद किया। पुलिस ने माल बरामद कर जांच शुरू कर दी।

हथियारों के जखीरे के साथ सात दबोचे

धामपुर: धामपुर कोतवाली पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर थाना क्षेत्र के ग्राम अथाई शेख के पास ईट भट्ठा के सामने निर्माणाधीन भवन में सात बदमाशों को अवैध हथियारों के जखीरा तथा चोरी की बाइक के साथ गिरफ्तार करने का दावा किया है। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक किशन अवतार ने प्रेस को जारी एक विज्ञप्ति में जानकारी देते हुए बताया कि मुखबिर की सूचना पर गठित पुलिस टीम में शामिल उपनिरीक्षक पवन सिंह व राजेश कुमार, हेड कांस्टेबिल भूप सिंह, लालमन व राहुल, कांस्टेबिल अजयपाल, अंकित व शराफत अली ने थाना क्षेत्रान्तर्गत ग्राम अथाई शेख चौराहे से आगे ईट भट्ठा के सामने निमार्णाधीन बिल्डिंग में छापेमारी के दौरान अभियुक्तगण सूर्या उर्फ सूर्य प्रताप सिंह पुत्र रणवीर सिंह निवासी ग्राम बिलना थाना नौगावा सादात जनपद अमरोहा, ललित कुमार पुत्र हरवीर सिंह निवासी तगरौला थाना नूरपुर, निवेश चौहान उर्फ नमन पुत्र धीरेन्द्र सिंह निवासी ग्राम फतियाबाद थाना नूरपुर, देव राजपूत उर्फ नोनू पुत्र लोकेन्द्र सिंह निवासी ग्राम फतियाबाद थाना नूरपुर, उमेर जकी पुत्र जकीउद्दीन निवासी मौहल्ला मिलकयान कस्बा व थाना स्योहारा, आकाश यादव पुत्र शिवकुमार यादव निवासी ग्राम कुण्डा थाना नूरपुर, प्रशान्त राजपूत पुत्र ठाकुर सिंह निवासी ग्राम जाफराबाद थाना नूरपुर को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार अभियुक्तों के पास से 01 अदद पिस्टल देशी, 02 अदद तमंचे 315 बोर मय 02 अदद कारतूस मय 02 तमचे 12 बोर व 01 पोनिया तंमचा 12 बोर व 01 बन्दूक देशी 12 बोर मय 06 अदद कारतूस 12 बोर व 01 अदद बाइक चोरी की बरामद की है। पुलिस ने सभी अभियुक्तों के खिलाफ विभिन्न संगीन धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर न्यायालय में पेश किया।

मटकी सजाओ प्रतियोगिता में नीता महेश्वरी तो जूड़ा सजाओ प्रतियोगिता में शर्मिला गुप्ता रही प्रथम

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

अमरोहा। गुरुवार की देर श्याम नगर के एक होटल में इनरव्हील क्लब अमरोहा द्वारा जन्माष्टमी और शिक्षक दिवस पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें क्लब की महिलाओं ने शिक्षक दिवस पर अपने विचार व्यक्त किये। और वही जन्माष्टमी को लेकर प्रतियोगिताएं भी हुई। जिसमें मटकी सजाओ प्रतियोगिता में नीता महेश्वरी ने प्रथम और सीमा जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वही जूड़ा सजाओ प्रतियोगिता में शर्मिला गुप्ता प्रथम तो सीमा जैन द्वितीय स्थान पर रही। इस मौके पर अमरोहा नगर पालिका की अध्यक्षा शशि जैन, चेयरपर्सन प्रिया टंडन, अध्यक्षा मंजू गोयल, सचिव राखी सिंह, स्वाति सिंह, कुमकुम माथुर, शर्मिला गुप्ता, दीपाली जैन, नीता माहेश्वरी, अंजुला अग्रवाल, अंशु गर्ग, डॉक्टर सीमा अग्रवाल और सीमा जैन मौजूद रही।

राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं आरटीआई परिषद के जिला उपाध्यक्ष ने ई0ओ0 को सौंपा पत्र

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। शुक्रवार को राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं आरटीआई परिषद के जिला उपाध्यक्ष विजय पारछा ने एक पत्र के माध्यम से नगर पालिका परिषद के अधिशासी अधिकारी विजय कुमार को नगर पालिका के कुछ संविदा कर्मियों पर काम पर नहीं जाने तथा घर बैठे नगर पालिका से सैलरी लेने का आरोप लगाते हुए उक्त संविदा कर्मियों से काम लेने तथा ऐसे व्यक्ति जो घर बैठे पालिका से सैलरी प्राप्त कर रहा है उसको सैलरी न दिए जाने तथा सेवाएं समाप्त करने का निवेदन किया है, इस संबंध में अधिशासी अधिकारी विजय कुमार ने राष्ट्रीय मानव अधिकार एवं आरटीआई परिषद के जिला उपाध्यक्ष को आश्वासन दिया है कि ऐसे कर्मचारी को चिन्हित कर उनसे काम लिया जाएगा या फिर उनकी सेवाएं समाप्त किए जाने की संतुति की जाएगी ।

सड़क किनारे खेत में खड़े पेड़ को चोरों ने काटा

नहटौर

चोरों द्वारा काटा गया पेड़।

सड़क से 100 मीटर की दूरी पर खेत की डोल पर खड़ा एक सिंबल का विशालकाय पेड़ चोरों ने काट लिया। पीड़ित ने पुलिस को तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की।

नगर के मोहल्ला सादात सहदरी निवासी नोमान जैदी पुत्र गुफरान जैदी का ग्राम कश्मीरी आबू नसीरपुर में खेत है। खेत की डोल पर सिम्बल का पेड़ खड़ा था। जो की बुधवार की रात्री में चोरो द्वारा काट कर गिरा दिया गया। पेड़ बड़ा होने व खेत मे गारा होने के कारण कर पूरा पेड़ नहीं ले जा सके। अंदाज है। एक ट्रैक्टर ट्राली के लगभग लकड़ी भर कर ले गए। बाकी पेड़ मौके पर छोड़ गए। नोमान के खेत मे धान की फसल भी लगी हुई थी। कटा हुआ पेड फसल पर गिरा जिस कारण फसल का भी काफी नुकसान हुआ । पीड़ित ने पुलिस को तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की।

एक सप्ताह में नहटौरक्षेत्र में चौथी चोरी

नहटौर क्षेत्र में चोरों का आतंक बढ़ता ही जा रहा है। एक सप्ताह के अंदर गुली तालाब निवासी दानिश के घर से एक सिलेंडर। मोहल्ला जोशीयाँन नहटौर धामपुर मार्ग में स्थित काली माता के मंदिर का गल्ला तोड़कर हजारों रुपए की चोरी। वही निरंकारी सत्संग भवन से भवन की कोठरी का ताला तोड़कर हजारों रुपए की क्रोकरी की चोरी के बाद।

अब चोरों ने हाई नहटौर धामपुर हाईवे से मात्र 100 मीटर की दूरी पर खेत के अंदर एक विशालकाय पेड़ काटकर चोरी कर लिया। पुलिस अभी तक भी किसी चोरी की घटना का खुलासा नहीं कर पाई है।

हरियाणा

हरियाणा भाजपा में टिकट बंटवारे से नाराज नेताओं ने की बगावत, कई पूर्व विधायकों ने पार्टी छोड़ी या छोड़ने के संकेत दिए

रणजीत सिंह चौटाला ने मंत्री पद छोड़ा, आदित्य चौटाला ने मार्कीटिंग बोर्ड चेयरमैन पद छोड़ा, सावित्री जिंदल, रणजीत चौटाला ने चुनाव लड़ने की घोषणा की, लक्ष्मण नापा ने पार्टी छोड़ी

चंडीगढ़, सितंबर : हरियाणा भाजपा ने 67 उम्मीदवार घोषित करने के तुरंत बाद नाराज नेताओं ने बगावत कर दी है। कई पूर्व विधायकों ने पार्टी छोड़ दी या छोड़ने के संकेत दिए हैं। पार्टी की तरफ से 4 सितंबर की शाम लगभग 8 बजे लिस्ट जारी की। सबसे पहले बाढ़डा के पूर्व विधायक सुखविंद्र मांढी ने भाजपा छोड़ने की घोषणा कर दी। वे किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष पद पर थे। उनके तुरंत बाद उकलाना के भाजपा विधायक शमशेर सिंह गिल ने इस्तीफा दिया। उकलाना से सीमा गैबीपुर ने इस्तीफा दिया। दादरी जिला किसान मोर्चा के अध्यक्ष विकास उर्फ भल्ले ने पार्टी छोड़ी। थानेसर के जयभगवान डीडी ने पार्टी छोड़ने के लिए समर्थकों की बैठक बुलाई। सोनीपत से अमित जैन ने पार्टी छोड़ी। पूर्व मंत्री कविता जैन ने पार्टी को सख्त संकेत दिया और पति राजीव जैन की 38 साल की सेवा को इग्नोर करने का आरोप लगाया। कविता जैन भी पार्टी छोड़ सकती हैं। सोनीपत से संजीव वलेचा ने भी पार्टी छोड़ दी। सफीदों से बचन सिंह आर्य ने नाराजगी जताई और जींद जिले की पांचों सीटों पर भाजपा की हार की घोषणा कर दी। हिसार जिला सचिव पद और पार्टी से

रणजीत सिंह को आधा घंटा पहले शामिल कर दिया था लोकसभा टिकट, अब विधानसभा में टिकट नहीं दी

रणजीत सिंह रानिया से निर्दलीय विधायक बने थे। भाजपा की सिर्फ 40 सीटें आई तो निर्दलीय और जेजेपी विधायकों के साथ मिलकर सरकार बना ली। रणजीत सिंह को कैबिनेट मंत्री बनाया गया। जब मनोहर लाल ने मुख्यमंत्री पद छोड़ा और नायब सिंह सैनी मुख्यमंत्री बने तो रणजीत सिंह को फिर मंत्री बनाया। रणजीत सिंह ने पहले ही कहना शुरू कर दिया था कि वे भाजपा से हिसार लोकसभा चुनाव लड़ना चाहते हैं। सिरसा में रैली के बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी उनके आवास पर गए थे। जब लोकसभा टिकट आवंटित करनी थी तब रणजीत सिंह ने विधायक पद से इस्तीफा दिया, भाजपा में शामिल हुए और आधे घंटे बाद हिसार से भाजपा ने उन्हें उम्मीदवार बना दिया। उनके पक्ष में पार्टी नेताओं ने खूब प्रचार किया मगर हार गए। वे बिना विधायक मंत्री बने रहे। मगर अब भाजपा ने उन्हें रानिया से टिकट नहीं दी तो उन्होंने नाराजगी जताते हुए मंत्री पद छोड़ दिया। अब उन्होंने कहा कि जिसे पार्टी शामिल करने के आधे घंटे बाद लोकसभा कैंडिडेट बनाती है और पांच लाख से ज्यादा मत हासिल करते हैं मगर अब पार्टी ने उन्हें विधानसभा के लिए विचार ही नहीं किया। रणजीत सिंह ने कहा कि वे रानिया से चुनाव लड़ेंगे।

स्वामी दर्शन गिरी ने इस्तीफा दे दिया। रतिया से भाजपा विधायक लक्ष्मण नापा ने पार्टी छोड़ दी। हिसार से ही तरुण जैन ने इस्तीफा दिया और चुनाव लड़ने के संकेत दिए। हिसार से सावित्री जिंदल ने नाराजगी जताई और कहा कि वे आखिरी चुनाव लड़ना चाहती हैं। तोशाम से पूर्व विधायक शशिरंजन परमार टिकट न मिलने से फूट-फूटकर रोए। रणजीत सिंह ने मंत्री पद से इस्तीफा दिया और रानिया से चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी। पानीपत की महिला मोर्चा जिला प्रधान आशू सत्यवान शेरा ने इस्तीफा दे दिया। आदित्य चौटाला ने हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। हरियाणा चुनाव प्रबंधन समिति सदस्य सुनील राव ने पार्टी छोड़ी। जोगीराम सिहाग ने बरवाला क्षेत्र के मतदाताओं का आभार जताया। भाजपा

कर्णदेव कांबोज को मनाने पहुंचे मुख्यमंत्री नायब सैनी

रादौर से पिछली बार चुनाव हारे कर्णदेव कांबोज को मनाने वीरवार शाम को मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी पहुंच गए। कांबोज ने पदों से इस्तीफा दिया था मगर पार्टी नहीं छोड़ी थी। कांबोज भाजपा की पहली सरकार में मंत्री रहे थे मगर दूसरी बार वे हार गए। अब रादौर से शाम सिंह राणा को टिकट दी गई तो उन्होंने ओबीसी मोर्चा से इस्तीफा दे दिया।

हम कर्ण देव कांबोज, लक्ष्मण नापा को मना लेंगे : सैनी

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि पार्टी में कोई बगावत नहीं है। कर्णदेव कांबोज और लक्ष्मण नापा पार्टी के सीनियर लीडर हैं। हम उन्हें मना लेंगे। ने उन्हें टिकट नहीं दी। कालका की पूर्व विधायक लतिका शर्मा नाराज हैं। सुरेश ओड ने भी पार्टी छोड़ दी। भाजपा के ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष कर्णदेव कांबोज ने बगावती सुर दिखाते हुए कहा कि पार्टी ने गद्दारों को टिकट दिया।

यह बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं होगा और भाजपा ने जिसे टिकट दी है, उसे हरवाने का काम करेंगे। बवानी खेड़ा के विधायक और मंत्री बिशंबर वाल्मीकि ने समर्थकों की बैठक बुलाई तो फूट-फूटकर रोए। उन्होंने कहा कि पार्टी ने भ्रष्टाचारी को टिकट दिया है। वाल्मीकि ने कहा कि वे पार्टी तो नहीं छोड़ेंगे क्योंकि वे संगठन के आदमी हैं और पार्टी के फैसले का स्वागत करते हैं। मगर अंतिम फैसला खाप लेगी। मगर कविता जैन भी रोतीं रहीं। वे भी मंत्री रह चुकी हैं। बहादुरगढ़ के पूर्व विधायक नरेश कौशिक ने भी नाराजगी जताई है।

पार्टी ने उनके भाई को उम्मीदवार बनाया है। गुरुग्राम से जीएल शर्मा ने भी नाराजगी जताई है और वे पार्टी छोड़ सकते हैं। पृथला से दीपक डागर ने नाराजगी जताई है और फैसला समर्थकों पर छोड़ दिया है।

उम्मीदवार को आपराधिक पृष्ठभूमि की जानकारी करनी होगी सार्वजनिक : पंकज अग्रवाल

राजनैतिक पाटियों को भी ऐसे उम्मीदवारों की जानकारी अपनी अधिकारिक वैबसाइट पर करनी होगी सार्वजनिक

चंडीगढ़, सितम्बर : हरियाणा के मुख्य निर्वाचन अधिकारी पंकज अग्रवाल ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग के निदेशानुसार हरियाणा विधानसभा का आम चुनाव लड़ रहे उम्मीदवारों व राजनैतिक पाटियों को अपने उम्मीदवारों की आपराधिक पृष्ठभूमि की जानकारी सार्वजनिक करने के साथ इनकी जानकारी अपनी अधिकारिक वैबसाइट पर देनी होगी। पंकज अग्रवाल ने कहा कि आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों व ऐसे उम्मीदवारों को खड़ा करने वाले राजनीतिक दलों को चुनाव अभियान अवधि के दौरान 03 बार टेलीविजन चैनलों और समाचार पत्रों के माध्यम से इस संबंध में जानकारी प्रकाशित करनी होती है। उन्होंने कहा कि उम्मीदवारों व राजनैतिक दलों को एक स्थानीय व एक राष्ट्रीय समाचार पत्र और फेसबुक, ट्विटर (एक्स) सहित राजनीतिक पार्टी के आधिकारिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जानकारी देनी होगी। उन्होंने कहा कि राजनीतिक दलों के लिए यह अनिवार्य है कि वे अपनी वैबसाइट पर आपराधिक मामलों वाले उम्मीदवारों की पूर्ण जानकारी अपलोड करें। साथ ही ऐसे उम्मीदवार के चयन के कारण भी बताने होगें। ऐसे कारण संबंधित उम्मीदवार की योग्यता और उपलब्धियों के संदर्भ में होंगे, न कि केवल चुनावों में ह्यजीतने की क्षमताह्य के संदर्भ में होगें। यह विवरण उम्मीदवार के चयन के 48 घंटे के भीतर प्रकाशित किए जाएं और संबंधित राजनीतिक दल को उम्मीदवार के चयन के 72 घंटे के भीतर निर्वाचन आयोग के समक्ष इन निदेर्शों के अनुपालन की रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी। यदि कोई राजनीतिक दल निर्वाचन आयोग के साथ ऐसी अनुपालन रिपोर्ट प्रस्तुत करने में विफल रहता है, तो निर्वाचन आयोग संबंधित राजनीतिक दल द्वारा इस तरह के गैर-अनुपालन को सर्वोच्च न्यायालय के ध्यान में लाएगा, क्योंकि यह न्यायालय के आदेशों/निदेर्शों की अवमानना है। जिसे भविष्य में बहुत गंभीरता से लिया जाएगा। राजनीतिक दलों को अपनी वेबसाइट के होमपेज पर उम्मीदवारों के आपराधिक पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी प्रकाशित करनी होगी। होमपेज पर एक कैप्शन ह्यआपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारह्य लिखा होना भी जरूरी है। जिससे मतदाता को जानकारी तक पहुँचना आसान हो जाएगा। उन्होंने कहा कि आपराधिक पृष्ठभूमि की जानकारी नामांकन वापसी की तिथि से पहले 4 दिनों के भीतर, अगले 5वें से 8वें दिन के बीच और 9वें दिन से लेकर चुनाव प्रचार के अंतिम दिन तक 3 बार टेलीविजन चैनलों और समाचार पत्रों के माध्यम से प्रकाशित करवानी होगी।

आपराधिक पृष्ठभूमि की जानकरी उम्मीदवार के चयन के 48 घंटे के भीतर करनी होगी प्रकाशित

वीडियोग्राफी से रखी जाएगी चुनाव कार्यो पर नजर

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने जिला निर्वाचन अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि सम्बंधित जिलों में सभी महत्वपूर्ण कार्यों की वीडियोग्राफी की जाएगी। इसके लिए पर्याप्त संख्या में वीडियो और डिजिटल कैमरे तथा कैमरा टीमों की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि विभिन्न कार्यो जैसे कि नामांकन पत्रों का दाखिल करना और उनकी जॉच, चुनाव चिह्नों का आवंटन, इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों की तैयारी और भंडारण, चुनाव प्रचार के दौरान महत्वपूर्ण सार्वजनिक बैठकें, जुलूस आदि, डाक मतपत्रों को भेजने की प्रक्रिया, पहचाने गए संवेदनशील मतदान केंद्रों में मतदान प्रक्रिया, मतदान किए गए ईवीएम और वीवीपैट का भंडारण, मतों की गिनती आदि में विडियोग्राफी की जाएगी। इसके अतिरिक्त, प्रभावी निगरानी और निगरानी के लिए महत्वपूर्ण सीमा चौकियों और स्थिर जांच चौकियों पर सीसीटीवी लगाए जाएं। उन्होंने निर्देश देते हुए कहा कि प्रदेश के सभी मतदान केंद्रों पर शत प्रतिशत वेब कोस्टिंग की व्यवस्था की जाए।

हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद द्वारा हाल ही में चलाया गया था तीन दिवसीय ट्रेनिंग कार्यक्रम

निपुण हरियाणा ट्रेनिंग में नजर आए शिक्षकों के हाल बेहाल : 67 रहे गायब, 11 के 50 फीसदी से कम अंक और 238 ने जमा नहीं कराया निबंध, अब विभाग ने मांगा स्पष्टीकरण

निपुण की ट्रेनिंग के बाद ली गई परीक्षा में 11 प्रतिभागियों के 50 प्रतिशत से कम आएं अंक

कुल 346 प्रतिभागियों में से 238 ने विभाग के पास जमा नहीं कराया निबंध (एसए)

चंडीगढ़, सितंबर : हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद द्वारा निपुण हरियाणा के तहत चलाए गए तीन दिवसीय ट्रेनिंग कार्यक्रम में शिक्षकों के हाल बेहाल नजर आए। प्रशिक्षण कार्यक्रम डाइट लेक्चरर, डाइट सीनियर लेक्चरर, एपीसी, डीएमएस और डीएसएफ के लिए रखा गया था। इस ट्रेनिंग कार्यक्रम से प्रदेशभर के 67 प्रतिभागी गायब रहे। यही नहीं निपुण की ट्रेनिंग के बाद ली गई परीक्षा में 11 प्रतिभागियों के 50 प्रतिशत से कम अंक आए हैं। इसके अलावा ट्रेनिंग कार्यक्रम में शामिल हुए कुल 346 प्रतिभागियों में से 238 ने निबंध ही जमा नहीं कराया है। अब विभाग ने इन सबसे लिखित में स्पष्टीकरण मांगा है। खास बात है कि इस ट्रेनिंग कार्यक्रम में शामिल हुए जिन प्रतिभागियों के हाल बेहाल नजर आए हैं, उन्हें अकसर स्कूलों में निरीक्षण अधिकारी के तौर पर भेजा जाता है। जो स्कूलों में शिक्षकों के शैक्षणिक गतिविधी और विभाग द्वारा चलाए जा रहे अन्य कार्यक्रमों की परख करते हैं।

परीक्षा में 11 प्रतिभागियों के 50 प्रतिशत से कम आएं अंक

निपुण हरियाणा की ट्रेनिंग के बाद प्रतिभागियों की परीक्षा ली गई। जिसमें 11 प्रतिभागी ऐसे हैं, जिनके 50 प्रतिशत से कम अंक आए हैं। इनमें अंबाला का 01, भिवानी का 01, फरीदाबाद का 01, झज्जर का 01, जींद का 01, कैथल का 01, करनाल का 01, महेंद्रगढ़ का 02, नूह मेवात का 01 और सोनीपत का 01 प्रतिभागी शामिल है।

346 में से 238 प्रतिभागियों ने जमा नहीं कराया निबंध

निपुण हरियाणा की तीन दिवसीय ट्रेनिंग कार्यक्रम में शामिल हुए कुल 346 प्रतिभागियों में से 238 ने निबंध ही जमा नहीं कराया। इनमें अंबाला से 14, भिवानी से 04, चरखी दादरी से 10, फरीदाबाद से 06, फतेहाबाद से 09, गुरुग्राम से 13, हिसार से 12, झज्जर से 13, जींद से 09, कैथल से 06, करनाल से 19, कुरुक्षेत्र से 15, महेंद्रगढ़ से 12, नूह मेवात से 06, पलवल से 08, पंचकूला से 22, पानीपत से 09, रेवाड़ी से 05, रोहतक से 15, सिरसा से 13, सोनीपत से 10 और यमुनानगर से 08 प्रतिभागी शामिल हैं।

इन जिलों के प्रतिभागी ट्रेनिंग से रहे गायब

इस तीन दिवसीय ट्रेनिंग कार्यक्रम से कुल 67 प्रतिभागी गायब रहे। इनमें अंबाला से 01, फरीदाबाद से 03, गुरुग्राम से 05, हिसार से 09, झज्जर से 07, जींदद से 05, कैथल से 02, करनाल से 05, कुरुक्षेत्र से 01, महेंद्रगढ़ से 02, नूह मेवात से 02, पलवल से 03, पंचकूला से 05, पानीपत से 01, रेवाड़ी से 01, रोहतक से 07, सिरसा से 04, सोनीपत से 03 और यमुनानगर से 01 प्रतिभागी शामिल हैं।

हरियाणा कांग्रेस नहीं बांट पाई टिकट, लाइन में लगे टिकटार्थी बाट देखते रह गए

कांग्रेस में भी हो सकती है बगावत

कांग्रेस की रणनीति हमेशा रही है कि नामांकन पत्र भरने के दिन या बीच में उम्मीदवार घोषित किए जाएं। दैनिक सवेरा ने यह जानकारी पहले ही प्रकाशित कर दी थी कि टिकट आवंटन नामांकन पत्र शुरू होने के आसपास ही होगा। भाजपा ने अपनी 67 सीटों की सूची जारी कर दी, जिससे कुछ नेताओं ने बगावती सुर दिखाए। मगर अब कांग्रेस में भी बगावत होने की संभावना है। हो सकता है कि इसी डर के कारण कांग्रेस ने टिकट आवंटन नहीं किया हो। अन्यथ जिन सीटों पर नाम तय हो गए हैं, उनकी पहली सूची जारी होने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। इसके अलावा यह भी संभव है कि कांग्रेस नेताओं की गुटबाजी के कारण यह लिस्ट फाइनल नहीं हो पा रही हो।

चंडीगढ़, सितंबर : हरियाणा कांग्रेस 05 सितंबर को भी टिकट नहीं बांट पाई। लाइन में लगे टिकटार्थी बाट देखते रह गए। नामांकन पत्र भरने का काम भी शुरू हो गया है मगर कांग्रेस अभी तक टिकटों का बंटवारा करने में सफल नहीं हो पाई है। हरियाणा प्रभारी दीपक बाबरिया ने कहा था कि 66 सीटों पर नाम तय हो गए हैं और बची 24 सीटों पर नाम तय करने के लिए सब कमेटी बैठक करेगी। इस सब कमेटी की वीरवार को मीटिंग हुई, जिसमें कुमारी सैलजा को भी बुलाया गया था। मीटिंग के बाद कुमारी सैलजा ने कहा कि उनसे पार्टी ने सभी 90 सीटों के लिए नाम मांगे हैं। उनके इस बयान से दीपक बाबरिया के उस बयान पर संशय पैदा हो गया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि 66 सीटों पर केंद्रीय चुनाव समिति ने नाम तय कर दिए हैं। कांग्रेस इंडिया महागठबंधन के तहत आम आदमी पार्टी के साथ भी सीट आवंटन पर बात कर रही है। इससे भी टिकट आवंटन में पेंच फंसा हुआ है।

भाजपा विधायक लक्ष्मण नापा ने हजारों समर्थकों के साथ ज्वाइन की कांग्रेस

विधायक के साथ 22 गांवों के सरपंचों ने भी थामा कांग्रेस का दामन

ब्लॉक समिति चेयरमैन प्रतिनिधि और वाइस चेयरमैन भी कांग्रेस में हुए शामिल

चंडीगढ़, सितंबर : रतिया से बीजेपी विधायक लक्ष्मण नापा ने अपने हजारों समर्थकों के साथ कांग्रेस ज्वाइन कर ली है। पूर्व मुख्यमंत्री व नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा और हरियाणा कांग्रेस अध्यक्ष चौधरी उदयभान के नेतृत्व में उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। इस मौके पर सांसद दीपेंद्र हुड्डा भी विशेष तौर पर मौजूद रहे। लक्ष्मण नापा के साथ हलके के 22 सरपंचों, ब्लॉक समिति चेयरमैन प्रतिनिधि गुरतेज सिंह और वाइस चेयरमैन कुलदीप सिंह मानक ने भी कांग्रेस ज्वाइन की। हुड् और उदयभान ने सभी का पार्टी में स्वागत किया। उन्होंने कहा कि लक्ष्मण नापा और उनके साथियों ने सही समय पर सही फैसला लिया है। उनका यह फैसला बीजेपी को सत्ता से बाहर करने और बड़े बहुमत के साथ कांग्रेस की सरकार बनाने में सहयोगी साबित होगा।

लाल कृष्ण अडवानी के बाद मुरली मनोहर जोशी भी फिर से बने भाजपा के सदस्य

नई दिल्ली, सितंबर : भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने वीरवार को पार्टी के संस्थापक नेताओं में शामिल रहे लाल कृष्ण अडवानी और मुरली मनोहर जोशी की सदस्यता का नवीनीकरण कर, दोनों नेताओं को फिर से पार्टी का सदस्य बनाया। भाजपा अध्यक्ष ने वीरवार दोपहर को पहले लाल कृष्ण अडवानी के आवास पर पहुंचकर, उनकी पार्टी सदस्यता का नवीनीकरण किया। इसके बाद नड्डा ने शाम को मुरली मनोहर जोशी के आवास जाकर उन्हें फिर से पार्टी का सदस्य बनाया। मुरली मनोहर जोशी को फिर से पार्टी का सदस्य बनाने की तस्वीरों को शेयर करते हुए जेपी नड्डा ने एक्स पोस्ट पर लिखा, 'आज भाजपा के वरिष्ठ नेता और हमारे मार्गदर्शक मुरली मनोहर जोशी से उनके आवास पर भेंट की और 'भाजपा-राष्ट्रीय सदस्यता अभियान' के अंतर्गत सदस्यता नवीनीकरण की प्रति दी।

अमरीका के हाई स्कूल...

पहचान छात्र मेसन शरमरहॉर्न (14) और क्रिस्टियन एंगलो (14) तथा प्रशिक्षक रिचर्ड एस्पिवॉल (39) और क्रस्टिना इरीमी (53) के रूप में हुई है। बैरो काऊंटी के शेरिफ जुड स्मिथ ने कहा कि घटना में 8 विद्यार्थियों और एक शिक्षक समेत 9 अन्य लोग घायल भी हुए हैं जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। सभी के जल्द ठीक होने की उम्मीद है। छात्र (अब 14 वर्ष) को वीरवार को क्षेत्रीय युवा सुधार गृह भेजा गया है।

उसकी एक सहपाठी लीला सायरथ ने बताया कि वह (आरोपी) बीजगणित की कक्षा में फिर से आना चाहता था और स्कूल के उसके सहपाठियों ने जब उसके लिए दरवाजा नहीं खोला तो उसने छात्रों की ओर राइफल तान दी। सायरथ ने बताया कि कुछ छात्र बंद दरवाजे को खोलने गए लेकिन वे दरवाजा खोलने के बजाय लौट आए। उसने कहा, 'मुझे लगता है कि उन्होंने कुछ देखा और इसी कारण उन्होंने दरवाजा नहीं खोला। जब मैंने खिड़की से झांककर देखा तो वह (आरोपी) मुड़ चुका था और गोलियां चलाने लगा।' उसने बताया कि गणित के छात्र जमीन पर लेट गए और रेंगकर सुरक्षित जगह तलाशने लगे।

होजी ने बताया कि गोली चलने की सूचना मिलने के कुछ ही मिनटों के भीतर स्कूल के 2 अधिकारियों ने हमलावर छात्र को रोकने का प्रयास किया। उन्होंने बताया कि संदिग्ध एक स्कूली छात्र है। उसने तुरंत आत्मसमर्पण कर दिया और उसे हिरासत में ले लिया गया है। आरोपी छात्र पर वयस्क के समान हत्या का मामला दर्ज किया गया है।

भारत और सिंगापुर...

रणनीतिक साझेदारी' के स्तर तक पहुंचाने का फैसला किया। इससे भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति को भी बढ़ावा मिलेगा।' आर्थिक संबंधों में मजबूत प्रगति पर गौर करते हुए दोनों नेताओं ने दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश प्रवाह को और बढ़ाने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारतीय अर्थव्यवस्था में लगभग 160 अरब अमरीकी डालर के निवेश के साथ सिंगापुर भारत का एक प्रमुख आर्थिक साझेदार है। उन्होंने कहा कि भारत में तेज और सतत विकास ने सिंगापुर की संस्थाओं के लिए निवेश के अपार अवसर खोले हैं। उन्होंने सुरक्षा, समुद्री क्षेत्र में जागरूकता, शिक्षा, एआई, फिनटेक, नई प्रौद्योगिकी क्षेत्र, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा ज्ञान साझेदारी के क्षेत्रों में मौजूदा सहयोग की भी समीक्षा की। दोनों नेताओं ने देशों के बीच आर्थिक और लोगों के बीच आपसी संबंधों को बढ़ाने के लिए संपर्क सुविधा को मजबूत करने का आह्वान किया। मोदी और वोंग ने 'हरित गलियारा' परियोजनाओं में तेजी लाने का भी आह्वान किया। दोनों नेताओं ने अगस्त 2024 में सिंगापुर में आयोजित दूसरे भारत-सिंगापुर मंत्रिस्तरीय गोलमेज सम्मेलन के परिणामों पर चर्चा की।

बयान में कहा गया, 'दोनों नेताओं ने इस बात पर गौर किया कि मंत्रिस्तरीय गोलमेज सम्मेलन एक अनूठी व्यवस्था है। उन्होंने द्विपक्षीय सहयोग के लिए एक नए एजेंडे पर विचार-विमर्श करने और उसकी पहचान करने की दिशा में दोनों पक्षों के वरिष्ठ मंत्रियों द्वारा किए गए कार्य की सराहना की। नेताओं ने मंत्रिस्तरीय गोलमेज सम्मेलन के दौरान सहयोग के स्तंभों के रूप में पहचाने गए उन्नत विनिर्माण, संपर्क सुविधा, डिजीटलीकरण, स्वास्थ्य सेवा एवं चिकित्सा, कौशल विकास और स्थिरता के क्षेत्रों में त्वरित कदम उठाए जाने का आह्वान किया।' प्रधानमंत्री ने वोंग को भारत आने का निमंत्रण दिया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया।

भाजपा जम्मू-कश्मीर में...

रैना के साथ आगामी विधानसभा चुनावों के लिए नामांकन दाखिल करने पहुंचे। उन्होंने रैना के चुनावों में बड़ी जीत पर भी भरोसा जताया।

लोकतंत्र के पर्व में अपने...

कहा कि हरियाणा के मतदाताओं ने मन बनाया है कि हरियाणा में तीसरी बार भाजपा की सरकार बनेगी। ज्योतिसर की भूमि पर उन्होने वट वृक्ष की पूजा कर आशीर्वाद लिया है। जल्द ही दूसरी लिस्ट भी जारी हो जाएगी। नायब सैनी ने कहा कि हरियाणा प्रदेश के विकास में भाजपा के सभी कार्यकर्ता मिल जुलकर सरकार बनाने का काम करेंगे। नायब सैनी ने कहा कि कांग्रेस भ्रष्टाचार में लिप्त है और ऐसी पार्टी से समझौता कर लिया है, जो भ्रष्टाचार में संलिप्त है। कांग्रेस ने झूठ बोलकर हिमाचल में सत्ता हासिल की। नायब सैनी ने कहा कि कांग्रेस किसानों, महिलाओं, सैनिकों व गरीबों के नाम पर राजनीति करती है और सबका शोषण करती है। नायब सैनी ने कहा कि लाडवा में विकास की कमी नही आने दी जाएगी। नायब सैनी ने कहा कि कांग्रेस के शासन में भ्रष्टाचार गति से काम करता है। कांग्रेस कमीशन मोड़ में काम करती है भाजपा मिशन मोड़ में काम करती है।

भयंकर बेरोजगारी के...

हरियाणा में कॉंग्रेस सरकार के समय 2013-14 में बेरोजगारी दर सिर्फ 2.9% थी जो बीजेपी सरकार के दौरान 9.0% पहुंच गई है। प्रदेश के सरकारी विभागों में 2 लाख से ज्यादा पद खाली पड़े हुए हैं। लेकिन उनपर सरकार ने भर्तियां तक नहीं की। ऊपर से निजी निवेश भी पूरी तरह प्रदेश में आना बंद हो गया है। जबकि 2014 से पहले हरियाणा प्रति व्यक्ति निवेश के मामले में देश का नंबर वन राज्य था। भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि आज हरियाणा के युवा रोजी-रोटी की तलाश में या तो प्रदेश छोड़ रहे हैं या देश ही छोड़कर बाहर जा रहे हैं। कांग्रेस सरकार के समय नौकरियों की तैयारियों के लिए हरेक गली-मोहल्ले में कोचिंग सेंटर खुलते थे, लेकिन आज गली-गली में इमिग्रेशन वालों के ऑफिस खुल रहे हैं। हुड्डा ने कहा कि बेरोजगारी के चलते प्रदेश में नशा और अपराध भी बेकाबू हो गया है। कांग्रेस सरकार बनने पर बेकाबू हो चुकी बेरोजगारी, अपराध और नशे पर नकेल कसी जाएगी।

शिमला में अवैध मस्जिद...

कहा कि संजौली में लगातार चोरी और लव जिहाद के मामलों में तेजी देखने को मिल रही है। महिलाओं का चलना तक दूभर हो चुका है, लेकिन प्रशासन का रवैया उदासीन है। उन्होंने कहा, मस्जिद निर्माण अवैध तरीके से कराया गया। पहले एक मंजिल बना, इसके बाद दूसरी, इसके बाद तीसरी, इस तरह से पांच मंजिल बना ली गई, आखिर कैसे? मैं समझता हूं कि यह स्थिति देश और प्रदेश के लिए खतरनाक है। मेरा प्रशासन से सवाल है कि अब तक पानी, बिजली क्यों नहीं काटा गया? ऐसा निर्माण तभी संभव होता है, जब प्रशासन से सहयोग मिले। अनिरुद्ध के आरोप पर एमआईएम नेता असदुद्दीन ओवैसी ने कहा, हिमाचल में भाजपा की सरकार है या कांग्रेस की? ये क्या हिमाचल की मोहब्बत की दुकान में नफरत ही नफरत? इसका जवाब देते हुए अनिरुद्ध सिंह ने कहा कि हिमाचल में सभी तबकों में मोहब्बत बनी हुई है और ओवैसी के बारे में सब लोग जानते हैं कि वह भाजपा की बी टीम हैं।

हिमाचल के पूर्व सीएम जयराम ठाकुर ने अवैध मस्जिद निर्माण को लेकर प्रशासन से इसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की। इस मुद्दे पर राज्य के कैबिनेट मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने कहा, मुझे लगता है कि यह पूरा मामला संवेदनशील है। हमें सावधानीपूर्वक कदम उठाना होगा। कानून न्यायपूर्ण तरीके से अपना काम करे। हम नहीं चाहते हैं कि धर्म को लेकर किसी भी प्रकार की राजनीति हो।

अवैध मस्जिद का मामला गत शुक्रवार को माल्याण में हिंदू और मुस्लिम के बीच हुए विवाद के बाद सामने आया। स्थानीय दुकानदार यशपाल सिंह ने एक मुस्लिम शख्स पर हमला कर दिया था। उसके सिर और पैर पर गंभीर चोटें आई। सिर पर 14 टांके लगे। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने हमलावर के खिलाफ हत्या के प्रयास के संबंध में मामला दर्ज करने की मांग की है।

आबकारी नीति मामला...

सवाल उठाते हुए सीबीआई ने शीर्ष कोर्ट से कहा कि उन्हें कथित आबकारी नीति घोटाले से जुड़े भ्रष्टाचार के मामले में जमानत के लिए पहले निचली कोर्ट का दरवाजा खटखटाना चाहिए था।

केंद्रीय एजेंसी की ओर से पेश एएसजी राजू ने शीर्ष कोर्ट की पीठ के समक्ष कहा कि धनशोधन के मामले में भी केजरीवाल की याचिका को शीर्ष कोर्ट ने निचली कोर्ट को वापस भेज दिया था। इस याचिका में केजरीवाल ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा की गई अपनी गिरफ्तारी को चुनौती दी थी।

राजू ने कहा, 'उन्होंने सत्र कोर्ट में जाए बिना सीधे दिल्ली हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 439 के तहत, दोनों का समवर्ती क्षेत्राधिकार है। मेरी प्रारंभिक आपत्ति यह है कि उन्हें पहले निचली कोर्ट जाना चाहिए।' विधि अधिकारी ने कहा कि सीबीआई ने सीआरपीसी की धारा 41ए के तहत केजरीवाल को नोटिस जारी नहीं किया क्योंकि वह पहले से ही न्यायिक हिरासत में थे।

भारत के अनुरोध पर...

जाना चाहिए। सूद ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय कानून प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा वांछित अपराधियों और भगौड़ों के संबंध में इंटरपोल द्वारा 100 से अधिक रैड नोटिस जारी किए गए, जो किसी एक साल में अब तक की सबसे अधिक संख्या है। इंटरपोल रैड नोटिस गिरफ्तारी वारंट नहीं, बल्कि दुनिया भर के कानून प्रवर्तन एजेंसियों से अनुरोध है कि वे प्रत्यर्पण, आत्मसमर्पण या इसी तरह की कानूनी कार्रवाई के लिए वांछित व्यक्ति का पता लगाएं और अस्थायी रूप से गिरफ्तार करें।

आरजी कर केस : पीड़िता...

हैं, फिर भी राज्य पुलिस द्वारा इस समस्या को रोकने के लिए पर्याप्त पहल नहीं की जा रही है। पिछले महीने आरजी कर मैडीकल कालेज एवं अस्पताल में हुए बलात्कार और हत्या मामले की सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने भी सभी सोशल मीडिया प्लेटफार्म से पीड़िता का नाम, फोटो और वीडियो हटाने का निर्देश दिया था।

राहुल गांधी के खिलाफ मुकद्दमे में वादी नहीं हुए पेश, अगली सुनवाई 19 को

सुलतानपुर, सितंबर : लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी से जुड़े मानहानि मामले में सुलतानपुर के सांसद/विधायक अदालत में साक्ष्य के आधार पर 5 सितंबर को सुनवाई होनी थी, लेकिन शिकायतकर्त्ता स्वास्थ्य ठीक न होने का हवाला देकर अदालत में गवाही देने नहीं पहुंचे। विजय मिश्रा के अधिवक्ता संतोष कुमार पाण्डे ने बताया कि वादी विजय मिश्रा का स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण वीरवार को वह अदालत में उपस्थित नहीं हुए। उनके वकील ने साक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए अदालत में प्रार्थना पत्र देकर समय मांगा, जिसे स्वीकार करते हुए अदालत ने अगली सुनवाई के लिए 19 सितंबर की तारीख तय की है। इस तारीख को वादी को अधिवक्ता के माध्यम से अदालत में साक्ष्य प्रस्तुत करना होगा। ज्ञात हो कि कर्नाटक विधानसभा चुनाव के दौरान 2018 में राहुल गांधी द्वारा गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी करने का आरोप है। इसको लेकर अगस्त 2018 में जिले के भाजपा नेता विजय मिश्रा ने अदालत में मुकद्दमा दर्ज कराया था। तब से यह मामला अदालत में चल रहा है। भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान 20 फरवरी 2024 में अदालत में राहुल गांधी ने पहुंचकर आत्मसमर्पण किया था।

माले ने हक दो - वादा निभाओ अभियान को धारदार बनाने को लेकर की बैठक।

72 हजार रु. से नीचे के आय प्रमाण पत्र देने में आना कानी कर रहे हैं अंचल अधिकारी - सुनील कुमार राव

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क) बेतिया। सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण के उपरांत सरकार द्वारा घोषित 2 लाख रु. की सहायता राशि के लिए 72 हजार रु. से नीचे के आय प्रमाण पत्र, भूमिहीनों के लिए 5 डिसमिल आवासीय जमीन और पक्का मकान के सवाल पर भाकपा-माले द्वारा चलाए जा रहे हक दो-वादा निभाओ अभियान को जनता का जबरदस्त जनसमर्थन मिल रहा है.72 हजार रु. से नीचे आय प्रमाण पत्र बनाने में अंचल कार्यालयों द्वारा आनाकानी किया जा रहा है। पाच पाच डिसमील जमीन देने के मामले में भी अंचल प्रशासन उदासिन है। इसको लेकर भाकपा माले 24 सितम्बर को नौतन प्रखंड सह अंचल मुख्यालय पर विशाल प्रदर्शन करेगा। उक्त बातें माले माले नेता सुनील कुमार राव ने आज नौतन प्रखंड के बनकटवा में

आयोजित कनवेंशन में कहा । माले नेता सुरेंद्र चौधरी ने कहा कि भूमि सर्वेक्षण में गरीबों, आदिवासियों और अन्य वंचित वर्गों के भूमि अधिकारों पर समुचित रूप से ध्यान देने की मांग करती है जिसकी उपेक्षा सर्वे में की जा रही है. बरसो बरस से बसे गरीबों को कागज का बहाना बनाकर उनके अधिकार को अवैध घोषित कर दिया जा रहा है. यह गरीबों, किसानों व वंचितों की हकमारी है.अतः माले की मांग है कि भूमि सर्वेक्षण की प्रक्रिया को अधिक न्यायपूर्ण, पारदर्शी और समावेशी बनाने तथा गरीबों-आदिवासियों के हितों की रक्षा के लिए सबसे पहले सर्वदलीय बैठक बुलाई जाए. कनवेंशन में गुलाबों देवी, रवींद्र राम, रुदल राम, रामदेव प्रसाद, प्रभावती देवी, संजय राम आदि मौजूद थे।

फोरेंसिक एक्सपर्ट, सारण को प्रशस्ति - पत्र देकर किया गया सम्मानित

नए कानून के तहत तिहरे हत्याकांड में दोषी दोनो अभियुक्तों को ससमय गिरफ्तारी करने, विधिवत अनुसंधान पूर्ण करने उपरांत माननीय न्यायालय से सजा दिलवाने में सहयोग हेतु पुलिस महानिदेशक बिहार श्री आलोक राज भा0पु0से0 के द्वारा डॉ. कुमार आशीष भा0पु0से0 पुलिस अधीक्षक सारण, श्री राजकुमार अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सदर-2 सारण, श्री सुरेंद्रनाथ सिंह लोक अभियोजक सारण, पुलिस निरीक्षक राकेश कुमार सिंह प्रभारी अभियोजन शाखा, पुलिस अवर निरीक्षक रविन्द्र कुमार रसुलपुर थाना और सुश्री रत्ना राभा फोरेंसिक एक्सपर्ट, सारण को प्रशस्ति - पत्र देकर किया गया सम्मानित।

आपदा राहत के मामलों का एक माह में करें निपटारा, लंबित मामलों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा - डीएम

डीएम ने जिला आपदा प्रबंधन में लंबित मामलों की समीक्षा की। आपदा प्रबंधन विभाग में वर्तमान में पुराने व नये कुल 155 मामले समीक्षाधीन हैं। निम्नलिखित मानदंडों के तहत आपदा राहत के मामलों में सरकार द्वारा राहत प्रदान की जाती है- सड़क दुर्घटना, डूबना, सांप के काटने से जहर, बाढ़, आगजनी और तूफान। इन सभी वज्रपात दुर्घटनाओं का बिना देरी किए 24 घंटे के अंदर मुआवजा वितरित किया जाएगा, ऐसा डीएम ने निर्देश दिया। बाकी मामलों के लिए डीएम ने

विशेष दावा-पत्र आयोजित करने के निर्देश दिए हैं, जहां लोग साक्ष्य के साथ आकर मामले का निपटारा कर सकेंगे। यदि लोगों के पास सबूत नहीं हैं या विभाग पुराना मामला पेश करने में असमर्थ है, तो राहत प्रदान करने के लिए उस दिन के समाचार पत्रों के लेखों को सबूत के रूप में उद्धृत किया जा सकता है। डीएम ने निर्देश दिया कि प्रखंड, पुलिस या सिविल सर्जन किसी भी स्तर पर अनावश्यक देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। मामलों के निपटारे के लिए सितम्बर माह को लक्ष्य बनाकर, अंत में ऐसे लाभार्थियों को उनके मामले के निपटारे के बाद राहत प्रदान की जा सकती है। इस प्रक्रिया में कोई देरी नहीं होनी चाहिए, इसे अधिक सहानुभूतिपूर्वक लिया जाना चाहिए, डीएम ने निर्देश दिया।

सलाखों के पीछे भेजे गए जिला अधिवक्ता संघ के पूर्व महासचिव

- सीजेएम का फर्जी आदेश बनाकर मुल्जिम को रिहा कराए जाने का मामला
- आगामी 9 सितंबर को होगी मामले की सुनवाई

■ बांदा

लगभग तीन-चार माह पूर्व सीजेएम की अदालत में सीजेएम का फर्जी कूटरचित आदेश बनाकर मुल्जिम को जमानत पर रिहा कराने के मामले में पूर्व सचिव अधिवक्ता संघ गुरुवार को पुलिस कस्टडी में 14 दिन की रिमांड अवधि में जेल भेज दिया गया। जमानत की अर्जी पर सुनवाई 9 को होगी। अभियोजन अधिकारी ने बताया कि पूर्व सचिव सत्यदेव त्रिपाठी जिला अधिवक्ता संघ के विरुद्ध सीजेएम के पेशकार मुन्ना बाबू द्वारा कोतवाली नगर में सीजेएम का फर्जी व कूटरचित आदेश बनाकर मुल्जिम को जमानत पर रिहा कराए जाने के मामले में जून माह में रिपोर्ट दर्ज करायी थी। इस मामले की जांच की गयी। तभी सच्चाई का पता चला। इस पर पुलिस ने विवेचना के दौरान पूर्व सचिव सत्यदेव त्रिपाठी को पांच दिन पूर्व कोतवाली नगर की पुलिस ने हिरासत में लेकर थाना ले गयी लेकिन अधिवक्ताओं व सांसद, विधायक के दबाव के चलते पुलिस को छो?ना प?ा। पूर्व सचिव इस मामले का स्थगन आदेश लाने के लिए उच्च न्यायालय प्रयागराज गया था। सुराग लगने पर पुलिस ने प्रयागराज में गिरफ्तार कर लिया। बुधवार को सीजेएम की अदालत में पेश किया गया। वहां पर जमानत अर्जी डाली गयी। सीजेएम की अदालत ने जमानत प्रार्थनापत्र ट्रांसफर कर दिया। जमानत की सुनवाई तृतीय सिविल जज जूनियर डिवीजन की अदालत में हुयी। जिसे मजिस्ट्रेट ने खारिज कर दिया। पूर्व सचिव के अधिवक्ता द्वारा जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत में जमानत अर्जी डाली गयी। जिला जज ने उक्त जमानत प्रार्थनापत्र प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश चंद्रपाल द्वितीय की अदालत में सुनवाई हेतु ट्रांसफर किया।

संघ के अध्यक्ष अशोक दीक्षित, सचिव रामप्रकाश शिवहरे, पूर्व अध्यक्ष एजाज अहमद, जीतू त्रिपाठी आदि सैकड़ों अधिवक्ता प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश की अदालत में जमानत सुनवाई को गए। बिना सुनवाई किए बगैर 9 सितंबर को तिथि नियत की गयी। जमानत न होने पर पूर्व सचिव को भारी पुलिस बल के साथ जेल भेज दिया गया।

एक बूथ पर दो सैकड़ा सदस्य जोड़ने का लक्ष्य : देवेश

■ बांदा

भाजपा की ओर से चलाए जा रहे सदस्यता अभियान के मौके पर गुरुवार को प्रदेश उपाध्यक्ष देवेश कोरी ने भाजपा कार्यालय में मीडिया से बात की। उन्होंने सदरूता अभियान की महत्वपूर्ण जानकारियां दीं। सदस्यता कार्ड भी लांच किया गया।

भाजपा 2014 और 19 की तरह 2024 में भी देश भर में अपना सदस्यता अभियान चला रही है जिसकी शुरुआत 2 सितंबर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अमित शाह और जेपी नड्डा के सदस्यता ग्रहण करने के बाद से शुरू हो चुकी है। गुरुवार को जिला भाजपा कार्यालय में भाजपा जिला अध्यक्ष संजय सिंह की अध्यक्षता तथा जिला मीडिया प्रभारी आनन्द स्वरूप द्विवेदी के संयोजकत्व में आयोजित पत्रकार वार्ता में प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष देवेश कोरी ने कहा कि प्रदेश में भाजपा ने कहा कि हर बूथ पर 200 सदस्य जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है और जिले से भी इसकी शुरुआत कर दी गई। उन्होंने कहा कि प्रति बूथ 200 सदस्य भाजपा के बनाए जाएंगे इसके लिए भाजपा के सभी कार्यकर्ता कार्य कर रहे हैं।उन्होंने कहा कि साल 2014 में जब सदस्यता अभियान शुरू हुआ था उस समय देशभर 11 करोड़ नए सदस्य बने थे। 2019 में 18 करो? और अब 2024 में भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कार्य किया जा रहा है। इसके लिए पार्टी की ओर से एक नंबर जारी किया गया

प्रेस वार्ता को संबोधित करते प्रदेश उपाध्यक्ष देवेश कोरी, साथ में जिलाध्यक्ष और सदर विधायक

है जिस पर कॉल करके व्यक्ति लिंक प्राप्त करके अपनी आवश्यक जानकारी दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा का लक्ष्य है कि हर कोने हर वर्ग हर समुदाय से सदस्य बने।2015 से 2022 तक उत्तर प्रदेश में कुल 3.03 करोड़ लोग भाजपा के सदस्य बने। जिसमें 1.83 करोड़ सदस्यों का वेरीफिकेशन भी किया गया था। प्रदेश में कुल 1.12 लाख कार्यकर्ता सक्रिय सदस्य बने थे। जो भाजपा के प्रदेश से लेकर बूथ तक पदाधिकारी वर्ग में शामिल रहे। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने कानून का राज स्थापित करने के लिए जो प्रयास किया है, उसकी प्रशंसा अपने देश के साथ ही पूरे विश्व में भी हो रही है।प्रदेश के सभी 162012 बूथों पर बूथ समितियों को सदस्यता का प्रशिक्षण दिया गया है। भाजपा सदस्यता अभियान का प्रथम चरण 2 सितम्बर से 25 सितम्बर 2024 तक चलेगा, द्वितीय चरण 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2024 तक चलेगा। जबकि 18 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक सक्रिय सदस्यता अभियान चलाया जाएगा। प्रत्येक रविवार को अटल सदस्यता पर्व मनाया जायेगा। क्योंकि यह वर्ष मा. अटल जी का शताब्दी वर्ष है। इस दिन सदस्यता अभियान में अति विशिष्ट लोगोंयथा चिकित्सक, अभियंता वर्ग, प्रोफेशनल कार्य करने वाले, सी ए, शिक्षक, साहित्यकार,नाट्यकारो, कला वर्ग के विशिष्ट लोगों महिला, युवा, किसान, प्रबुद्ध वर्ग, व्यापारी, खिलाड़ियों, सहकारिता समूहों , स्वयंसेवी संस्थाओं व स्वयंसहायता समूहों के पास जाकर सदस्य बनाएंगे और उनका सदस्यता कार्ड सोशल मीडिया में प्रदर्शित करेंगे। कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक को सदर विधायक प्रकाश द्विवेदी, सदस्यता अभियान के जिला प्रभारी संतोष गुप्ता, पूर्व जिला अध्यक्ष बालमुकुंद शुक्ला ने भी सम्बोधित किया। जबकि संचालन जिला उपाध्यक्ष ममता मिश्रा द्वारा किया गया।

इस मौके पर पूर्व विधायक राजकरण कबीर, जिला पंचायत अध्यक्ष सुनील पटेल, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष जगराम सिंह, पूर्व जिला अध्यक्ष लवलेश सिंह, चेयरमैन मालती गुप्ता बासू, प्रांतीय परिषद सदस्य बलराम सिंह,ब्लाक प्रमुख स्वर्ण सिंह सोनू, रावेंद्र गर्ग, रमाकांत पटेल और मनफूल पटेल, ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि महेश निषाद तथा अजय प्रताप सिंह, जिला पंचायत सदस्य भरत सिंह, जिला उपाध्यक्ष मनोज पुरवार, धर्मेन्द्र त्रिपाठी, जागृति वर्मा, उत्तम सक्सेना, जिला मंत्री दिनेश यादव पंकज रैकवार, राजर्षी शुक्ला, देवेन्द्र भदौरिया, जिला मीडिया प्रभारी आनन्द स्वरूप द्विवेदी, श्याम सिंह एड., हिमांशु सिंह,सोशल मीडिया जिला संयोजक निखिल सक्सेना, आई टी जिला संयोजक दीपक राजपूत, पूर्व ब्लाक प्रमुख अमर सिंह यादव, महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष वंदना गुप्ता, पूर्व चेयरमैन राजकुमार राज, अशोक कुमार गुप्ता, सुमन शर्मा, अभिलाषा मिश्रा, मंजू सिंह, दिलीप तिवारी, इंद्रेश द्विवेदी,धीरेन्द्र सिंह गौतम, सुरेश तिवारी, धनंजय करवरिया, राममिलन तिवारी, नरेश शुक्ला, शिवदत्त तिवारी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

कांग्रेसियों ने गांव पहुंचकर मृतक के परिजनों को दी संत्वना

जिलाध्यक्ष ने हर संभव मदद का मृतक के माता पिता को दिया आश्वासन

■ महोबा

ग्राम करहराकला में एक ग्रामीण के तीन दिन गायब होने के बाद उसका शव बरामद होने के उसके परिजनों का बुरा हाल है। परिजनों को संत्वना देने के लिए जिला कांग्रेस कमेटी जिलाध्यक्ष तुलसीदास लोधी कांगेसियों के साथ गांव पहुंचे और मृतक के परिजनों से मिलकर उनको ढांढस बंधाई साथ ही हर संभव मदद करने का आश्वासन भी दिया।

जनपद महोबा के ग्राम करहरा कला निवासी शंकर अहिरवार पुत्र गनपत अहिरवार (25) पल्लेदारी का काम करते हुए परिवार का भरण पोषण करता था।

रविवार को ग्राम के एक ट्रक ड्राइवर के साथ कुछ पल्लेदारों के साथ वह ट्रक पर सरकारी सस्ते राशन की दुकान का गेहूं चावल व अन्य खाद्यान्न की पल्लेदारी करने गया था, लेकिन उसके बाद युवक घर वापस नहीं आया। परिजनों ने उसकी दो दिन तक खोजबीन करते रहे और 3 सितंबर को ग्राम पचपेहरा के एक हार में शंकर अहिरवार मृत अवस्था में मिला, जिससे उसके परिजन पूरी तरह टूट गए।

ग्रामीण की मौत पर कांग्रेस जिलाध्यक्ष अपने कांग्रेसी साथियों के साथ मृतक के ग्राम करहरा कला उनके परिजनों से मिलने पहुंच गए और मृतक के माता-पिता से मिलकर उनका हालचाल जाना और हर संभव मदद करने का भरोसा दिया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष के अलावा जिला उपाध्यक्ष संतोष कुमार धुरिया, ब्लॉक अध्यक्ष चरखारी नंदराम मुखिया, कांग्रेस पिछड़ा वर्ग जिलाध्यक्ष मानसिंह राजपूत, निशक्तजन प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष चौधरी अरविंद कुमार, जिला सचिव मंगल सिंह राजपूत, समाजसेवी कार्यकर्ता जयपाल सिंह राजपूत सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्यमंत्री ने वीडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से किया नव निर्मित स्वास्थ्य संस्थानों का उद्घाटन।

डीएम एवं जिला स्वास्थ्य समिति के अधिकारी भी वीडियो कान्फ्रेसिंग में रहे शामिल

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क) मोतिहारी। नीतीश कुमार मुख्यमंत्री एवं जे०पी० नड्डा मंत्री स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा संयुक्त रूप से जिले के नव निर्मित स्वास्थ्य संस्थानों का वीडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से उद्घाटन हुआ। इस दौरान जिला मुख्यालय, स्थित समाहरणालय कक्ष में डीएम सौरभ जोरवाल, सिविल सर्जन डॉ विनोद कुमार सिँह, डीपीएम ठाकुर विश्वमोहन, डीपीसी भारत भूषण एवं जिला स्वास्थ्य समिति के अन्य अधिकारी वीडियो कान्फ्रेसिंग के दौरान उपस्थित रहे। मौके पर सिविल सर्जन डॉ विनोद कुमार सिँह ने बताया कि सीएचसी पिपराकोठी प्रखंड के सीएचसी, पकड़ीदयाल मे चैता एचडब्लूसी, कोटवा जसौली मे एचडब्लूसी, अरेराज मलाही मे एपीएचसी, तुरकौलिया बहुरूपया एपीएचसी, बनकटवा, मठिया भोपत एपीएचसी, चकिया में दीदी की रसोई पकड़ीदयाल में दीदी की रसोई अरेराज अनुमण्डलीय अस्पताल मे दीदी की रसोई का उद्घाटन स्थानीय विधायक/विधान पार्षद द्वारा किया गया है। सीएस डॉ विनोद कुमार सिँह ने कहा कि आज शुक्रवार को जिला के तैयार सभी हेल्थ एंड वेलनेस सेंटरों को आमलोगों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया गया। जहाँ लोगों को मातृत्व व शिशु स्वास्थ्य की जांच, प्रसव पूर्व जांच, प्रसव कराने तथा इसके लिए आशा तथा एएनएम

द्वारा पूर्व से तैयारियों संबंधित सुविधाएं, परिवार नियोजन सुविधाएं, संक्रामक तथा गैर संक्रामक रोग प्रबंधन व अन्य स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध होंगी। रक्त, बीपी, शूगर व अन्य प्रकार की जांच तथा दवा आदि की व्यवस्था की जाएगी। सामान्य बीमारियों के लिए ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को भटकना नहीं होगा। प्राप्त जानकारी के अनुसार सीएचसी पिपराकोठी का उद्घाटन मोतिहारी विधायक प्रमोद कुमार ने, अनुमण्डलीय अस्पताल चकिया मे जीविका दीदी की रसोई का उद्घाटन श्यामबाबू यादव, अनुमण्डलीय अस्पताल अरेराज मे जीविका दीदी की रसोई का उद्घाटन सुनील मणि तिवारी, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बनकटवा का उद्घाटन नरकटिया विधायक शमीम अहमद ने किया।

संक्षिप्त समाचार

तमंचा कारतूस के साथ दो आरोपी बंदी

पनवाड़ी। पुलिस ने पड़ोसी जिला हमीरपुर के दो युवकों से अवैध तमंचे और जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। विगत दिनों बाबू तालाब के पास घुमंतू जनजाति परिवार से हुए कथित विवाद में पुलिस को दोनों की तलाश थी। गुरुवार सुबह मुखबिर की सूचना पर दोनों आरोपित पुलिस के हत्थे चढ़े। इसके बाद आरोपी भूरा उर्फ हरिकिशन पुत्र परमेश्वरी दयाल राजपूत उम्र करीब 19 वर्ष, निवासी कुल्हैंडा थाना मझगवां जनपद हमीरपुर और सुनील राजपूत पुत्र राजेन्द्र कुमार उम्र करीब 18 वर्ष निवासी मो0 अतरौलिया कस्बा व थाना राठ जनपद हमीरपुर को पुलिस अभिरक्षा में जेल भेजा गया। बता दें कि पुलिस अधीक्षक श्रीमती अपर्णा गुप्ता के निर्देशन पर स्थानीय पुलिस ने आपराधिक घटनाओं को अंजाम देने वाले अभियुक्तों के खिलाफ अभियान चला रखा है। जिसमें नगारा घाट चौकी प्रभारी संजय सिंह के नेतृत्व में कांस्टेबल गौरव सबिता और सुदयवीर ने पड़ोसी जिला निवासी दोनों अभियुक्तों को हिरासत में लिया। जिनकी जामा तलाशी में भूरा और सुनील के कब्जे से एक एक 315 बोर तमंचा और एक एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया। बरामदगी के आधार पर दोनों के खिलाफ थाना क्रमशः मु0अ0सं0 215/24 व मु0अ0सं0 216/24 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट का अभियोग पंजीकृत कर संबंधित न्यायालय में पेशी के लिए भेज दिया गया।

किसानों और व्यापारियों की आमदनी बढ़ाने पर दिया जोर

महोबा। किसानों और व्यापारियों की आमदनी बढ़ाने को लेकर मंडी सचिव की अध्यक्षता में कृषि निर्यात जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें कृषि निर्यात नीति 2019 के संबन्ध की जानकारी दी गई। बैठक में डीजीएफटी और एपीडा आदि प्रमाण पत्र बनवाने और कृषि निर्यात के लिए उपयोगी वेबसाइटों से भी अवगत कराया गया साथ ही अच्छी कृषि पद्धति से भी रूबरू कराया गया। कृषि निर्यात की बैठक मंडी के ईआक्सन हाल महोबा में संपन्न हुई, जिसमें ज्येष्ठ कृषि विपरण निरीक्षण ने उत्तर प्रदेश कृषि निर्यात के लिए जरुरी डीजएफटी और एपीडा आदिके प्रमाण पत्र कैसे बनवाने से लेकर कृषि निर्यात के लिए उपयोगी वेबसाइटो के बारे में जानकारी दी साथ ही कृषि निर्यात नीति अंतर्गत दिए जाने वाले क्लस्टर निर्माण, नवीन प्रसंस्करण इकाई, परिवहन अनुदान, मंडी शुल्क में छूट आदि प्रोत्साहनों से भी अवगत कराया। मंडी सचिव ने अवगत कराया कि जिले से कृषि उत्पादों के निर्यात होने से किसानों के साथ साथ अन्य हितधारको की आय में वृद्धि होगी, इसलिए उक्त नीति का प्रचार हितधारको के बीच कराया जाएगा और इसके लिए उपस्थित प्रतिभागियों को अच्छी कृषि पद्धति की जानकारी मुहैया कराई जा रही है। बैठक में एफपीओ, एफपीसी प्रंसस्करणकर्ताओं, निर्यातकों सहित चरखारी मंडी सचिव सहित तमाम विभागीय लोग मौजूद रहे।

मृतक आश्रित को एमएलसी ने दिया दो लाख का चेक

महोबा। पत्थर उद्योग नगरी कबरई में चंद्रावल रोड के समीप आर्यावर्त बैंक की एक शाखा का उद्घाटन एमएलसी ने फीता काटकर किया। बैंक शाखा खुल जाने से क्षेत्र के ग्रामीणों, किसानों के साथ साथ व्यापारियों को लेनदेन के लिए काफी सहुलियत होगी। इस मौके पर एमएलसी द्वारा प्रधानमंत्री जवन ज्योति योजना के तहत एक ग्रामीण की मृत्यु हो जाने पर मृतक आश्रित को दो लाख रुपये की चेक भी प्रदान की गई। गौरतलब है कि कबरई पत्थर उद्योग मंडी होने के कारण यहां पर बैंकों के माध्यम से पैसो का लेनदेन अधिक होता है साथ ही यहां पर ग्रामीण और किसान भी बैंकों में खाता खुलवाने के लिए काफी परेशान होते हैं, जिसको देखते हुए आयावर्त बैंक की एक शाखा का शुभारंभ किया गया। बैंक शाखा का उद्घाटन एमएलसी जितेंद्र सिंह सेंगर ने फीता काटकर किया। इस मौके पर उन्होंने ग्राम गहरा निवासी गोमती कुशवाहा को योजना पीएमजेजेबीवाई के तहत उसके पति सीताराम कुशवाहा की बीमारी के चलते मौत हो जाने पर दो लाख रुपये की चेक प्रदान की गई। चेक पाकर मृतक की पत्नी खासी खुश नजर और उसने बताया कि उसके पति का आर्यावर्त बैंक में खाता था और उसका योजना के तहत बीमा था, जिसके चलते चेक मिली है, जो वह अपनी चार पुत्रियों के भपण पोषण और पढ़ाई में खर्च करेगी। जितेंद्र सिंह सेंगर ने कहा कि आर्यावर्त बैंक शाखा से व्यापारियों के साथ साथ आसपास के ग्रामीणों किसानों को लाभ मिलेगा। कहा कि अब उनके क्षेत्र में बैंक शाखा खुल जाने के बाद लम्बी दूरी तय करके मुख्यालय व अन्य जगह बैंकों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे, उनके बैंक से संबन्धित सभी कार्य सहुलित के साथ आर्यावर्त बैंक की नई शाखा से होगे ।

परिवर्तित मतदेय स्थलों का प्रारूप उपलब्ध कराया गया

बांदा। जर्जर व जीर्णशीर्ण मतदेय स्थलों वाले मतदेय स्थलों के स्थान पर नए भवनों का अनुमोदन प्रस्ताव के लिए गुरुवार को डीएम की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया। राजनैतिक दलों के साथ बैठक करते हुए परिवर्तित मदेय स्थलों का प्रारूप उपलब्ध कराया गया। समस्त राजनैतिक दलों से यह अनुरोध किया गया कि मतदेय स्थलों में किसी भी प्रकार दावे आपत्तियों के लिए 10 सितंबर तक लिखित रूप से जिला निर्वाचन कार्यालय या सम्बन्धित कार्यालय निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (तहसील) में किया जा सकता है। सम्बन्धित से अपेक्षा कि जाता है कि मतदेय स्थलों से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की आपत्ति या दावे 10 सितंबर तक लिखित रूप से सम्बन्धित निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (तहसील) अथवा कार्यालय जिला निर्वाचन अधिकारी को उपलब्ध करा सकते हैं।

सार संक्षेप

देवरा : भाग 1 का गाना 'दाउदी' रिलीज

मुंबईः मैन ऑफ मासेस एनटीआर जूनियर और अभिनेत्री जान्हवी कपूर की आने वाली फिल्म देवराः भाग 1' का तीसरा गाना 'दाउदी' रिलीज़ हो गया है। एक्शन ड्रामा 'देवराः भाग 1' के निर्माताओं ने फिल्म का तीसरा गाना 'दाउदी' जारी कर दिया है। पानी की पृष्ठभूमि पर फिल्माए गए इस गाने में जूनियर एनटीआर और जान्हवी कपूर अपनी शानदार अदाओं से स्क्रीन को जगमगा देते हैं। जान्हवी ने इंस्टाग्राम पर गाने के वीडियो को शेयर करते हुये लिखा,बड़े स्क्रीन पर धमाके के लिए आपको ट्रैक पर रखने के लिए यहां #दावुदी वीडियो सॉन्ग जारी। हिंदी में इस गाने को नकाश अज़ीज़ और अकासा ने गाया है। फियर सॉन्ग और रोमांटिक ट्रैक धीरे-धीरे की रिलीज के बाद, दावूदी देवरा का तीसरा गाना है। कोराटाला शिवा द्वारा निर्देशित और युवासुधा आर्ट्स और एनटीआर आर्ट्स द्वारा निर्मित, नंदामुरी कल्याण राम प्रस्तुत, 'देवराः भाग 1' 27 सितंबर, 2024 को रिलीज होने वाली है। इस फिल्म में सैफ अली खान की भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं।हाल ही में सैफ अली खान के जन्मदिन के मौके पर मेकर्स ने सैफ के किरदार भैरा की एक झलक शेयर की थी।अब एनटीआर आर्ट्स ने आधिकारिक तौर पर फिल्म में सैफ अली खान के चरित्र को प्रदर्शित करने वाला एक लघु वीडियो जारी किया है।

सारण बीएनएस के तहत सजा दिलाने में देश का पहला जिला बना

छपराः बिहार में सारण जिले का जिला एवं सत्र न्यायालय पूरे भारत में नये अपराधिक कानून भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) लागू होने के मात्र 50 दिन में बीएनएस के तहत फैसला देने वाला देश का पहला जिला बन गया है। सारण के जिला एवं सत्र न्यायाधीश पुनीत कुमार गर्ग ने गुरुवार को जिले के रसूलपुर थाना क्षेत्र में पिता और उनके दो पुत्रियों की हत्या के दोषी सुधांशु कुमार उर्फ रौशन तथा अंकित कुमार को उम्रकैद के साथ ही 25 हजार रुपए अर्थदंड की सजा सुनाई है। उल्लेखनीय है कि सारण जिले के रसूलपुर थाना क्षेत्र के धानाडीह गांव निवासी तारकेश्वर सिह उर्फ झाबर सिह अपने पत्नी और पुत्रियों के साथ घर की छत पर सो रहे थे। इसी दौरान थाना क्षेत्र के रसूलपुर गांव निवासी सुधांशु कुमार उर्फ रौशन तथा अंकित कुमार छत पर सो रहे पिता तथा पुत्रियों की हत्या धारदार हथियार से कर दी थी। उनकी पत्नी इस घटना में घायल होने पर भी घर से बाहर भाग कर अपनी जान बचाने में कामयाब हो गई थी, जिसकी चिकित्सा सदर अस्पताल छपरा में की गई थी।

एयर इंडिया एनडीसी लागू करने वाली पहली भारतीय एयरलाइन बनी

कोलकाताः एयर इंडिया ने गुरुवार को घोषणा की कि उसने नयी वितरण क्षमता (एनडीसी) के एकीकरण को सफलतापूर्वक लागू कर दिया है और अब वह इस नवीनतम तकनीक के साथ लाइव होने वाली पहली भारतीय एयरलाइन बन गई है। यहां मीडिया में जारी एक बयान के अनुसार, एयर इंडिया ने अंतरराष्ट्रीय वायु परिवहन संघ (आईएटीए) की नवीनतम 21.3 स्कीमा को अपनाया है, जिससे ट्रैवल एजेंटों, ट्रैवल कॉरपोरेशन, अवकाश और व्यावसायिक यात्रियों तथा अन्य ट्रैवल विक्रेताओं को अपने उत्पादों की खुदरा बिक्री के तरीके में बदलाव आया है। एयर इंडिया ने अपने एक बयान में बताया कि ट्रैवल इंडस्ट्री-समर्थित कार्यक्रम एनडीसी के माध्यम से, वह अपने ट्रैवल भागीदारों के बीच व्यक्तिगत रूप से बातचीत कर सकेंगे।

उप मुख्यमंत्री अरुण साव के काफिले से टकराया बाइक सवार

बिलासपुरः छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री अरुण साव के काफिले में शामिल एक वाहन ने बाइक सवार युवक को जोरदार टक्कर मार दी, जिससे युवक गंभीर रूप से घायल हो गया है। यह हादसा उस समय हुआ जब उप मुख्यमंत्री अरुण साव बिलासपुर से लोरमी जा रहे थे, तभी जुनापारा के पास काफिले के एक वाहन का टायर फट गया। टायर फटने से कार अनियंत्रित हो गई और बाइक सवार को टक्कर मार दी। दुर्घटना में बाइक सवार घायल युवक की पहचान सूरज के रूप में हुई है, जो भौंराकछार गांव का निवासी है। वह बुरी तरह से घायल हो गया है। बताया जा रहा है कि युवक का पैर टूट गया है। हादसे के बाद घायल युवक को तुरंत मुंगेली जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां उसका इलाज जारी है।

शिक्षक विद्यार्थी का जीवन गढ़ते हैं, इनका सम्मान स्वस्थ परम्पराः बागडे

● अजमेर,

राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे ने शिक्षकों के सम्मान को स्वस्थ परम्परा बताते हुए कहा है कि शिक्षक विद्यार्थी के जीवन को गढ़ते हैं और उन्हें संस्कारित कर सुनागरिक बनाते हैं, इसलिए शिक्षक समाज में वंदनीय है।

बागडे गुरूवार को शिक्षक दिवस के अवसर पर राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय बान्दर सिन्दरी किशनगढ़ में आयोजित टीचर एक्सीलेंस अवार्ड सेरिमनी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने इस दौरान उत्कृष्ट शिक्षकों का सम्मान किया और आजादी के मतवाले प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। इसमें राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व उत्सर्ग करने वाले देशभक्तों के योगदान को इसमें प्रदर्शित किया गया है। राज्यपाल ने कहा कि आजादी का इतिहास 1857 से लेकर 1947 तक करीब नब्बे साल का रहा है। इसे सभी को पढना चाहिए। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (एनएएसी) में राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय का प्रदर्शन देखकर बहुत अच्छा अनुभव हुआ है। इसे भविष्य में भी बनाए रखने की कामना की। उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा में गुणवत्ता हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होना चाहिए। किसी भी राष्ट्र के लिए वहां की उच्च शिक्षा समृद्ध सांस्कृतिक और वैज्ञानिक संपत्ति है। इससे विद्यार्थियों का व्यक्तिगत विकास ही नहीं होता बल्कि देश भी आर्थिक, तकनीकी और सामाजिक रूप में सुदृढ होता है। उन्होंने कहा कि आज का युवा कल का राष्ट्र उपासक और संरक्षक बने। यही नीति शिक्षा देने वाले शिक्षको की भी हो।

गुरुवार को उत्तर प्रदेश के लखनऊ में पहले संयुक्त कमांडरों के सम्मेलन में मौजूद केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ।

यूक्रेन से बातचीत को तैयार हैं पुतिन

बोले- जंग रोकने के लिए भारत-चीन कर सकते हैं मध्यस्थता

● नई दिल्ली, एजेंसी

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा है कि वे जंग में समझौते को लेकर यूक्रेन से बातचीत के लिए तैयार हैं। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक, पुतिन ने कहा है कि भारत, चीन या ब्राजील दोनों देशों के बीच मध्यस्थता कर सकते हैं।

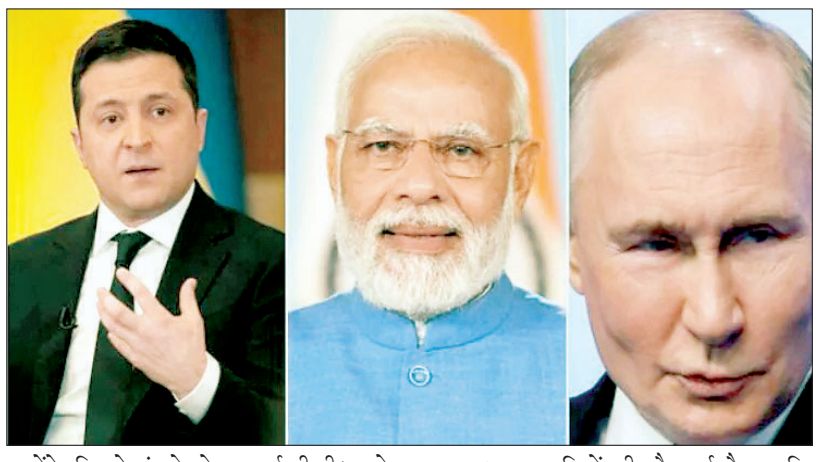

रूस के शहर व्लादिवोस्तोक में ईस्टर्न इकोनॉमिक फोरम में बातचीत के दौरान पुतिन ने कहा कि 2022 में जब जंग शुरू हुई थी, तब तुर्किये ने दोनों देशों के बीच समझौता कराने की कोशिश की थी। हालांकि, उन शर्तों को कभी लागू नहीं किया गया था। अब नए सिरे से बातचीत शुरू करने के लिए पिछली कोशिश को आधार बनाया जा सकता है।फरवरी 2022 में युद्ध शुरू होने के एक महीने बाद रूस और यूक्रेन के बीच तुर्किये की राजधानी इस्तांबुल में कई दौर की बातचीत हुई थी। इसका मकसद जंग रोकना था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने जंग रोकने के लिए दो शर्तें रखी थीं। उन्होंने कहा था कि यूक्रेन को दोनेत्स्क, लुहांस्क, खेरसोन और जपोरजिया से अपने सैनिक हटाने होंगे। इसके अलावा यूक्रेन कभी भी नाटो का हिस्सा नहीं बनेगा। हालांकि यूक्रेन ने इन शर्तों को मानने से इनकार कर दिया था। पुतिन का यह बयान तब आया है जब ढट मोदी करीब 2 महीने पहले 8 जुलाई को रूस के दौरे पर गए थे। यहां उन्होंने पुतिन से जंग रोकने पर चर्चा की थी। इसके कुछ समय बाद ढट मोदी 23 अगस्त को यूक्रेन का भी दौरा किया था। इस दौरान यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने भारत में दूसरा पीस समिट करवाने की इच्छा जाहिर की थी।

वहीं जेलेंस्की के साथ बैठक में ढट मोदी ने कहा था कि भारत हमेशा से शांति के पक्ष में रहा है। मैं कुछ दिन पहले रूस के राष्ट्रपति पुतिन से मिला था। तब मैंने मीडिया के सामने उनकी आंख से आंख मिलाकर कहा था कि यह युद्ध का समय नहीं है।'24 फरवरी 2022 को शुरू हुई रूस-यूक्रेन जंग को ढाई साल पूरे हो चुके हैं। इस बीच अब तक यूक्रेन के 10 हजार आम नागरिकों की मौत हुई है, जबकि 18,500 लोग घायल हुए हैं। यूक्रेन का दावा है कि रूस 3.92 लाख सैनिक गंवा चुका है। इस बीच अमेरिका ने रूस की 500 रूसी कंपनियों पर प्रतिबंध लगा रखे हैं। रूस-यूक्रेन जंग में 6 अगस्त 2024 को पहली बार ऐसा हुआ जब यूक्रेन ने रूस में घुसकर उसके कुर्स्क इलाके पर कब्जा कर लिया। तभी से यूक्रेन लगातार रूस पर हमलावर है। एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक 20 दिनों में यूक्रेन के हमलों में रूस के 31 नागरिकों की जान जा चुकी है। दूसरे विश्व युद्ध के बाद ऐसा पहली बार है, जब रूस की धरती पर किसी विदेशी ताकत ने कब्जा किया हो।

टिकट न मिलने खफा मंत्री रणजीत सिंह ने दिया इस्तीफा

● सिरसा,

हरियाणा के कैबिनेट मंत्री चौधरी रणजीत सिंह चौटाला ने गुरुवार को मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। रणजीत सिंह भाजपा द्वारा रानियां विधानसभा क्षेत्र से टिकट न देने के कारण खफा है। उन्होंने गुरुवार को रानियां विधानसभा क्षेत्र से आजाद प्रत्याशी के तौर पर चुनाव लड़ने का ऐलान किया है। भारतीय जनता पार्टी द्वारा पहली सूची बीती देर शाम जारी की गई थी ,इस सूची में रानिया विधानसभा क्षेत्र से पार्टी के जिला अध्यक्ष शीशपाल कंबोज को टिकट दिया गया है। बता दें की रणजीत सिंह ने पिछले लोकसभा चुनाव में ही भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ली थी उसी दिन भाजपा ने उनको हिसार लोकसभा क्षेत्र से प्रत्याशी बना दिया था वे हिसार में कांग्रेस के जयप्रकाश जेपी से चुनाव हार गए थे।

हिसार संसदीय क्षेत्र से चौधरी रणजीत सिंह के सामने इन्हीं के परिवार की दो बहुएं नैना चौटाला जननायक जनता पार्टी व सुनैना चौटाला इंडियन नेशनल लोकदल से प्रत्याशी के तौर पर सामने आ खड़ी हुई थी। अब रानिया विधानसभा क्षेत्र में रणजीत सिंह के सामने इंडियन नेशनल लोकदल के प्रत्याशी अर्जुन चौटाला खड़े हुए हैं। जिससे

दादा पोता फिर आमने-सामने है। यहां भाजपा ने पार्टी के जिलाध्यक्ष शीशपाल कंबोज को प्रत्याशी बनाया है। प्रत्याशी सूची आने के बाद रणजीत सिंह ने गुरुवार को अपने समर्थकों की एक बैठक अपने सिरसा स्थित आवास पर बुलाई। अपने खास समर्थन के साथ बार-बार राय मशविरा किया। सलाह के बाद रणजीत सिंह ने रानी से चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया। इसके तुरंत बाद रणजीत सिंह के पौत्र सूर्य प्रकाश ने उनके आवास पर लगे भारतीय जनता पार्टी के झंडे को उखाड़ फेंका। रणजीत सिंह ने अपने फैसले बड़े मीडिया को बताते हुए कहा कि उनके पास सुबह से भारतीय जनता पार्टी के सिर्फ नेतृत्व के लोगों के फोन आ रहे हैं उन्होंने पुन कांग्रेस में जाने की अटकलें पर भी विराम लगाया।

छह जिलों में भारी बारिश का अलर्ट

भोपालः मध्यप्रदेश में गुरुवार को कुछ स्थानों को छोड़ शेष स्थानों पर छिटपुट बारिश हुई। अगले चौबीस घंटों के दौरान प्रदेश के छह जिलों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विज्ञान केन्द्र भोपाल के वैज्ञानिकों ने बताया कि प्रदेश के सागर जिले के बीना, बालाघाट जिले के अधिकांश स्थानों पर तथा शिवपुरी, हरदा और विदिशा जिलों में अच्छी बारिश हुयी। वहीं, शेष स्थानों पर छिटपुट बरसात हुयी। प्रदेश के मंडला से होकर एक 'ट्रफ' लाइन गुजर रही है, जिसके चलते अगले चौबीस घंटों के दौरान सतना, मैहर, अनूपपुर, डिंडोरी, सिवनी और बालाघाट जिलों में कहीं कहीं भारी बारिश की संभावना है। वहीं, शेष स्थानों पर छिटपुट बारिश का दौर अभी कुछ दिन और जारी रह सकता है।

सिवनी में ट्रक से बारह टन मांस जब्त

सिवनीः मध्यप्रदेश के सिवनी जिले की कोतवाली पुलिस ने जबलपुर-नागपुर राष्ट्रीय राजमार्ग में गुरुवार सुबह घेराबंदी कर लगभग 12 टन मांस से भरा एक ट्रक पकड़ा। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जीडी शर्मा ने बताया कि ट्रक में सवार तीन आरोपी मो मुंजर, मो सुभान, मो जलाल तीनों निवासी समस्तीपुर बिहार को गिरफ्तार किया गया है। ट्रक में गौवंश-मांस का अवैध परिवहन होने की सूचना पुलिस को मिली थी, जहां सूचना अनुसार कोतवाली सहित अन्य थाना का बल तैनात किया गया था। पुलिस के अनुसार ट्रक में भरा मांस बिहार से हैदराबाद जा रहा था। ट्रक रोकने हाइवे में रखे बेरीकेट्स को तोड़कर चालक ने पुलिस कर्मियों पर वाहन चढ़ाने का प्रयास किया। इसके बावजूद कोतवाली पुलिस ने मांस भरे ट्रक को छिंदवाड़ा बायपास के पास पकड़ लिया।

देश में चलेगा प्रकृति परीक्षण अभियान

नई दिल्लीः राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग इस वर्ष अक्टूबर से नवंबर तक पूरे देश में प्रकृति परीक्षण यह अभियान चलायेगा। केंद्रीय आयुष मंत्री प्रताप राव जाधव ने गुरुवार को यहां एक संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रकृति का स्वास्थ्य रक्षण में बहुत महत्व होता है और प्रकृति के जानकारी से आम नागरिक खुद को स्वस्थ रखने के लिए दिनचर्या ,ऋतुचर्या के अनुरूप अपनी नित्य कार्यों में छोटे-छोटे बदलाव लाकर स्वस्थ रह सकते हैं । उन्होंने बताया कि देश भर के एक करोड़ से ज्यादा नागरिकों का प्रकृति परीक्षण देश के आयुर्वेद महाविद्यालयों के एक लाख 35 हजार विद्यार्थी, 20 हजार स्नातकोत्तर शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थी, 18 हजार अध्यापक तथा तीन लाख चिकित्सक करेंगे।

गुरुवार को नई दिल्ली में आयोजित 'शिक्षक सम्मान समारोह' में दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया

नेकां-कांग्रेस गठबंधन भाजपा के लिए झटका

भाजपा की बिसात बिखर चुकी है: तारिक कर्रा

● श्रीनगर,

जम्मू-कश्मीर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तारिक कर्रा ने गुरुवार को कहा कि नेशनल कॉन्फ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन भाजपा के लिए झटका है और आगामी विधानसभा चुनावों में उसकी हार सुनिश्चित है।

कर्रा ने गुरुवार को श्रीनगर के सेंट्रल शाल्टेंग निर्वाचन क्षेत्र से अपना नामांकन पत्र दाखिल करने से कहा कि अगर भाजपा को राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) स्वीकार्य है, तो वह नेशनल कांफ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन पर आपत्ति क्यों जता रही है। मेरा मानना है कि भाजपा की बिसात बिखर चुकी है और कांग्रेस-नेशनल कॉन्फ्रेंस

गठबंधन के कारण उसे अंततः हार का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने जोर दिया कि यह गठबंधन जम्मू-कश्मीर के लोगों के लिए है तथा इसका उद्देश्य वर्तमान प्रशासन द्वारा दबाये गये सम्मान, पहचान और संवैधानिक अधिकारों की रक्षा करना है, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित हो सके। उन्होंने कहा कि नेशनल कांफ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन चुनावी लाभ या सरकार बनाने के लिए नहीं बल्कि भाजपा को हराने के लिए है। चुनाव मैदान में उतरे कई निर्दलीय उम्मीदवारों के बारे में उन्होंने कहा कि यह कश्मीरियों को शक्तिहीन करने का एक जानबूझकर किया गया प्रयास है। कांग्रेस नेता ने कहा कि वर्ष 2014 से भाजपा का उद्देश्य हर गली से नेताओं को बढ़ावा देकर कश्मीर में वोटों को विभाजित करना है। अगर लोग इस बार अपनी सरकार चुनने में सही निर्णय लेने में विफल रहे तो उन्हें अगले 100 वर्षों तक इसके परिणाम भुगतने होंगे। उन्होंने जोर दिया कि आगामी विधानसभा चुनावों के पिछले चुनावों से अलग मापदंड हैं।

भाजपा नेता राम माधव के कश्मीर में राजनीतिक दलों की ओर से आतंकवादियों और पूर्व आतंकवादियों को मैदान में उतारने संबंधी बयान के संदर्भ में कर्रा ने कहा कि राम माधव को कुछ साल पहले पूर्व आतंकवादियों की भर्ती करने के अपने दल के इतिहास के बारे में पता नहीं है।

चुनावी रण में उतरी कश्मीरी राजनेताओं की नई पीढ़ी

● श्रीनगर,

नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के वरिष्ठ नेता एवं अनंतनाग-राजौरी निर्वाचन क्षेत्र से लोक सभा सांसद मियां अल्ताफ के पुत्र मियां मेहर अली (38) कंगन विधान सभा क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं।पूर्व एनसी विधायक सादिक अली के पुत्र तनवीर सादिक श्रीनगर के जादीबल से चुनाव लड़ रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर में राजनीतिक खानदान से ताल्लुक रखने वाले कई युवा नेता आगामी विधान सभा चुनाव में उतरे हैं, इनमें से कुछ पहली बार चुनावी मैदान में हैं।

विधानसभा चुनावों में राजनेताओं की नई पीढ़ी के सदस्यों में इल्तिजा मुफ्ती (37) (पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी), जो पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती की पुत्री हैं और उनकी मीडिया सलाहकार भी हैं। वह दक्षिण कश्मीर की श्रीगुफवारा बिजबेहरा सीट से चुनाव लड़ रही हैं। इससे पहले, इल्तिजा ने लोक सभा चुनाव के दौरान अपनी मां (महबूबा मुफ्ती) के लिए बड़े पैमाने पर प्रचार किया था लेकिन अनंतनाग सीट से चुनाव असफल रहा। नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के वरिष्ठ नेता एवं अनंतनाग-राजौरी निर्वाचन क्षेत्र से लोक सभा सांसद मियां अल्ताफ के पुत्र मियां मेहर अली (38) कंगन विधान सभा क्षेत्र से अपना पहला चुनाव लड़ रहे हैं। तनवीर सादिक (एनसी): पूर्व एनसी विधायक सादिक अली के पुत्र तनवीर सादिक (45) (एनसी) श्रीनगर के ज़ादीबल निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं। वे वर्तमान में पार्टी के मुख्य प्रवक्ता और संचार प्रभारी हैं। नेशनल कॉन्फ्रेंस के महासचिव एवं प्रमुख नेता अली मोहम्मद सागर के पुत्र सलमान सगर (40) (एनसी) श्रीनगर के हजरतबल निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं। वे पार्टी के युवा अध्यक्ष एवं श्रीनगर के पूर्व महापौर भी रहे हैं। नौकरशाह से राजनेता बने गुलाम कादिर परदेसी के पुत्र अहसान परदेसी (50) (एनसी) श्रीनगर

के लाल चौक निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं। वे पहले पीडीपी से जुड़े थे। पूर्व पीडीपी विधायक अब्दुल मजीद बांडे के पोते यावर बांडे (41) (पीडीपी) शोपियां निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं। यावर तीन साल पहले पीडीपी में शामिल हुए थे।

इसके अलावा, पूर्व मंत्री एवं जम्मू-कश्मीर विधान सभा के स्पीकर अली मोहम्मद नाइक के पुत्र मोहम्मद रफीक नाइक (60) (पीडीपी) पुलवामा जिले के त्राल निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं। वह हाल ही में पीडीपी में शामिल हुए हैं। इससे पहले, नाइक एक सरकारी कर्मचारी थे और इस साल की शुरुआत में सेवानिवृत्त हुए थे। पूर्व सांसद दिवंगत गुलाम रसूल कर के पुत्र इरशाद रसूल कर (56) (एनसी) बारामूला जिले की सोपोर विधान सभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। वह पांच साल पहले नेशनल कॉन्फ्रेंस में शामिल हुए थे। पूर्व सांसद एवं एनसी के दिग्गज मोहम्मद शफी उरी के पुत्र सज्जाद शफी (एनसी) बारामूला जिले की उरी सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। सज्जाद पेशे से डॉक्टर हैं। उन्होंने 2006 में अपनी नौकरी छोड़ दी थी। पूर्व एनसी सांसद अकबर लोन के पुत्र हिलाल अकबर लोन (50) (एनसी) बांदीपोरा जिले की सोनावारी विधान सभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। वह पेशे से वकील हैं।

गुरुवार को नई दिल्ली में पार्टी के वरिष्ठ नेता लाल कृष्ण आडवाणी को 'भारतीय जनता पार्टी - राष्ट्रीय सदस्यता अभियान' के तहत सदस्यता नवीनीकरण की प्रति सौंपते हुए जेपी नड्डा।

दुष्कर्म विरोधी कानून ममता लागू कैसे कराएंगी

पश्चिम बंगाल में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने दुष्कर्म और हत्या के आरोपियों को फांसी की सजा दिलाने वाला कानून विधानसभा में पास करवा लिया है। इस कानून में दुष्कर्म के मामलों की जांच 21 दिन के अंदर करने का प्रावधान है। बाहर से कानून सीधा साफ नजर आता है लेकिन इसके अंदर उतने ही पेच भी हैं। बढ़ा सवाल इसके लागू करवाने को लेकर है। मसलन, अपराजिता अधिनियम- 2024 के तहत राज्य के हर जिले में अपराजिता टास्क फोर्स बनाई जाएगी जो दुष्कर्म और इससे जुड़े मामले की जांच 21 दिन में पूरी करके मुजरिम को सजा दिलाएगी। इस टास्कफोर्स की अगुवाई एक डीएसपी रैंक के अधिकारी के पास होगी। अगर किसी मामले में टास्क फोर्स 21 दिन में जांच पूरी नहीं कर पाती तो डीएसपी को इसकी वजह बतानी होगी और अगर कारण सही हुआ तो टास्क फोर्स को जांच पूरी करने के लिए ज्यादा से ज्यादा 15 दिन का विस्तार मिलेगा। यानी किसी भी हालत में दुष्कर्म के मामलों में जांच 36 दिन में पूरी होगी। हालांकि इस विधेयक में इस बात का प्रावधान नहीं है कि अगर दुष्कर्म के मामले में सबूत मिटाने की कोशिश होती है, पुलिस की भूमिका पर भी सवाल उठते हैं तो दोषी पुलिसवालों के खिलाफ क्या कार्रवाई होगी? अगर दुष्कर्म का मामला दर्ज करने में पुलिस गड़बड़ी करती है तो क्या कार्रवाई होगी? विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी ने इसी आशंकाओं के मद्देनजर विधेयक में सात संशोधनों के सुझाव दिए। विधेयक पर चर्चा के दौरान ममता बनर्जी ने भाजपा के विधायकों से कहा कि वे राज्यपाल से कहकर जल्दी से जल्दी इस पर दस्तखत करा दें ताकि महिलाओं को न्याय दिलाया जा सके। ममता बनर्जी ने विधानसभा में लंबा राजनीतिक भाषण देकर अपनी विफलताओं को नजरंदाज कर दिया लेकिन वो ये नहीं बता पाईं कि इस कानून के तहत महिलाओं पर जुल्म करने वाले संदेशखाली के डॉन शाहजहां शेख को फांसी की सजा कैसे दिलवाएंगी। अगर ममता शाहजहां शेख जैसे अपराधियों को नए कानून से सजा नहीं दिला सकतीं तो ऐसे कानून बनाने का कोई मतलब नहीं है। कोलकाता की चिकित्सक डॉक्टर बेटी को न्याय दिलाने के लिए संघर्ष कर रहे आरजी कर अस्पताल के चिकित्सकों ने ममता बनर्जी के इस विधेयक पर कहा कि सिर्फ कानून बनाने से कुछ नहीं होगा क्योंकि देश में बहुत से कानून तो पहले से ही हैं, जरूरत है कानूनों को ठीक से लागू करने की। चिकित्सकों ने नए इस विधेयक पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की, उस पर गौर करने की जरूरत है। क्योंकि 2012 में दुष्कर्म करने वालों के खिलाफ सख्त कानून बनाया गया। उससे पहले पॉक्सो एक्ट है और भी कई कानून हैं। इसलिए ये बात सही है कि अगर कानूनों को ठीक से लागू नहीं किया जाता तो फिर नया कानून बनाने का क्या फायदा? इसलिए सबसे जरूरी तो ये है कि ममता बनर्जी की सरकार सिस्टम के प्रति लोगों का भरोसा पैदा करें। वैसे ममता ने अच्छा कानून बनाया, सख्त कानून बनाया। ये कानून बंगाल में महिलाओं के खिलाफ अपराध करने वालों को कड़ी सजा दिलाने के रास्ते खोलेगा, पर इसका डर तभी पैदा होगा जब इस कानून के तहत दो-चार अपराधियों को बिना देरी के सजा-ए-मौत मिलेगी। बहरहाल, ममता ने प्रधानमंत्री मोदी पर हमला किया तो फिर शिवराज सिंह चौहान ने शाहजहां शेख की याद दिला दी।

संतवाणी

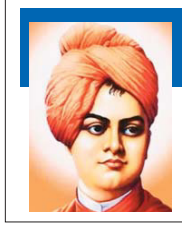

इस दुनिया में सभी भेद-भाव किसी स्तर के हैं, ना कि प्रकार के, क्योंकि एकता ही सभी चीजों का रहस्य है।

- **स्वामी विवेकानंद**, आध्यात्मिक गुरु

सामयिक

शाहीन सबा

रोगी-चिकित्सक के बीच सेतु है 'परस्पर विश्वास'

जब भी कोई डॉक्टर किसी मरीज का इलाज करता है और रोगी को शारीरिक एवं मानसिक संतुष्टि मिलती है तब रोगी के द्वारा हाथ जोड़कर नम आंखों से अभिवादन करना किसी भी डॉक्टर के लिए असीम सुख और शांति का क्षण था, जिसका मैं स्वयं साक्षी रहा हूं, यह क्षण अत्यंत मूल्यवान होता है, एक डॉक्टर हमेशा यह कोशिश करता है कि उसका रोगी जल्द से जल्द और पूरी तरीके से ठीक हो जाए। चिकित्सक अपने प्रयत्नों से रोगी को एक नया जीवन देने के लिए अपनी बुद्धि, चातुर्य, अनुभव का प्रयोग करता है और उसे जीवन दान देता है, वह सिर्फ एक रोगी को जीवनदान नहीं देता है किंतु उससे जुड़ी हुई कई जिंदगियां जो उस पर आश्रित होती हैं उनके सहारे को जीवित रखता है। सुश्रुत संहिता के सूत्र स्थान अध्याय 25/43 मैं आचार्य ने लिखा है कि रोगी व्यक्ति अपने माता-पिता, पुत्र, बंधुओं को भी शंका की दृष्टि से देखता है और डॉक्टर में पूर्ण विश्वास रखता है वह अपने पूरे शरीर को चिकित्सक के हवाले छोड़ देता है, इसलिए डॉक्टर को भी अपने रोगी की पुत्र के समान रक्षा करना चाहिए। जब रोगी को पुत्र के समान दर्जा देकर उसका इलाज करने का निर्देश प्राचीन ग्रंथों में कर दिया है तो स्वत ही स्पष्ट है कि एक पिता अपने पुत्र या पुत्री की रक्षा करता है चाहे फिर उसका सर्वस्व ही क्यों ना समाप्त हो जाए। जब रोगी किसी व्यक्ति को भगवान का दर्जा देता है तो वह अपेक्षा करता है कि उसके साथ चिकित्सक भी एक भक्त के जैसा व्यवहार रखें और ऐसा होना आवश्यक भी है और ऐसा होता भी है। परंतु आज हम देखते हैं कि चिकित्सक एवं रोगी के इन संबंधों में कुछ कमी आई है, यह सोचने का विषय है कि ऐसा क्यों हुआ। इन सभी कारणों पर हमें विचार करना पड़ेगा तभी हम देश को एक स्वस्थ समाज की ओर अग्रसर कर पाएंगे। आचार्य चरक ने कहा है कि चिकित्सा अर्थात इलाज करने के लिए केवल डॉक्टर ही उत्तरदायी नहीं है, बल्कि चिकित्सा के चारो स्तंभ अर्थात डॉक्टर, द्रव्य अर्थात दवाइयां उपस्थाता अर्थात पैरामेडिकल स्टाफ एवं स्वयं रोगी भी उसके लिए ही उतना ही उत्तरदायी है, इनमें से किसी भी एक की कमी होने से रोगी को स्वास्थ्य लाभ नहीं मिल पाता है और उसकी जिम्मेदारी चिकित्सक को दी जाती है।

जब ब्रह्मा जी के द्वारा इस सृष्टि की उत्पत्ति हुई, उसी समय से रोगों का शरीर में प्रादुर्भाव हुआ और प्राचीन समय से ही रोगों को समाप्त करने के लिए ब्रह्मा जी ने आयुर्वेद की स्थापना की और यह आयुर्वेद ब्रह्मा जी से दक्ष प्रजापति, दक्ष प्रजापति से अश्विनी कुमार, अश्विनी कुमार से इंद्र को एवं फिर ऋषि भारद्वाज आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त करने के लिए इंद्र के पास गए और फिर ऋषि परंपरा से यह आयुर्वेद आज जन-जन में व्याप्त होकर पूरे विश्व में रोगियों की सेवा कर रहा है। संहिता काल में चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, बागभट्ट संहिता जैसी अनेक आयुर्वेदिक ग्रंथों का निर्माण

हुआ और आज आचार्य सुश्रुत को फादर ऑफ सर्जरी का सम्मान दिया जाता है। प्राचीन समय से राजाओं के दरबार में एक वैद्य नियुक्त रहता था जो राज्य की चिकित्सा के अतिरिक्त राजा एवं सैनिकों के स्वास्थ्य की देख-रेख करता था। बड़े-बड़े युद्ध में जब हजारों सैनिक घायल हो जाते थे तो वैद्यों के द्वारा बनाए गए लेप लगाने से उनके घाव सुबह तक सही हो जाते थे। रामायण में आचार्य सुषेण वैद्य के द्वारा भगवान लक्ष्मण को पुनर्जीवित करने का वर्णन है अर्थात एक चिकित्सक स्वयं भगवान के शरीर में प्राणों को डाल सकता है तो उसका दर्जा भगवान के तुल्य होना तर्कसंगत है। कालक्रम से पूरे भारतवर्ष में अनेक पद्धतियों जैसे एलोपैथी, होम्योपैथी, यूनानी एवं अनेक ऐसी चिकित्सा पद्धति की खोज हुई। सभी चिकित्सा पद्धतियों का एक ही उद्देश्य है कि रोगी के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगियों को उनकी बीमारियों से निजात दिलाना। सभी चिकित्सा पद्धति के डॉक्टर अपने स्वविवेक, अनुभव एवं उपलब्ध संसाधनों से रोगी के हितों की रक्षा करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। जब एक डॉक्टर अपनी पढ़ाई कर रहा होता है तो उसे यही सिखाया जाता है कि उनका जीवन सिर्फ समाज के लिए है और रोगियों की रक्षा के लिए उनका जीवन समर्पित होना चाहिए। किसी भी डॉक्टर के पास यदि कोई मरीज दिन में या रात में आए तो चिकित्सक का धर्म है कि वह रोगी की रक्षा करें, क्योंकि रोगी, दुखी मनुष्य के हृदय में स्वयं भगवान का निवास होता है। आयुर्वेद संहिता में बताया गया है कि रोगी की चिकित्सा करने से कभी धर्म की, कभी मित्रता की, कभी अर्थ अर्थात धन की, कभी यश की प्राप्ति होती है और यदि कुछ प्राप्त ना हो तो उसे चिकित्सा करने का अभ्यास जरूर मिलता है जो आगे रोगियों का इलाज करने में काम आता है। आज विलासिता के आधुनिक युग में हम अनेक कारणों से भयंकर गंभीर बीमारियों का शिकार हो रहे हैं गंभीर बीमारियों से लाखों लोग मौत के मुंह में चले जाते हैं। देश में मेडिकल सुविधाओं की संख्या एवं डॉक्टर्स की संख्या पर्याप्त नहीं है, अभी भी कई गांव ऐसे हैं जहां डॉक्टर उपलब्ध नहीं है, हमारी सरकारें दिनोंदिन लगातार प्रयास करके उन सुविधाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने की कोशिश कर रही हैं और इनमें कामयाबी भी मिल रही है, इस समय डॉक्टर्स को पूरी जिम्मेदारी, समर्पण एवं निस्वार्थ रूप से कार्य करने की आवश्यकता है जो हम सभी कर रहे हैं। पूरे विश्व के देशों में एक समानता है कि सभी देशों में रोगियों की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है और इस समस्या ने पूरे विश्व को एक कर दिया है। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री जी के प्रयासों द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ में 177 देशों के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को मनाने की सहमति मिली और आज पूरे विश्व ने भारत की पुरातन संस्कृति एवं चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद और योग को माना है यह भारतवर्ष के डॉक्टरों के द्वारा लगातार किए जा रहे कार्य का ही फल है। आचार्य चरक ने सूत्रस्थान के प्रथम अध्याय 1/42 में बताया है कि रोगों में मात्र शरीर के चिकित्सा करना पर्याप्त नहीं है किंतु मन, इंद्रियां और आत्मा की चिकित्सा भी करना आवश्यक है, इसी को पूर्ण चिकित्सा कहते हैं। आधुनिक युग में अधिक रोग तनाव, अशांति, क्रोध, लोभ, मोह के कारण हो रहे हैं, जिन्हें हम मानसिक रोग कहते हैं अतः इन रोगों के लिए योग के आठ अंग (यम नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) के द्वारा रोगी की पूर्ण चिकित्सा संभव है, डब्ल्यूएचओ ने भी स्वास्थ्य की परिभाषा में अपनी मुहर लगाई है। जब भी कोई व्यक्ति बीमार होता है तो निश्चित रूप से उसकी कार्य क्षमता में कमी होती है, वह व्यक्ति जिस क्षेत्र से जुड़ा होता है उसकी उत्पादकता कम हो जाती है। इस प्रकार एक समय में जितने रोगी अधिक रूप से देश में रहेंगे, देश को कमजोर अर्थव्यवस्था से गुजरना पड़ेगा। अतः इसमें चिकित्सकों का दायित्व है कि वह इस प्रकार के आहार विहार, जीवन शैली, आयुर्वेद, योग से रोगियों को स्वस्थ रखें कि बीमारी ना हो और यदि किसी कारण से वह बीमार हो जाए तो उसे शीघ्र प्रभावी चिकित्सा देकर स्वस्थ किया जा सके। हम चिकित्सकों को लगातार सेमिनार, संगोष्ठी, कैंप, शिविर, जागरूकता अभियान घर बहुत सेवा, स्वास्थ्य सहयोग एवं वह सभी प्रयास करना चाहिए जिससे आम जनता के पास यह जानकारी पहुंचे कि किस प्रकार का खान-पान, रहन-सहन, वायु सेवन, जल सेवन हो जिस से स्वस्थ रहा जाए और बीमारियां नहीं हो। मैं स्वयं चिकित्सक होने पर गर्व करता हूं और ईश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने मुझे ऐसे व्यक्ति के रूप में जन्म दिया जहां में गरीबों, रोगियों, दीन-दुखियों एवं जरूरतमंदों की सेवा कर सकूं। मैं स्वयं 2010 से एक शल्य चिकित्सक के रूप में विभिन्न प्रकार के घावों जैसे प्रमेह के घावों, वैरिकोस अलसर, कैंसर के घाव, एक्सिडेंट के घाव, अर्श एवं अन्य शल्य रोगों की चिकित्सा कर रहा हूं और अभी तक लगभग 5000 रोगियों के बड़े- बड़े घावों का सही करने का साक्षी बना हूं, अनेक रोगी जिनकों घाव की वजह से पैर कटवाने की सलाह दी, उन्हें आयुर्वेद औषधियों से सही करने पर मैं ईश्वर का कोटि-कोटि नमन करता हूं। जब कोई रोगी स्वस्थ होने के बाद हाथ जोड़कर धन्यवाद देता है वह क्षण असीम सुख एवं आनंद से भरा होता है, जिसके आगे अमूल्य संपत्ति भी तुच्छ होती हैं और मैं स्वयं कई बार इन क्षणों का साक्षी बना हूं। हम हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण को रोगियों की सेवा के लिए समर्पित करने का संकल्प लें।

राजनीति

किशन सनमुखदास

राजनीतिक लाभ के लिए भीड़तंत्र का उपयोग अनुचित

गोंदिया-वैश्विक स्तर पर सबसे बड़े भारतीय लोकतंत्र और न्यायपालिका की प्रतिष्ठा पूरी दुनिया में है। विशेष रूप से हर भारतीय नागरिक को न्यायपालिका पर पूरा भरोसा होता है, जहां हर नागरिक को सामान न्याय की उम्मीद रहती है। हम देखते हैं कि न्यायपालिका इमेज़ की आंखों पर पट्टी बंधी रहती है, व हाथ में तराजू के दोनों पलड़े बराबर स्तर पर होते हैं। याने राजा से रंक तक के लिए न्याय समान रूप से होता है, इसलिए ही आंखों पर पट्टी बंधी रहती है, कि न्यायपालिका कभी भी देखकर न्याय नहीं करती। पूरे सबूत के आधार पर एक जजमेंट कॉपी बनी हुई होती है जो हजारों पन्नों से अधिक भी हो सकती है,पूरी प्रक्रिया के साथ ही सजा का ऐलान होता है फिर उस जजमेंट के अपील की व्यवस्था भी उसके ऊपर के कोर्ट में होती है, फिर रिवीजन पिटिशन से लेकर राष्ट्रपति के पास माफी की अपील भी होती है। यही न्यायिक व संवैधानिक प्रक्रिया होती है। आज हम इस प्रक्रिया की बात इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि रविवार दिनांक 1 सितंबर 2024 को काउंसिल आफ महाराष्ट्र और गोवा (बार काउंसिल ऑफ महाराष्ट्र गोवा) वकीलों की महाराष्ट्र स्तरीय संस्था का पुणे में एक सम्मेलन हुआ जिसमें सुप्रीम कोर्ट के दो माननीय न्यायमूर्ति भी शामिल हुए व सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा,कानूनी फैसलों की शक्ति केवल न्यायपालिका के पास ही होती है,फिर भी एक भीड़तंत्र बनाया जा रहा है। मेरा मानना है कि यह सही है कि हम अक्सर अनेक बड़ी-बड़ी घटनाओं में देखते हैं कि वहां एक के बाद एक बड़े-बड़े राजनीतिक लीडर पहुंचते हैं व उस घटना के संदर्भ में जनता या भीड़ से कहते हैं हम उन आरोपियों को फांसी दिला देंगे, मौत की सजा दिला देंगे या कोई उस भीड़तंत्र में से कहता है, अभी के अभी फांसी दो तो हम आंदोलन समाप्त कर देंगे,इत्यादि अनेक बयान आते हैं। जबकि यह सर्वविदित है कि किसी भी अपराध के बाद एक न्यायक प्रक्रिया होती है जो जुडिशल मजिस्ट्रेट फर्स्ट क्लास से लेकर अपीलों का दौरा जिला न्यायालय हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट, रिवीजन पिटीशन अपील इत्यादि की जाती है तथा मौत की सजा का माफी नामा राष्ट्रपति तक भी जाता है, यही तो न्याय व संवैधानिक प्रक्रिया है, जो पीड़ित या आरोपी दोनों के लिए है, यह तो करना ही होता है। यह पूरा मामला अभी हाल ही में पश्चिम बंगाल में व महाराष्ट्र के बदलापुर में घटित दो घटनाओं के संदर्भ में संज्ञान लेकर आ रहा है, जो फांसी या मौत की सजा दिलाने की बात कहीं ना कहीं राजनीतिक फायदा उठाने के लिए भी की जा सकती है? चूंकि कानूनी फैसला पारित करने की शक्ति केवल न्यायपालिका के पास होती है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, किसी भी घटना पर आरोपियों को मौत या फांसी की सजा का आश्वासन कोई कैसे दे सकता है? क्या पूरी न्यायिक प्रक्रिया को कोई अनदेखा कर सकता है? साथियों बात अगर हम बार काउंसिल ऑफ महाराष्ट्र और गोवा के पुणे सम्मेलन में सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति के संबोधन की करें तो, उन्होंने इस सम्मेलन में जोर देते हुए कहा कि भले ही कानूनी फैसले पारित करने की शक्ति केवल न्यायपालिका के पास है, बावजूद इसके एक भीड़तंत्र बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमने एक भीड़तंत्र बना दिया है। जब कोई घटना होती है, तो राजनीतिक लोग इसका फायदा उठाते हैं। नेता उस विशेष स्थान पर जाते हैं और लोगों को आश्वासन देते हैं कि आरोपियों को मौत की सजा दी जाएगी। जबकि निर्णय लेने की शक्ति केवल न्यायपालिका के पास है। अपने संबोधन में उन्होंने न्यायपालिका की स्वतंत्रता को बनाए रखने और त्वरित, न्यायपूर्ण निर्णय देने के महत्व पर भी जोर दिया, उनकी टिप्पणी कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में ट्रेनी डॉक्टर के साथ दरिंदगी और हत्या की घटना और महाराष्ट्र के बदलापुर के एक स्कूल में दो लड़कियों के कथित यौन शोषण के संदर्भ में आई है, ऐसा मानने की संभावना व्यक्त की अध्याय की जा रही है। इन दोनों घटनाओं में कई राजनेताओं ने दोषियों को मृत्युदंड देने की मांग की है।

(लेखक स्तंभकार हैं)

जयंती आज

रमेश शर्मा

नेताजी सुभाष के प्रेरणापुंज शरतचन्द्र बोस

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में कुछ विलक्षण व्यक्तित्व ऐसे भी थे जिन्होंने अपने संघर्ष के साथ अंग्रेजों को भारत से बाहर करने के लिए नया इतिहास रचने वाली पीढ़ी तैयार की। ऐसे ही महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे शरतचन्द्र बोस। ये नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के बड़े भाई थे। नेताजी सुभाषचन्द्र को इन्हीं ने आजाद हिन्द फौज गठित करने के लिए प्रेरित किया था।

ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व और विचारक शरतचन्द्र बोस का जन्म 6 सितम्बर 1889 को उड़ीसा प्रांत के अंतर्गत कटक में हुआ था। पिता जानकीनाथ बोस कटक उड़ीसा क्षेत्र के सुविख्यात एडवोकेट थे। उन्हें अंग्रेजों ने रायबहादुर की उपाधि से सम्मानित किया था। माता प्रभावती एक संस्कारवान महिला थीं जो भारतीय परंपराओं के अनुरूप जीवन जीने की समर्थक थीं। शरत बाबू नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के बड़े भाई थे। आयु में आठ वर्ष का अंतर था। सुभाष बाबू बचपन से शरत जी का अनुसरण करते थे और उनका मार्गदर्शन लेकर आगे कार्य करते थे। समय के साथ शरतचन्द्र बोस का विवाह विभावती देवी से हुआ और परिवार कलकत्ता आ गया। शरत बाबू की आरंभिक शिक्षा कटक में हुई। आगे की पढ़ाई कलकत्ता में हुई। जब कलकत्ता आए तब पूरे बंगाल का वातावरण उथल-पुथल से भरा था। अंग्रेजों ने बंगाल विभाजन की घोषणा कर दी थी जिसका भारी विरोध होने लगा। यह विरोध दोनों प्रकार से था अहिंसक और क्रांतिकारी

आंदोलन दोनों प्रकार से। शरत बाबू छात्र जीवन में थे और बंगाल विभाजन विरोधी आंदोलन से शामिल हुए। इसके साथ ही कांग्रेस से जुड़ गए। 1909 में उन्होंने कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज से एम.ए. किया और इसी वर्ष कांग्रेस की विधिवत सदस्यता भी ले ली। लगभग दो वर्ष कलकत्ता रहे और 1911 में वकालत पढ़ने लंदन चले गए। 1914 में बैरिस्टर बनकर और भारत लौट आए। कलकत्ता लौटकर वकालत के साथ सामाजिक जीवन में भी सक्रिय हुए। वे कई बार कलकत्ता नगर निगम के एल्डरमैन बने और बंगाल विधान परिषद के सदस्य भी रहे। वे अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के अपमान के विरुद्ध थे और प्रयास करते थे कि भारतीयों को वही नागरिक सम्मान मिले जो अंग्रेजों का था। वे गुप्त रूप से क्रांतिकारियों की सहायता करने लगे। उनकी ओर से अदालत में पैरवी भी की। इसके साथ वे भारतीय परिवारों के आंतरिक जीवन में अपनी परंपराओं के समर्थक थे। लेकिन खुलकर सामने आए 1930 में। तब देश में सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ हुआ। शरत जी ने अपनी पैक्ट्रिस और अन्य सभी दायित्व त्याग कर आंदोलन में शामिल हो गए। सविनय अवज्ञा आंदोलन में शामिल होने के कारण उन्हें 1932 में गिरफ्तार हुए और तीन साल का कारावास मिला। शरतजी चाहते थे कांग्रेस मुस्लिम लीग और अंग्रेजों की मिलीभगत में साथ न दे और भारत विभाजन का विरोध करे। लेकिन पाकिस्तान की मांग को लेकर मुस्लिम लीग द्वारा अगस्त 1946 से चलाए गए डायरेक्ट एक्शन से भारी हिंसा होने लगी और भारत विभाजन के लिए कांग्रेस ने सहमति दे दी। इससे असंतुष्ट होकर शरत जी ने जनवरी 1947 में कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया और फरवरी 1947 से माउंटबेटन की भारत विभाजन योजना के विरुद्ध अभियान छेड़ दिया। वे चाहते थे की बंगाल संयुक्त रहे। इसके लिए उन्होंने समाचार पत्र निकालकर जनजागरण भी करना चाहा। लेकिन बंगाल में मुस्लिम लीग की हिंसक आंधी चल रही थी। हजारों के प्राण गए। लाखों बेघर हुए। और शरत जी का अखंड बंगाल सपना टूट गया। रक्त की मानों नदी बह गई और बंगाल विभाजन के साथ भारत भी विभाजित हो गया। इस विभाजन से आहत शरत जी ने स्वयं को सार्वजनिक जीवन से समेट लिया और पूरी तरह लेखन को समर्पित हो गए लेखन वे पहले भी करते थे लेकिन अब पूरी तरह लेखन करने लगे और 20 फरवरी 1950 को देह त्यागकर परम ज्योति में विलीन हो गए। बाद में उनके भाषणों और लेखन का संग्रह प्रकाशित हुए जिनमें 'बंधन की महिमा' संग्रह सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ। **(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)**

डॉ. अनीष व्यास

आज हरतालिका पर्व पर विशेष

सौभाग्य प्राप्ति का व्रत हरतालिका तीज

सुहागिन महिलाओं की हरतालिका तीज में गहरी आस्था है। महिलाएं अपने पति की दीर्घायु के लिए निर्जला व्रत रखती हैं। मान्यता है कि इस व्रत को करने से सुहागिन स्त्रियों को शिव-पार्वती अखंड सौभाग्य का वरदान देते हैं। वहीं कुंवारी लड़कियों को मनचाहे वर की प्राप्ति होती है।

हरतालिका तीज की महिमा को अपरंपार माना गया है। हिन्दू धर्म में विशेषकर सुहागिन महिलाओं के लिए इस पर्व का महात्म्य बहुत ज्यादा है। हरतालिका तीज व्रत हिंदू धर्म में मनाए जाने वाला एक प्रमुख व्रत है। भाद्रपद के शुक्लपक्ष की तृतीया 6 सितंबर को हरतालिका तीज मनाई जाती है। भारत में हरियाली तीज और कजरी तीज के बाद अब हरतालिका तीज का त्योहार मनाया जाएगा। यह व्रत भी अन्य दोनों व्रत के समान ही महत्व रखता है। भाद्रपद माह के शुक्लपक्ष की तृतीया तिथि को हरतालिका तीज का व्रत किया जाता है। हरतालिका तीज व्रत एक कठिन व्रत माना जाता है। इसमें महिलाएं निर्जला व्रत रखकर पति की लंबी उम्र के लिए कामना करती हैं। दरअसल भाद्रपद की शुक्ल तृतीया को हस्त नक्षत्र में भगवान शिव और माता पार्वती के पूजन का विशेष महत्व है। हरतालिका तीज व्रत कुंवारी और

सौभाग्यवती स्त्रियां करती हैं। हरतालिका तीज व्रत निराहार और निर्जला किया जाता है। मान्यता है कि इस व्रत को सबसे पहले माता पार्वती ने भगवान शंकर को पति के रूप में पाने के लिए किया था। हरतालिका तीज व्रत करने से महिलाओं को सौभाग्य की प्राप्ति होती है। हिंदू पंचांग के अनुसार भाद्रपद माह के शुक्लपक्ष की तृतीया तिथि को हरतालिका तीज व्रत रखा जाता है। शास्त्रों के अनुसार हरतालिका तीज को सबसे बड़ी तीज माना जाता है। हरतालिका तीज से पहले हरियाली और कजरी तीज मनाई जाती हैं। हरतालिका तीज में भगवान शिव और माता पार्वती की विधि-विधान से पूजा की जाती है। हरियाली तीज और कजरी तीज की तरह ही हरतालिका तीज के दिन भी गौरी-शंकर की पूजा की जाती है। हरतालिका तीज का व्रत बेहद कठिन है। इस दिन महिलाएं 24 घंटे से भी अधिक समय तक निर्जला व्रत करती हैं। यही नहीं रात के समय महिलाएं जागरण करती हैं और अगले दिन सुबह विधिवत्त पूजा-पाठ करने के बाद ही व्रत खोलती हैं। मान्यता है कि हरतालिका तीज का व्रत करने से सुहागिन महिला के पति की उम्र लंबी होती है जबकि कुंवारी लड़कियों को मनचाहा वर मिलता है। यह त्योहार मुख्य रूप से बिहार, उत्तरप्रदेश, राजस्थान और मध्यप्रदेश में मनाया जाता है। कर्नाटक, तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश में इस व्रत को गौरी हब्बा के नाम से जाना जाता है। मान्यता है कि इस व्रत को रखने से अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इस दिन सुहागिन महिलाएं निर्जला और निराहार व्रत रखकर पति की लंबी आयु के लिए व्रत रखती हैं।

(लेखक कुंडली विश्लेषक हैं)

जनमानस

समाज की मुख्यधारा से जोड़ना आवश्यक

गत सप्ताह केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा शीघ्र ही देश नक्सली प्रभाव से मुक्त होगा। परिणाम स्वरूप 25 नक्सलियों ने एक साथ आत्मसमर्पण किया। पिछले 7 महीना में 170 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया, 346 गिरफ्तार किए गए। आत्मसमर्पण करने वालों में तीन व आठ लाख के इनामी नक्सली भी है, इन्हें शासन ने 25-25 हजार रुपए दिए। फिर से इस और न जाएं इसलिए इन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ना अतिआवश्यक है।

- **प्रहलाद यादव,** कोदरिया,महू

राजीव से राहुल ज्यादा बुद्धिमान!

कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा ने कहा है की राहुल गांधी अपने पिता राजीव गांधी से ज्यादा बुद्धिमान है। पित्रोदा का कहना सही है, क्योंकि राजीव गांधी को तो माता इंदिरा गांधी की जगह प्रधानमंत्री की कुर्सी मिली थी, परंतु राहुल गांधी ने तो अपनी बुद्धिमत्ता से कांग्रेस को दस साल बाद विपक्ष का दर्जा, पद दिलवाया।

- **आशीष सकलेचा,** जावरा

सार संक्षेप

जोआओ पेड्रो विश्वकप क्वालीफायर के लिए ब्राजील की टीम में शामिल

रियो डी जेनेरियो : ब्राजील फुटबॉल परिसंघ ने कहा है कि ब्राइटन फॉरवर्ड जोआओ पेड्रो को इक्वाडोर और पैराग्वे के खिलाफ विश्वकप क्वालीफायर के लिए ब्राजील की टीम में शामिल किया गया है। फुटबॉल परिसंघ ने कहा है कि पेड्रो हाल ही प्रशिक्षण के दौरान चोटिल हुए 22 वर्षीय खिलाड़ी फ्लेमेंगो की जगह लेंगे। पेड्रो ने प्रीमियर लीग अभियान के पहले तीन मैचों में दो गोल करके सीगल्स के लिए सीजन की शानदार शुरुआत की है। वह विश्वकप क्वालीफायर के आगामी डबल हेडर के लिए ब्राजील की टीम में तीसरे खिलाड़ी हैं, इससे पहले क्रूजेरो के विलियम और साओ पाउलो के लुकास मौरा ने चोटिल जोड़ी यान कोउटो और सविन्हो की जगह ली थी। ब्राजील आज क्यूरिटिबा में इक्वाडोर से और चार दिन बाद असुनसियन में पैराग्वे से भिड़ेगा। पांच बार के विश्वकप चैंपियन वर्तमान में 10 टीमों के दक्षिण अमेरिकी क्षेत्र के क्वालीफाइंग स्टैंडिंग में छह मैचों में सात अंकों के साथ छठे स्थान पर हैं। वह अभी अर्जेंटीना से आठ अंक पीछे है।

बीसीसीआई की सालाना बैठक में सेक्रेटरी चुनाव का मुद्दा नहीं, 29 को बैठक

मुंबई : भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की एनुअल जनरल मीटिंग (एजीएम) में सेक्रेटरी के चुनाव का एजेंड़ा शामिल नहीं है। अब नए सचिव का चुनाव स्पेशल स्पेशल जरनल मीटिंग (एसजीएम) में होगा। इस संबंध में बोर्ड ने गुरुवार 5 सितंबर को सभी स्टेट एसोसिएशन को नोटिस भेजा है। इसके अनुसार, बोर्ड की सालाना बैठक 29 सितंबर को बेंगलुरु के फोर सीजन्स होटल में होगी। इस दौरान बेंगलुरु में नवनिर्मित नेशनल क्रिकेट सेंटर का उद्घाटन भी होगा। पिछली एजीएम 25 सितंबर 2023 को गोवा में हुई थी। नोटिफिकेशन के अनुसार, एजीएम के एजेंडे में बीसीसीआई सेक्रेटरी के चुनाव का जिक्र नहीं है। उम्मीद थी कि इस मीटिंग में नया सेक्रेटरी चुन लिया जाएगा। जय शाह इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) के चेयरमैन बन गए हैं। इससे भारतीय बोर्ड के सचिव की पोस्ट खाली होने जा रही है। ऐसे में बीसीसीआई को 1 दिसंबर से पहले नया सचिव चुनना होगा। बताया जा रहा है कि नए सचिव का चुनाव स्पेशल जनरल मीटिंग (एसजीएम) में होगा। 2 पेज के एजेंडे में इस बार भी 18 पॉइंट शामिल है। एजेंडे में आईसीसी में बीसीसीआई के प्रतिनिधि की नियुक्ति, क्रिकेट समितियों, स्थायी समितियों और अंपायर समिति की नियुक्तियां शामिल हैं। इसके अलावा एजेंडे में वार्षिक बजट को स्वीकार किया किया जाना है।

मुशीर खान के नाबाद शतक ने इंडिया बी को संभाला

बेगलुरु : मुशीर खान के नाबाद शतक (105) रनों की बदौलत इंडिया बी ने चार दिवसीय दलीप ट्रॉफी के पहले मैच के पहले दिन गुरुवार को सात विकेट पर 202 रन बना लिए है। इससे पहले इंडिया ए ने टॉस जीतकर पहले क्षेत्ररक्षण करने का फैसला किया। इंडिया ए के गेंदबाजों ने इंडिया बी को 33 रन पर पहला झटका दिया और आवेश ने अभिमन्यु को जुरेल के हाथों कैच आउट कराया। इसके बाद नियमित समय पर विकेट गिरते रहे लेकिन मुशीर खान एक छोर पर मजबूती से डटे रहे और 227 गेंदों का सामना करते हुए अपना शतक पूरा किया। इसके अलावा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने 30 रन बनाए। दिन खेल समाप्त होने के समय नवदीप सैनी 29 रन पर मुशीर खान (105) के साथ नाबाद रहे। इंडिया ए के गेंदबाजों में खलील अहमद, आकाश दीप एवं आवेश खान ने दो-दो विकेट लिए जबकि एक खिलाड़ी रन आउट हुआ।

दलीप ट्रॉफी : इंडिया सी ने इंडिया डी को सस्ते में समेटा

अनंतपुर : गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन की बदौलत इंडिया सी ने गुरुवार से शुरु हुए दलीप ट्रॉफी के दूसरे मैच के पहले दिन इंडिया डी को 164 रनों के मामूली स्कोर पर समेट दिया। इंडिया डी की ओर से अक्षर पटेल ने (86) रनों की अर्धशतकीय पारी खेलकर टीम को सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया। इससे पहले इंडिया सी ने टॉस जीतकर पहले क्षेत्ररक्षण करने का फैसला किया और उसके गेंदबाजों ने इस फैसले को सही ठहराते हुए इंडिया डी के बल्लेबाजों को टिकने नहीं दिया। अंशुल कंबोज ने चार रन के स्कोर पर ही सलामी बल्लेबाज अथर्व तायडे को वापस पैवेलियन भेज दिया। तायडे ने चार रन बनाए थे। इसके बाद 23 रनों के स्कोर पर इंडिया सी तीन विकेट और गिर गए। केवल अक्षर पटेल ही संघर्ष कर पाए और उन्होंने अपनी 86 रनों की जुझारू पारी खेलकर टीम को सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया। पांच बल्लेबाज तो दहाई संख्या तक नहीं पहुंच पाए। इंडिया सी की ओर से विजयकुमार वैशाख ने घातक गेंदबाजी करते हुए 12 ओवर में मात्र 19 रन देकर तीन विकेट लिए जबकि अंशुल कंबोज एवं हिमांशु चौहान को दो-दो विकेट मिले तथा मानव सुथर तथा रितिक शौकीन ने एक-एक विकेट लिया। इंडिया सी ने इंडिया डी के 164 रनों के जवाब में अपनी पहली पारी में चार विकेट पर 91 रन बना लिए है। दिन का खेल समाप्त होने के समय बाबा इन्द्रजीत 15 रन और अभिषेक पोरेल 32 रन पर नाबाद रहे। इंडिया डी की ओर से हर्षित राणा और अक्षर पटेल ने दो-दो विकेट लिए।

सिद्धार्थ बाबू और मोना अग्रवाल निशानेबाजी स्पर्धा में हारे

पेरिस : भारतीय निशानेबाज सिद्धार्थ बाबू और मोना अग्रवाल का गुरुवार को मिश्रित 50 मीटर रायफल प्रोन एसएच 1 क्वालिफिकेशन हार के साथ पेरिस पैरालंपिक में अभियान समाप्त हो गया है। यहां हुए मुकाबले में सिद्धार्थ बाबू 615.8 अंक के साथ 22वें स्थान और मोना अग्रवाल 610.5 अंकों के साथ 30वें स्थान पर रहीं।

कपिल परमार ने जूडो में जीता कांस्य

पेरिस पैरालंपिक : तीरंदाजी में मिक्स्ड टीम ने ब्रॉन्ज मेडल मैच गंवाया, कोकिला हारीं

भारत के कपिल परमार ने ब्राजील के प्लेयर को ब्रॉन्ज मेडल मैच हराया।

● पेरिस,

पेरिस पैरालिंपिक में भारत ने 25वां मेडल जीत लिया है। मेंस जे1 कैटेगरी के जूडो में कपिल परमार ने ब्रॉन्ज मेडल दिलाया। उन्होंने ब्राजील के एलिटन डी ओलिविएरा को 33 सेकेंड में ही 10-0 से हरा दिया। कपिल से पहले आर्चरी में हरविंदर सिंह और पूजा की मिक्स्ड टीम सेमीफाइनल के बाद ब्रॉन्ज मेडल मैच भी हार गई।

भारत आज एथलेटिक्स में भी मेडल जीत सकता है। पेरिस में भारत ने 5 गोल्ड, 9 सिल्वर और 11 ब्रॉन्ज मेडल जीत लिए, यह देश का पैरालंपिक में बेस्ट प्रदर्शन है। मेडल टैली में भारत फिलहाल 13वें नंबर पर है। भारत ने टोक्यो पैरालंपिक में 5 गोल्ड समेत 19 मेडल जीते थे। भारतीय जूडोका कपिल परमार मेंस 60 किग्रा जे 1 कैटेगरी के सेमीफाइनल में हार गए। उन्हें ईरान के खोराम बनिताबा ने 10-0 से हराया। हालांकि, ब्रॉन्ज मेडल मैच में उन्होंने कमबैक किया और ब्रॉन्ज मेडल जीत लिया। उन्होंने ख1 कैटेगरी में ब्राजील के एलिटन डी ओलिविएरा को 33 सेकेंड में ही 10-0 से हरा दिया। भारतीय पैरा एथलीट कपिल परमार ने गुरुवार को पैरा जूडो पुरुष 60 किलोग्राम जे1 स्पर्धा के सेमीफाइनल मुकाबले में ईरान के एस बनिताबा खोर्रम अबादी से हार का सामना करना पड़ा है। वहीं भारत की कोकिला महिलाओं के 48 किग्रा जे2 वर्ग के क्वार्टर फाइनल में कजाखस्तान की अकमारल नौटबेक से 0-10 से हार गई। सेमीफाइनल मुकाबले में कपिल परमार को ईरानी प्रतिद्वंद्वी से 0-10 से हार मिली। इससे पहले परमार ने क्वार्टर फाइनल मुकाबले में वेनेजुएला

के डेनिस मार्कोस ब्लैंको को हराकर कर सेमीफाइनल में जगह बनाई थी। वहीं कोकिला को महिला 48 किलोग्राम जे2 क्वार्टर फाइनल में हार का सामना करना पड़ा। यहां हुए क्वार्टर फानइल मुकाबले में विश्व नंबर वन कपिल परमार ने वेनेजुएला के डेनिस मार्कोस ब्लैंको को इप्पोन के माध्यम से 10-0 से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। वहीं महिला 48 किलोग्राम जे 2 क्वार्टर फाइनल भारतीय एथलीट कोकिला उज्बेकिस्तान की नौटबेक अकमारल से 0-10 के स्कोर से हार गईं। इसके बाद हुई रेपेचेज ए के जे2 फाइनल में कोकिला को यूक्रेन की यूलिया इवानित्स्का से 0-10 से हार मिली। वहीं हरविंदर सिंह और पूजा की मिक्स्ड टीम आर्चरी सेमीफाइनल से आगे नहीं बढ़ सकी। उन्हें इटली की नंबर-1 रैंक टीम ने 6-2 से हरा दिया। हरविंदर और पूजा का ब्रॉन्ज मेडल मैच स्लोवेनिया से हुआ, भारत ने 3 सेट के बाद 4-2 की बढ़त बना ली थी। आखिरी सेट स्लोवेनिया ने जीता और फिर शूटआउट जीतकर ब्रॉन्ज अपने नाम कर लिया। स्लोवेनिया ने 5-4 के अंतर से मैच जीता। इससे पहले भारत ने बुधवार को मेंस एफ-51 कैटेगरी के क्लब थ्रो इवेंट में गोल्ड और सिल्वर मेडल जीते। फिर भी क्लीन स्वीप करने से चूक गया। देर रात धरमबीर सिंह ने 34.92 मीटर के बेस्ट थ्रो के साथ गोल्ड और प्रणव सूरमा ने 34.59 मीटर के बेस्ट थ्रो के साथ सिल्वर मेडल जीता। सर्बिया के जेलिको डिमित्रिजेविक ने 34.18 मीटर के बेस्ट थ्रो के साथ ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया। क्लब थ्रो इवेंट में भारत क्लीन स्वीप कर तीनों मेडल जीत सकता था, लेकिन अमित कुमार 6 अटेम्प्ट में 4 थ्रो फाउल कर बैठे। उनके 2 थ्रो सही रहे, जिसमें बेस्ट 23.96 मीटर दूर ही जा सका। जिस कारण अमित 10वें नंबर पर रहे।

मुर्मु, धनखड़ और मोदी ने हरविंदर सिंह को दी बधाई

नई दिल्ली, वार्ता : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केन्द्रीय खेल मंत्री मनसुख मंडाविया ने पैरा एथलीट हरविंदर सिंह को पुरुष व्यक्तिगत रिकर्व ओपन फाइनल तीरंदाजी स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने पर बधाई दी। राष्ट्रपति मुर्मु ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा कि पेरिस 2024 पैरालंपिक में पुरुषों की व्यक्तिगत रिकर्व पैरा तीरंदाजी स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने पर हरविंदर सिंह को मेरी हार्दिक बधाई। यह लगातार पैरालंपिक में हरविंदर का दूसरा पदक है और भारत के लिए पैरा तीरंदाजी में पहला स्वर्ण पदक है। जबरदस्त दबाव में उनका असाधारण प्रदर्शन प्रेरणादायक है। मेरी कामना है कि वह तिरंगे को और गौरवान्वित करें। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि हरविंदर सिंह ने पेरिस पैरालंपिक 2024 में पैरा तीरंदाजी में इतिहास रचकर भारत को गौरवान्वित किया है। पुरुषों की व्यक्तिगत रिकर्व ओपन स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने के लिए उन्हें हार्दिक बधाई। उनकी लगन और कड़ी मेहनत ने वाकई रंग दिखाया है। मैं उनके सभी आगामी प्रयासों के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूं। प्रधानमंत्री मोदी ने पैरालंपिक में हरविंदर को उनके 'बहुत खास' स्वर्ण पदक सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं।

मंडाविया ने स्वदेश लौटे खिलाड़ियों से की मुलाकात

नई दिल्ली, वार्ता : केन्द्रीय खेल मंत्री डा. मनसुख मंडाविया ने गुरुवार को पेरिस पैरालंपिक 2024 खेलों में भाग लेकर स्वदेश लौटे खिलाड़ियों तथा उनके प्रशिक्षकों से मुलाकात कर उन्हें सम्मानित किया और बधाई दी। यहां इस अवसर पर डॉ. मंडाविया ने पैरा खिलाड़ियों की उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए प्रशंसा और सम्मान व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे आज पैरालंपिक में पहली बार भाग लेने वाले छह एथलीटों से मिलकर बहुत खुशी हुई। मैं दीप्ति को इस सम्मान कार्यक्रम में पहली बार पदक जीतने के लिए बधाई देता हूं। बाकी सभी को, मैं भविष्य के पैरालंपिक के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूं और मुझे विश्वास है कि आप भी पदक जीतेंगे। याद रखें, खेलना सिर्फ पदक जीतना भर नहीं है, आप में से प्रत्येक ने जीवन की चुनौतियों पर विजय प्राप्त की है। आप सभी भारत के लाखों युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। वहां उपस्थित लोगों में एथलीट दीप्ति, जिन्होंने पैरालंपिक में अपने पदार्पण पर महिलाओं की 400 मीटर टी20 श्रेणी में कांस्य जीता, और उनके साथ पदार्पण करने वाले साथी एथलीट रवि रोंगाली, राक्षिता राजू, कंचन लखानी, साक्षी कसाना और मनु और उनके कोच शामिल थे।

सिंगापुर ने मंगोलिया को टी-20 मैच में 10 रन पर किया ऑलआउट

● नई दिल्ली,

हर्ष भारद्वाज तीन रन पर (छह विकेट) की घातक गेंदबाजी के दम पर सिंगापुर ने टी-20 विश्व कप एशिया क्वालीफायर ए के मुकाबले में मंगोलिया की टीम को 10 रन के स्कोर पर समेटने के बाद पहले ही ओवर में 11 रन बनाकर मैच जीतकर एक अनोखा रिकॉर्ड बना लिया है।

बंगी में खेले गए मुकाबले में दोनों टीमों ने न्यूनतम स्कोर को लेकर एक नया रिकॉर्ड बना लिया है। मंगोलिया ने पुरुषों के टी-20आई में सबसे कम स्कोर की बराबरी की। उन्होंने पिछले साल स्पेन के खिलाफ आइल ऑफ मैन द्वारा बनाए गए सबसे कम स्कोर की बराबरी की। वहीं सिंगापुर ने सबसे कम स्कोर का पीछा कर जीत दर्ज करने का भी रिकॉर्ड बनाया है। इस दूसरे सबसे न्यूनतम स्कोर के जवाब में सिंगापुर ने पहले ओवर में एक विकेट खोकर मात्र पांच गेंदों में 11 रन बनाकर प्रतियोगिता में अपनी दूसरी जीत दर्ज की। राउल शर्मा ने छक्का लगाया और विलियम सिम्पसन ने आखिर गेंद पर चौका लगाकर सिंगापुर की जीत पक्की कर दी। इस हार के साथ मंगोलिया ने अपने सभी चार मैच गंवाए हैं और तालिका में सबसे निचले

हर्ष भारद्वाज ने झटके छह विकेट, सिंगापुर ने मात्र पांच गेंद में हासिल किया लक्ष्य

पायदान पर है। सिंगापुर की ओर से हर्ष भारद्वाज ने चार ओवर में तीन रन देकर छह विकेट लिए। यह पुरुष टी-20 में दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। 17 वर्षीय लेगस्पिनर ने शुरुआती ओवर में दो विकेट लिए और पावरप्ले में मंगोलिया ने छह में से पांच विकेट गवां। उसके पांच बल्लेबाजों ने शून्य पर आउट हुए। मंगोलिया ने दस ओवर तक बल्लेबाजी की और तीन मेडन ओवर खेले।

आईपीएल के वैल्यूएशन में गिरावट

● नई दिल्ली,

पिछले चार साल में पहली बार आईपीएल के वैल्यूएशन में गिरावट दर्ज की गई है। लीग की वैल्यू एक साल में 10.6% गिरी है। 2023 में आईपीएल की कुल वैल्यू 92.5 हजार करोड़ रुपये थी। 2024 में यह 82.7 हजार करोड़ रुपये रह गई है। फ्रेंचाइजी की वैल्यूएशन रैंकिंग में मुंबई इंडियंस टॉप पर है, जबकि चेन्नई सुपर किंग्स को दूसरा स्थान मिला है। यह जानकारी वैल्यूएशन सर्विस प्रोवाइडर फर्म डी एंड पी एडवाइजरी की स्टडी से सामने आई है। विमेंस प्रीमियर लीग की वैल्यू बढ़ी है। इसमें एक साल में 8% का इजाफा हुआ है। 2023 में विमेंस प्रीमियर लीग की वैल्यू 1250 करोड़ रुपये थी। अब यह 1350 करोड़ रुपए हो गई है। पिछले कुछ साल में भारत में क्रिकेट ब्रॉडकास्टिंग में मोनोपॉली बढ़ने के कारण आईपीएल की वैल्यू गिरी है। मोनोपॉली का मतलब एक कंपनी का बढ़ता दबदबा होता है। रिलायंस और डिज्नी स्टार के मर्जर ने लीग के ब्रॉडकास्ट राइट्स के लिए प्रतिस्पर्धा कम कर दी है।

92.5 हजार करोड़ से गिरकर 82.7 हजार करोड़ हुई वैल्यू, महिला लीग में हुआ सुधार

पहले इन दोनों कंपनियों के बीच आईपीएल के राइट्स खरीदने के लिए होड़ होती थी। सोनी स्पोर्ट्स भी होड़ में रहती थी। अब सोनी और जी के मर्जर में रुकावट आने और डिज्नी हॉटस्टार के मर्जर से इस मामले में प्रतिस्पर्धा बहुत कम हो गई है। वैल्यूएशन में गिरावट का सबसे बड़ा कारण भारत में बदलता ब्रॉडकास्ट सिनैरियो है, जो डिज्नी स्टार-जियोसिनेमा के मर्जर के बाद मोनोपॉली की ओर बढ़ रहा है। जब 2022 में आईपीएल ब्रॉडकास्टिंग राइट्स की बोली लगाई गई थी, तब डिज्नी स्टार और जियोसिनेमा के बीच कड़ी टक्कर मिली थी। इसमें जियो सिनेमा से बीसीसीआई ने 5 साल की डील के लिए 48,390 करोड़ रुपये कमाए थे। डी एंड पी एडवाइजरी की रिपोर्ट का दावा है कि इन दोनों फर्म्स के मर्जर के बाद आईपीएल को अगले ब्रॉडकास्ट साइकल में कम कॉम्पिटिटर्स और बिडर्स का सामना करना पड़ सकता है। इस तरह कम होता कॉम्पिटिशन एरिया बोली को दबा सकता है, जिसने मीडिया राइट्स को ऐतिहासिक रूप से बढ़ाया है। आईपीएल के टेलीविजन राइट्स स्टार के पार और डिजिटल राइट्स जियो सिनेमा के पास हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि सोनी-जी के असफल मर्जर ने बाजार के डायनामिक्स को इस हद तक बदल दिया है कि दोनों संस्थाओं को डिज्नी स्टार और जियो सिनेमा को चुनौती देने में संघर्ष करना पड़ेगा। मर्जर होने की स्थिति में सोनी और जी भविष्य में आईपीएल ब्रॉडकास्टिंग राइट्स के लिए बोली लगाने में अधिक मजबूत स्थिति में होती। साथ ही राइट्स हासिल करने के लिए डिज्नी और जियो को कड़ी टक्कर देती। स्पॉन्सर्स के बढ़ते भरोसे की वजह से हढछ पिछले 2 साल में अच्छा प्रोगरेस कर रही है। प्रमुख ब्रांड्स ने क्ढछ जैसे ही विमेंस क्रिकेट के उभरते ब्रांड के साथ में रुचि दिखाई है।

इगा स्वियातेक उलटफेर की शिकार, स्निर टॉप-4 में

यूएस ओपन : पोलिश स्टार को अमेरिका की पेगुला ने हराया, जैनिक ने मेदवेदेव को मात दी

● न्यूयॉर्क,

दुनिया के नंबर-1 टेनिस खिलाड़ी जैनिक स्निर यूएस ओपन टेनिस के सेमीफाइनल में पहुंच गए हैं। जबकि विमेंस कैटेगरी में वर्ल्ड नंबर-1 इगा स्वियातेक उलटफेर की शिकार हो गई है। न्यूयॉर्क में इटली के स्निर ने रूस के मेदवेदेव को 6-2, 1-6, 6-1, 6-4 से हराया। यह मुकाबला 2 घंटे 29 मिनट तक चला। वहीं, महिला कैटेगरी के क्वार्टर फाइनल में पोलैंड की स्वियातेक को छठी सीड अमेरिका की जेसिका पेगुला ने एक घंटे 28 मिनट तक चले क्वार्टर फाइनल मुकाबले में 6-2, 6-4 से हराया। टॉप-4 राउंड में सिनर का मुकाबला जैक ड्रॉपर से होगा, जबकि पेगुला चेक रिपब्लिक की करोलिना मुचोवा से मुकाबला करेंगी। ब्रिटेन के 25वीं सीड खिलाड़ी जैक ड्रापर ने ऑस्ट्रेलिया के एलेक्स डी मैनुअर को 6-3, 7-5, 6-2 से हराया। मुचोवा ने ब्राजील की बीअत्रिज हैडाड माया को 6-1, 6-4 से मात देकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। नवारो और सबालेंका के बीच सेमीफाइनल आज अमेरिकी टेनिस स्टार एमा नवारो और बेलारूस की एरिना सबालेंका के बीच देर रात महिला सिंगल्स का सेमीफाइनल मैच खेला जाएगा। एक दिन पहले नवारो ने स्पेन की पाउला बेडोसा को सीधे सेटों में 6-2, 7-5 से हराते हुए सेमीफाइनल में प्रवेश किया था। वे अपने पहले ग्रैंड स्लैम सेमीफाइनल में पहुंचीं। वहीं बेलारूसी स्टार सबालेंका ने 7वीं वरीयता प्राप्त चीन की झेंग किनवेन को 6-1, 6-2 से मात दी। अमेरिका के फ्रिट्ज और टियाफो के बीच होगा मुकाबला साल के आखिरी ग्रैंड स्लैम में मेंस सिंगल्स का सेमीफाइनल मैच अमेरिकी खिलाड़ियों के बीच होगा। यहां 12वीं वरीयता प्राप्त टेलरी फ्रिट्ज अपने ही देश के फ्रांसिस टियाफो का सामना करेंगे। एक दिन पहले फ्रिट्ज ने चौथी सीड एलेक्जेंडर ज्वेरेव को उलटफेर का शिकार बनाया। उन्होंने जर्मनी के स्टार को 3 घंटे 26 मिनट में 7-6, 6-3, 6-4, 7-6 से हराया। अमेरिकी स्टार टियाफो के खिलाफ बुल्गारिया के ग्रिगॉर दिमित्रोव को चौथे सेट में मैच से हट गए। तब स्कोर 6-3,6-7, 6-3, 4-1 था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सैयद ज़की हैदर के लिए इरानीयन आर्ट प्रिंटर्स 1534 कासिमजान स्ट्रीट दरियागंज नई दिल्ली 11006 से मुद्रित कराकर, 2684 गली काले खां कूचा चलान दरियागंज नई दिल्ली 02 से प्रकाशित किया।
संपादक : सैयद ज़की हैदर- हैड ऑफिस :- एफ19/4 सेकेंड फ्लोर नफीश रोड जामिया नगर दिल्ली- 110025., सम्पर्क सूत्र :- 9911371802, 9810383593
जितेन्द्र कुमार बिस्वाल ब्यूरो चीफ उड़ीसा/ गोविंद कनोडिया/ पटना/ सैय्यद यूसुफ अली नक़वी-पॉलिटिकल एडिटर। ई-मेल:- dailyloktantra@gmail.com

किसी भी प्रकार के विवाद हेतु निपटारे के लिए केवल दिल्ली न्यायालय ही मान्य होगी।
नोट- किसी भी समाचार/आलेख पर दावा प्रति दावा/आपत्ति समाचार प्रकाशन के 15 दिनों के अन्तराल तक ही मान्य होगा। समाचार पत्र में प्रकाशित आलेख से संपादक/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्षेत्रीय कार्यालय अनवार मंजिल नया टोला गंज नंबर 01 बेतिया/ बिहार/ पिन नंबर 84 5438/>> संवाददाता, सना खान/(डॉ. अमानुल हक) स्थानीय संपादक/बिहार)